अनमोल भजन संग्रह

अनुक्रमणिका

।। ॐ गुरू ।।

भजन - बरसेगा बरसेगा

हरि हरि ओम हरि हरि ओम

बरसेगा बरसेगा महाराज अमृत बरसेगा
कर लो गुरू से प्यार अमृत बरसेगा
कर लो बापू से प्यार अमृत बरसेगा
कर लो सांई से प्यार अमृत बरसेगा
सुबह और शाम तेरा ध्यान लगांउ
सर्वं तेरा दर्शन पाउं
भक्ति का दे दो वरदान अमृत बरसेगा
जनम जनम से मैं अज्ञानीं, आप गुरू हो ब्रह्मज्ञानीं
आप गुरू हो अंर्तयामीं, दे दो हमें ब्रह्मज्ञान अमृत बरसेगा
बरसेगा बरसेगा महाराज अमृत बरसेगा
कर लो सांई से प्यार अमृत बरसेगा
माता पिता सदगुरू हो मेरे
जनम जनम से आप हो मेरे
आया हूं तेरे द्वार अमृत बरसेगा
गुरू की सेवा तू क्या जाने
मुठीं मनवा क्या पहचाने
करता वो भव से पार अमृत बरसेगा
कर लो सांई से प्यार अमृत बरसेगा
बरसेगा बरसेगा महाराज अमृत बरसेगा

हरि हरि ओम हरि हरि ओम



गुरू की सेवा करने की उत्कण्ठा एवं लगन शिष्य में होनी चाहिए।

|| ॐ गुरू ||

भजन - बीती जाए रे उमरिया भजन बिना

बीती जाए रे उमरिया भजन बिना
हरि भजन बिना प्रभु भजन बिना
बीती जाए रे उमरिया भजन बिना
बालापन खेलन में खोवो कियो बड़ी नादानी
आये जवानी की मनमानी चाल चले मस्तानी
सीधी चले ना डगरिया भजन बिना
हरि भजन बिना प्रभु भजन बिना
बीती जाए रे उमरिया भजन बिना
मनचाही शादी कर बेटा बहू ब्याह कर लाए
हाथ पकड़कर चले अकड़कर कुल मर्यादा गंवाए
घुमे शहर और बजरिया भजन बिना
हरि भजन बिना प्रभु भजन बिना
बीती जाए रे उमरिया भजन बिना
चंद रोज में बेटा बेटी ससुर दामाद कहाये
बेटा से बन गये बाप फिर बाबा का नंबर आये
झुक गयी बाबा की कमरिया भजन बिना
हरि भजन बिना प्रभु भजन बिना
बीती जाए रे उमरिया भजन बिना
एक दिन रामनाम सत् हो गया होगयी खत्म कहानी
सगे संबंधी रोये बाबा बोल सके ना वाणी
बंद हो गयी रे नजरिया भजन बिना
हरि भजन बिना प्रभु भजन बिना
बीती जाए रे उमरिया भजन बिना

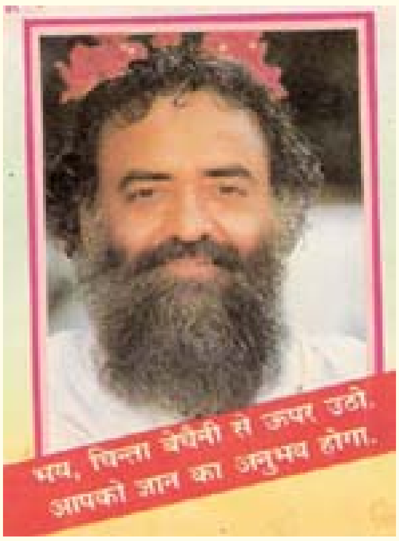


ईश्वर के सिवाय कहीं भी मन लगाया तो अंत में ही रोना ही पड़ेगा।

।। ॐ गुरू।।

भजन - भज मन राम राम राम

भज मन राम राम राम मेरे राम राम राम
हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ
झुठी जग की सारी माया कोई काम ना तेरे आया
जिसने नाम प्रभु का गाया वो भवसिंधु से तर पाया
भज मन राम राम राम मेरे राम राम राम
ना माया मोह में फंसना यहाँ कोई नहीं अपना
अरे इस दुनिया में ना कोई किसी का साथी होता है
भज मन राम राम राम मेरे राम राम राम
जगत में एक ही सत है वही ईश्वर कहाता है
साथ जब उसका हो जाए तभी सत्संग होता है
भज मन राम राम राम मेरे राम राम राम
ये ऐसा औषधालय है दूर हो व्याधिया मन की
यही सबसे कठीन भवरोग का उपचार होता है
भज मन राम राम राम मेरे राम राम राम
ये सत्संग तेज फूलों की यहा मन तृप्त हो जाता
यही मन शांत होता हो जाता प्रभु से प्यार हो जाता
भज मन राम राम राम मेरे राम राम राम
ये सत्संग गंगा है जो पाप जन्मों के धो देती
बिना साबुन बिना पानी यहा मन साफ होता है
भज मन राम राम राम मेरे राम राम राम



यदि जंगल में आग लग जाये और तुम सरोवर के बीच आकर खड़े हो जाओ तो जंगल की आग तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। ऐसे ही राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा, दुख-संतापरूपी संसारी आग तुम्हें सताये तो तुम आत्मज्ञानरूपी सरोवर में आ जाओ।

।। ॐ गुरू।।

भजन - भज नारायण भज नारायण

भज नारायण भज नारायण नारायण भज मूढ़ मते
भज नारायण भज नारायण नारायण भज मूढ़ मते
भज गोविंदम भज गोविंदम गोविंदम भज मूढ़ मते
भज गोविंदम भज गोविंदम गोविंदम भज मूढ़ मते
भज नारायण भज नारायण नारायण भज मूढ़ मते
बाल वयस्क सब खेल गवायीं तब तो रहा नहीं कुछ ज्ञान
तरूणावस्था की मादकता में केवल तरूणी का ध्यान
वृदध भए तब रात दिवस है नाना चिंता औ का गान
दुर्लभ मानव तन पाकर के किया ना परमेश्वर का ध्यान
भज गोविंदम भज गोविंदम गोविंदम भज मूढ़ मते
भज नारायण भज नारायण नारायण भज मूढ़ मते
जनम मरण में इस बंधन में हो न सकेगा यू उदघार
जब तक तू आसक्त स्वार्थवश करता जग से ममता प्यार
इस दुष्कर माया से मानव तब तेरा होगा निस्तार
जब मायापति परमेश्वर को सौंप चुकेगा जीवन भार
भज गोविंदम भज गोविंदम गोविंदम भज मूढ़ मते
भज नारायण भज नारायण नारायण भज मूढ़ मते

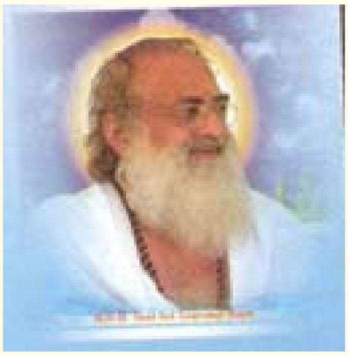


panzek dk LoHkko gS pkanuh nsuk] xqM+ dk LoHkko gS
feBkl] cQZ dk LoHkko 'khryrk] ,sls gh Hkxoku vkSj
Hkxoku ds l;kjs larks dk LoHkko gS tho dk dY;k.kA

|| ॐ गुरू ||

भजन - भक्तों के भगवान के बार बार वंदना

भक्तों के भगवान को बार बार वंदना, बार बार वंदना हजार वंदना
राधा के श्याम को बार बार वंदना, सीता के राम को बार बार वंदना
सदगुरूदेव को बार बार वंदना
ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ
सदगुरू भगवान हमें शरणागति देना, शरणागति देना अनन्य भक्ति देना
ब्रह्म से हो प्यार हमें ऐसी मति देना, ॐ हरि ॐ
नाम का सहारा देना, चरणों में गुजारा देना, वासना को दूर कर उपासना भरपूर देना
सदगुरू भगवान हमें शरणागति देना, प्रभु से हो प्यार हमें ऐसी मति देना
ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ
चरणों का प्रेम देना पूजा नितनेम देना, मन में विश्वास देना दिल में प्रकाश देना
तेरे हीं चरणों में श्रद्धा बढ़ा देना, सदगुरू भगवान हमें शरणागति देना
ब्रह्म से हो प्यार हमे ऐसी मति देना
ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ
जैसे माँ के प्यार बिना बालक अनाथ, वैसे गुरू ज्ञान बिना जीव भी अनाथ है
सदगुरू भगवान हमें शरणागति देना, प्रभु से हो प्यार हमें ऐसी मति देना
ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ
चरणों का ध्यान देना गीता का ज्ञान देना वेदो का ज्ञान देना भक्ति का दान देना
तेरे बिना कौन मेरा अपना बना लेना सदगुरू भगवान हमें शरणागति देना
प्रभु से हो प्यार हमें ऐसी मति देना
ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ
राम बनके तुमने अहिल्या को तारा, सारथी बनके अर्जुन के रथ को संभाला
मीरा के जहर को अमृत बनाया, खंभे से प्रकट हो प्रहलाद को बचाया
ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ ॐ हरि ॐ



सदगुरू जैसा प्रेमपूर्ण, कृपालु, हितचिंतक,
विश्वभर में दूसरा कोई नहीं है।

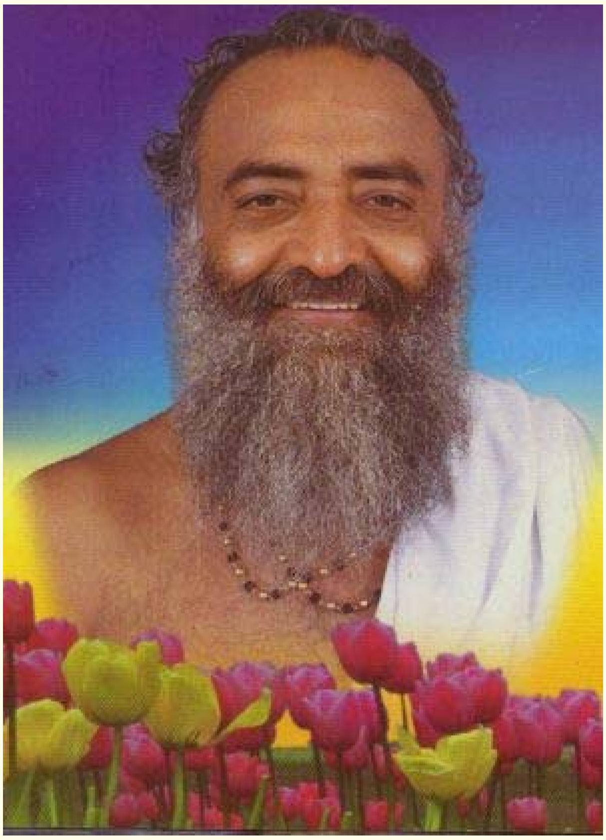
राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे कृष्ण

।। ॐ गुरू।।

भजन - भारत के नौजवानों

भारत के नौजवानों भारत को दिव्य बनाना...2
तुम्हें प्यार करे जग सारा तुम ऐसा बन दिखलाना...2
जो लिखा है सद्ग्रंथों में जो कुछ भी कहा संतो ने...2
उसकों जीवन में लाना वैसा ही बन दिखलाना...2
भारत के नौजवानों भारत को दिव्य बनाना...2
तुम पुरूषार्थ तो करना पर नेक राह पर चलना...2
सज्जन का संग ही करना दुर्जन से बचके रहना...2
भारत के नौजवानों भारत को दिव्य बनाना...2
जीवन अनमोल मिला है तुम मौके को मत खोना...2
यदि भटक गये इस जग में जन्मों तक पड़ेगा रोना...2
भारत के नौजवानों भारत को दिव्य बनाना...2

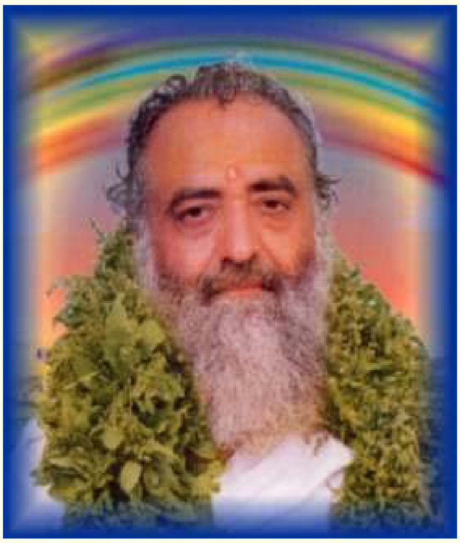
जहाजों से जो टकराए उसे तूफान कहते है, तूफानों से टकराये उसे भारत का युवान कहते हैं।



।। ॐ गुरू।।

भजन - भूल न जाउ तुम्हें कहीं

भूल ना जाउं तुम्हें कहीं ये विनंती बारंबार
ये विनंती बारंबार ये विनंती बारंबार
कभी ना होता बंद किसी के लिए तुम्हारा द्वार
ना बंद तुम्हारा द्वार ना बंद तुम्हारा द्वार
भूल ना जाउं तुम्हें कहीं ये विनंती बारंबार
मोह नींद से जगा हमें कर्तव्य मार्ग दिखलाया
जो भवबंधन का कारण है भलीभांति समझाया
सतपरमार्थ सुपथ में चलने का उत्साह बढ़ाया
कितनी बार संभाला हमको गिरते हुए बचाया
भूल ना जाउं तुम्हें कहीं ये विनंती बारंबार
तीरथ गये पर सदगुरू का सत्संग नहीं मिल पाया
गंगा जल में तन धोने से मिटी ना ममता माया
ज्ञान भक्ति वैराग्य हृदय में जब तक नहीं समाया
तब तक जो कुछ किया व्यर्थ श्रम कुछ फिर हाथ ना आया
हम भक्तों के लिए सुलभ है गुरू नाम आधार
गुरू नाम आधार गुरू नाम आधार
भूल ना जाउं तुम्हें कहीं ये विनंती बारंबार
ये विनंती बारंबार ये विनंती बारंबार



गुरू आज्ञा दृढ़ कर ग्रहे
गुरूमत सहजो चाल।
रोम रोम गुरू को रटे
सो शिष्य होय निहाल।।

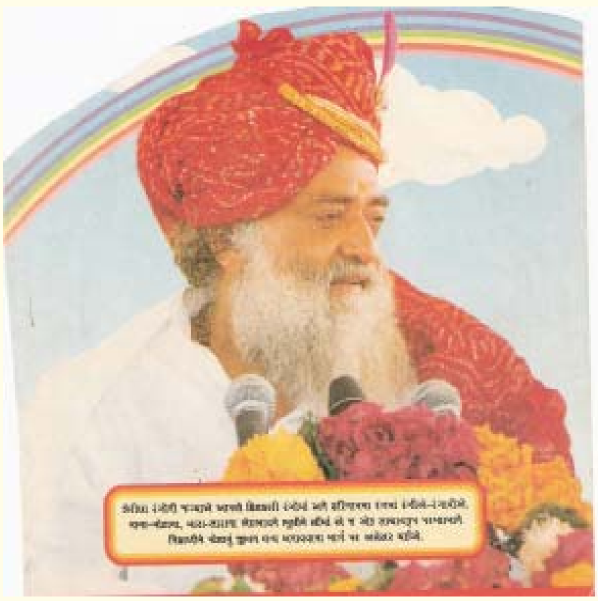
।। ॐ गुरू ।।

भजन - छोटी सी जिंदगी

शिव
राम
शिव
राम

छोटी सी जिंदगी करना बड़ा काम
ज्ञान सिखावे सदगुरू भगवान
भोगी बनकर जींना नहीं बड़ी बाता
योगी बनावे सदगुरू भगवान
हो... हमें योगी बनावे सदगुरू भगवान
छोटी सी जिंदगी करना बड़ा काम
पेट अपना भरना नहीं बड़ी बात
परहित सिखावे सदगुरू भगवान
हो... हमे मुक्त बनावे सदगुरू भगवान
छोटी सी जिंदगी करना बड़ा काम
बाहर जिसको ढुंढे दुनिया तमाम
मन में दिखावे सदगुरू भगवान
हो... हमे मन में दिखावे सदगुरू भगवान
छोटी सी जिंदगी करना बड़ा काम
प्रभु दर्शन करना नहीं बड़ी बात
दर्शन कराये सदगुरू भगवान
हो... दर्शन करावे सदगुरू भगवान

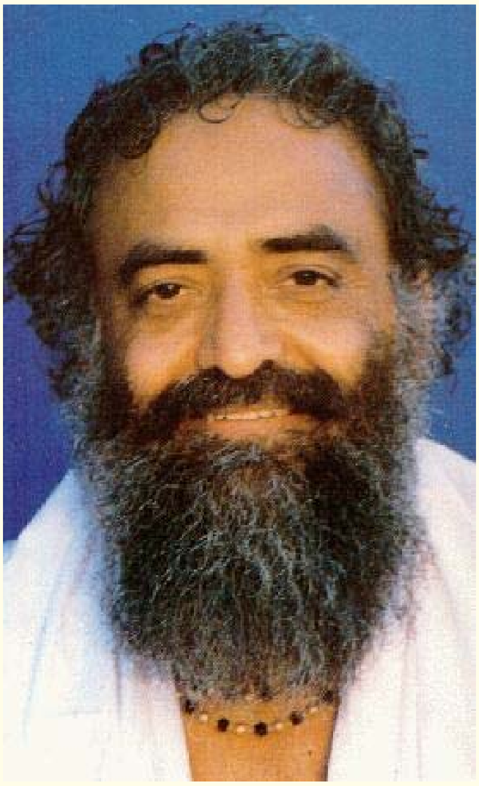
शिव
राम
शिव
राम



जो भक्तिभावपूर्वक गुरू की सेवा करता है वह जीवन के परम तत्व को प्राप्त करता है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - दर्शन दे दो मेरे भगवन्ता



अपने से गलती हो तो भूलो मत, प्रायश्चित्त करों और दूसरे से गलती हो जाय तो बिल्कुल भूल जाओ कि इसने गलती की है।

दर्शन दे दो मेरे भगवन्ता।
कोमल सरल स्वभाव तुम्हारा।
भरता है मन में प्रेम अपारा।
तेरे दर्शन से मिले है प्रसन्नता।
दर्शन दे दो मेरे...................
तपोनिष्ठ वेदों के ज्ञानी।
ब्रह्मनिष्ठ तुम अंतर्यामी।
तुमसा नहीं कोई है दयावन्ता।
दर्शन दे दो मेरे...................
कलियुग में अवतार तुम्हीं हों।
भक्तों का करते उद्धार तुम्हीं हों।
तुमसा नहीं कोई है कृपावन्ता।
दर्शन दे दो मेरे...................
तेरी लीला जग से न्यारी।
शोभित है तुमसे सृष्टि सारी।
बिगड़े से बिगड़ा है यहाँ बनता।
दर्शन दे दो मेरे...................
निराकार साकार तुम्हीं हो।
हम सबके आधार तुम्हीं हों।
सबमें छिपी है तेरी चिद्धन्ता।
दर्शन दे दो मेरे...................
हे दयावन्ता, हे कृपावन्ता

।। ॐ गुरू ।।

भजन - देखो किसने क्या पाया

देखो किसने क्या पाया मानव क्यों जग में आया
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
आनेवाले को देखो क्या लेकर वे आते है
जानेवाले को देखो क्या संग लेकर जाते है
कुछ पुण्य किये यह यू ही नरतन व्यर्थ गंवाया
देखो किसने क्या पाया मानव क्यों जग में आया
उस लोभी को भी देखो संचय का जिसे व्यसन है
कितनी ही संपत्ति जोड़ी पर तृप्त न होता मन है
कौड़ी न साथ जाएगी फिर किसके लिये कमाया
देखो किसने क्या पाया मानव क्यों जग में आया
उस मोही को भी देखो सब की ममता ये फूल
निज देख गेह में फंसकर उस परमेश्वर को भुला
यह मोह दुखो की जड़ है इसने किसको न रूलाया
देखो किसने क्या पाया मानव क्यों जग में आया
उस अभिमानी को देखो यह विभव रहेगा कबतक
उससे भी बढ़कर जगमें हो गये करोड़ो अबतक
मिट्टी में मिल गयी उनकी जो दर्शनीय थी काया
देखो किसने क्या पाया मानव क्यों जग में आया
उस दानी को भी देखो जितना बोता जाता है
वह कई गुना बढ़कर ही उसके सन्मुख आता है
जिसने जितना दे डाला उतना ही लाभ उठाया
देखो किसने क्या पाया मानव क्यों जग में आया
उस त्यागी को भी देखो, जो दुखद दोष को तजकर
निर्द्वन्द्व शांती पाता है सत् परमेश्वर को भजकर
योगी ने राग बढ़ाया त्यागी ने प्रेम अपनाया
देखो किसने क्या पाया मानव क्यों जग में आया



गुरू की सेवा, गुरू की आज्ञा का पालन, गुरू की पूजा और गुरू का ध्यान - ये चीजें बहुत महत्वपूर्ण हैं। शिष्य के लिए आचरण करने योग्य उत्तम चीजें है।

|| ॐ गुरू ||

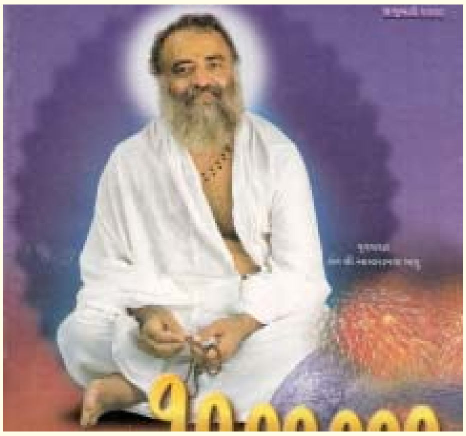
भजन - एक झोली में फूल भरे है

एक झोली में फूल भरे हैं एक झोली में कांटे
कोई कारण होगा
तेरे बस में कुछ भी नहीं है ये तो बांटने वाला बाटे
अरे कोई कारण होगा
पहले बनती है तकदीरे फिर बनते है शरीर
ऐ तो प्रभु की कारीगरी है तू क्यूं हैं गंभीर
अरे कोई कारण होगा
नाग भी डस ले तो मिल जाए किसी को जीवनदान
चींटी से भी मिट सकता है किसी का नामोनिशान
अरे कोई कारण होगा
धन का बिस्तर मिल जाए पर नींद को तरसे नैन
कांटो पर भी सो कर आए किसी के मन को चैन
अरे कोई कारण होगा
सागर से भी बुझ सकता नहीं कभी किसी की प्यास
कभी एक बुंद से हो जाती है पूरण प्यास
अरे कोई कारण होगा
एक झोली में फूल भरे हैं एक झोली में कांटे
कोई कारण होगा
तेरे बस में कुछ भी नहीं है ये तो बांटने वाला बाटे
अरे कोई कारण होगा

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

शिष्य जब गुरू के पास रहकर अभ्यास करता हो तब उसके कान श्रवण के लिए तत्पर होने चाहिए। वह जब गुरू की सेवा करता हो तब उसकी दृष्टि सावधान होनी चाहिए।



।। ॐ गुरू।।

भजन - एक तुम ही आधार



एक तुम ही आधार सदगुरू... 2
जब तक मिलो न तुम जींवन में... 2
शांति कहॉ मिल सकती मन में... 2
खोजत फिरे संसार सदगुरू... 2
एक तुम ही आधार सदगुरू... 2
कितना भीं हो तारणहारा... 2
लिया न जब तक शरण सहारा... 2
हो न सका वो पार सदगुरू ... 2
एक तुम हीं आधार सदगुरू... 2
हे प्रभु तुम हीं विविध रूपों से... 2
हमें बचाते दुख कुपो से... 2
ऐसे परम उदार सदगुरू... 2
एक तुम हीं आधार सदगुरू... 2
हम आए शरण तुम्हारीं... 2
अब उद्धार करों दुखहारीं... 2
सुन लो मेरीं पुकार सदगुरू... 2
एक तुम हीं आधार सदगुरू... 2

गुरू को सम्पूर्ण, बिनशर्ती आत्मसमर्पण करने से अचूक गुरूभक्ति प्राप्त होती है।

ब्रह्मनिष्ठ गुरू के चरणकमलों के सान्निध्य में जाने के लिए कला, विज्ञान या विद्वता कुछ भी आवश्यक नहीं है। आवश्यकता है केवल उनके प्रति प्रेम और भक्ति से पूर्ण ह्रदय की, जो फल की अपेक्षा से रहित हो, केवल उनमें ही निरत रहने के संकल्पवाला हो, केवल उनके ही कार्य में लगा हुआ हो, केवल उनके ही प्रेम में मग्न रहनेवाला हो।

|| ॐ गुरू ||

भजन - गोविंद गोविंद कृष्णा कृष्णा

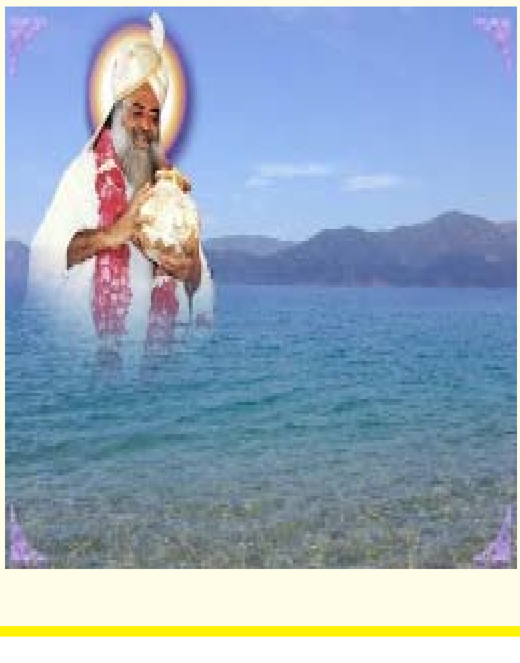
गोविंद गोविंद कृष्णा कृष्णा बोल ले
हरि नाम की चाबी से हदय के पट खोल ले
गोविंद गोविंद कृष्णा कृष्णा बोल ले
खैर हुआ जो अब तक उसका पश्चाताप ना कर
सदगुरू के शरणागत होकर हो जा निश्चिंत और निडर
अपनी जिंदगानी में तू नाम अमृत घोल ले
गोविंद गोविंद कृष्णा कृष्णा बोल ले
गोविंदा गोपाला......
इसके बाद तुझे अपना विषयों से राग हटाना है
त्याग तपस्या नियम से गुरू के अनुकुल बन जाना है
फिर तेरे प्रति सारा जमाना चाहे कुछ भी बोल ले
गोविंद गोविंद कृष्णा कृष्णा बोल ले
ध्यान धारणा नित्य स्तुति सारा जीवन करनी है
क्योंकि तुझको भवसागर से पार खुद को करनी है
सस्ता है मार्ग ये सबसे चाहे तराजु तोल ले
गोविंद गोविंद कृष्णा कृष्णा बोल ले
सतनाम वाहयगुरू सतनाम वाहयगुरू सतनाम वाहयगुरू

गोविंदा गोपाला गोविंदा गोपाला गोविंदा गोपाला गोविंदा गोपाला गोविंदा गोपाला गोविंदा गोपाला

गोविंदा गोपाला गोविंदा गोपाला गोविंदा गोपाला गोविंदा गोपाला गोविंदा गोपाला गोविंदा गोपाला



सदगुरू के साथ एक क्षण किया हुआ सत्संग लाखों वर्षों के तप से अनंत गुना श्रेष्ठ है।



॥ ॐ गुरू॥

भजन - गोविंद मेरो है

गोविंद मेरो है गोपाल मेरो है
वो तो छोटो छोटो यशोदा को लाल मेरो है
वो तो प्यारो प्यारों महंगींबा को लाल मेरो है
जय नंदलाला जय गोपाला
गोपाला गोपाला गोपाला
नंदलाला नंदलाला नंदलाला
गोपाला गोपाला गोपाला
गोकुल नगरीं में गैया चरावे
मीठीं मीठीं मुरलीं बजावे
माखन चोरीं के खाये
नंदलाला गोपाला
गोपाला नंदलाला
दुर्योधन का मेवा त्यागे
भुख लगीं प्रभु उठकर भागे
साग विधुर पर खाये नंदलाला
नंदलाला गोपाला
गोपाला नंदलाला
भरीं सभा में द्रोपदीं रोईं
अब तो लाज बचावो मोरीं
चीर पुराने आये नंदलाला
नंदलाला गोपाला
गोपाला नंदलाला

**हरि सम जग कछु वस्तु नहीं प्रेम पंथ सम पंथ।
सतगुरू सम सज्जन नहीं गीता सम नहीं ग्रंथ॥**

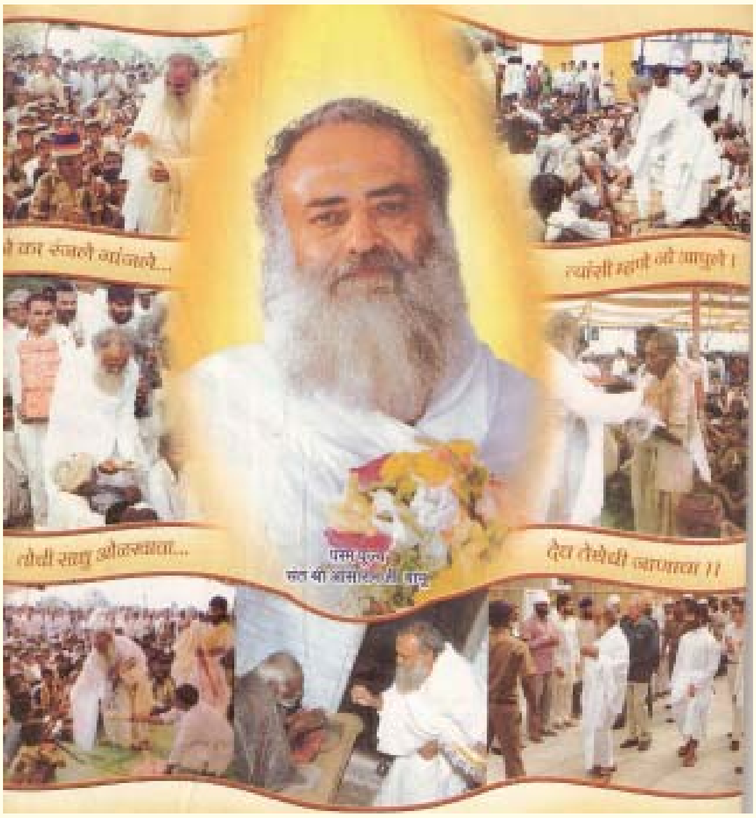


नंदलाला गोपाला नंदलाला गोपाला नंदलाला गोपाला
गोपाला नंदलाला गोपाला नंदलाला गोपाला नंदलाला

।। ॐ गुरू।।

भजन - गुरू भजन बिना मिले

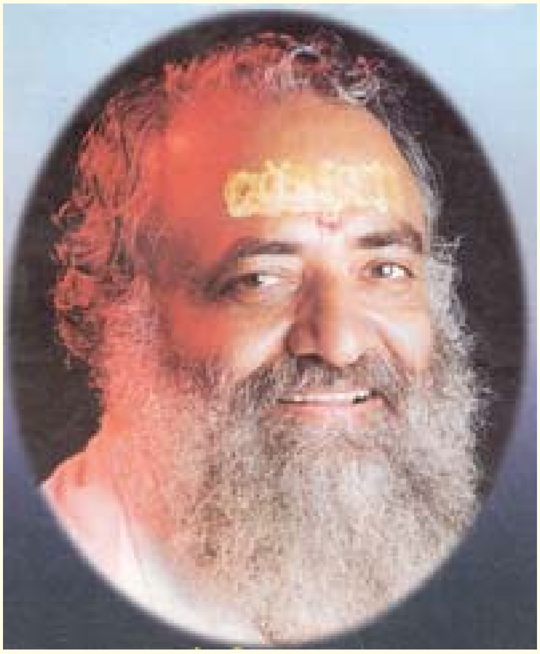
गुरू भजन बिना मिले शांति नहीं
जब तक दया दृष्टि नहीं होती उनकी कृपा दृष्टि नहीं होती
जब तक होता ज्ञान नहीं तब तक मिटती भ्रांति नहीं
गुरू भजन बिना मिले शांति नहीं
कहीं जनमों से भटके है इस मोह में फस के अटके है
जो सबसे ज्यादा अपने है ये नजरे उन्हें पहचानती नहीं
गुरू भजन बिना मिले शांति नहीं
गुरूदेव हमें ना तड़पाओ बुलवाओ हमें या खुद आवो
दर्शन को तरसती ये आखे तुम्हे देखे बिना अब मानती नहीं
गुरू भजन बिना मिले शांति नहीं
जो सब घट के वासी है अजर अमर अविनाशी है
व्यर्थ जीवन है उनके बिना गए शरण बिना कोई क्रांति नहीं
गुरू भजन बिना मिले शांति नहीं



।। ॐ गुरू।।

भजन - गुरूभक्तों के खुल गये भाग

गुरू भक्तों के खुल गए भाग जब गुरू सेवा मिली ...2
सेवा मिली थी राजा हरिशचंद्र को ...2
दे दिया राज और ताज जब गुरू सेवा मिली
हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम
आप भी बिके राजा, रानी को भी बेच दिया ...2
बेच दिया रोहित कुमार जब गुरू सेवा मिली
सेवा करी थी भिलनी भक्त ने ...2
प्रभुजी पहुंच गये द्वार जब गुरू सेवा मिली
सेवा में पुत्र पर आरा चला दिया ...2
वो मोरध्वज महाराज जब गुरू सेवा मिली
सेवा करी थी मीरा बाई ने ...2
लोकलाज दीन्ही उतार जब गुरू सेवा मिली
तुमको भी मौका गुरूजी ने दिया
हम सबको मौका गुरूजी ने दिया
हा जाओ भव से पार जब गुरू सेवा मिली



lnxq: dk
pj.kdeyk dk vkJ;
yus ls ftl vkuUn
dk vuqHko gksrk gS
mlds vkxs f=ykdh
dk lkekT; rqPN gSA

|| ॐ गुरू ||

भजन - गुरूज्ञान पा लो रे

ॐ
आनंद
ॐ

गुरूज्ञान पा लो रे ब्रह्मज्ञान पा लो
गुरूवर की ज्योति से ज्योत को जला लो
हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ



गुरूवर की ऑखो में तेज और प्रकाश है
गुरूवर के चरणों में तीर्थो का वास है

ॐ
आनंद
ॐ

गुरूवर की सूरत को मन में बसा लो
गुरूवर की ज्योति से ज्योत को जला लो
हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ

ॐ
आनंद
ॐ

गुरूवर एक शक्ति है अवतारी व्यक्ति है
गुरूवर की वाणी में सोह्म की शक्ति है
ज्ञानदाता गुरूवर है प्राणदाता गुरूवर है
गुरूवर की सेवा को साधना बना लो
गुरूवर की ज्योति से ज्योत को जला लो



ॐ
आनंद
ॐ

हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ
गुरूवर से कहना की नईया को संभाले
गुरू और गोविंद के भेद को मिटा दो
गुरूवर की ज्योति से ज्योत को जला लो
हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ



गुरू के पास अभ्यास पूरा करने के बाद भी समग्र जीवनपर्यंत शिष्य को अपने आचार्य के प्रति कृतज्ञता का भाव बनाये रखना चाहिए।

।। ॐ गुरू।।

भजन - गुरू का दिवाना हूं मैं

गुरू का दिवाना हूं मैं
उनको ही चाहता हूं मैं
उनको ही ध्याता हूं, उनको ही मानता हूं
उनके सहारे हूं मैं.....
गुरू के ही दर्शन की प्यास लगी है
गुरू के ही अरचन की आस रखी है
गुरू के सहारे हूं मैं.....
गुरू का दिवाना हूं मैं
गुरू की ही पूजा की लगन लगी है
गुरू की वाणी की ही तड़प जगी है
गुरू के सहारे हूं मैं.....
गुरू का दिवाना हूं मैं
गुरू के चरणनन में शांति और तृप्ति है
गुरू की ही कृपा से ज्योत जगी है
गुरू के सहारे हूं मैं.....
गुरू का दिवाना हूं मैं
गुरूभक्ति सांची है समझ जगी है
गुरू ब्रह्मा विष्णु है करूणा की मूर्ति है
गुरू के सहारे हूं मैं.....
गुरू का दिवाना हूं मैं
उनको ही ध्याता हूं, उनको ही मानता हूं
उनके सहारे हूं मैं.....

प्रत्येक शिष्य सद्गुरू की सेवा करना चाहता है लेकिन अपने ढंग से। सद्गुरू चाहें उस ढंग से सेवा करने को कोई तत्पर नहीं। जो विरला साधक गुरू चाहें उस ढंग से सेवा कर सकता है उसे कोई कमी नहीं रहती। ब्रहमनिष्ठ सद्गुरू की सेवा से उनकी कृपा प्राप्त होती है और उस कृपा से न मिल सके ऐसा तीनों लोकों में कुछ भी नहीं है।



।। ॐ गुरू।।

भजन - गुरू की महिमा गा ले

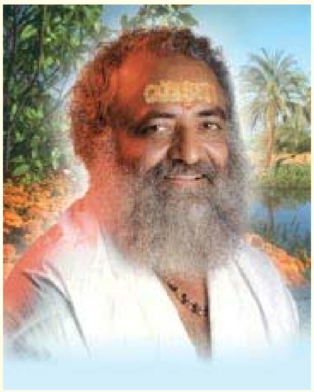
गुरू की महिमा गा ले भजन ईश्वर का होगा
घड़ी भर ध्यान लगा ले ईष्ट का दर्शन होगा
खुदको बड़भागी मानो जब गुरू सत्संग मिल जाए
वो घड़ी नरक की जानो सत्संग ना मन को भाए
संत का संग बना ले तभी भगवन को मिलेगा
गुरू की महिमा गा ले भजन ईश्वर का होगा
सतशास्त्र संत और सदगुरू तीनों की महिमा गा लो
गुरूदेव दया कर दे तो भक्त भीतर ब्रह्म को पा ले
चरण रज शीष लगा ले तो सोया भाग्य जगेगा
गुरू की महिमा गा ले भजन ईश्वर का होगा
जब सतसत गुरू का अनुभव तू अपना नहीं बनावे
जो गुरू मुख से सुन पाया उसे जीवन में ना लाए
तू कितना भी ध्यान लगा ले तू तत्व से दूर रहेगा
गुरू की महिमा गा ले भजन ईश्वर का होगा
सदगुणों की महिमा भारी साधक में शोभा पावे
सदगुरू के बिना कर्मो में मीठी खुशबू मीठी ना आवे
ब्रह्म का ज्ञान पचा ले गुरू को भाने लगेगा
गुरू की महिमा गा ले भजन ईश्वर का होगा
कोई दुश्मन नहीं हमारा सृष्टि का सृजनहारा
आनंद मंगल का दाता हर घट की जाननेवाला
तू हा में हा हीं मिला ले वो बाकी खुद कर लेगा
गुरू की महिमा गा ले भजन ईश्वर का होगा



आनंद के लिए बाहर क्यों व्यर्थ खोज करते हो? सदगुरू चरणों के समीप जाओ और शाश्वत सुख का उपभोग करो।

।। ॐ गुरू।।

भजन - गुरू मेरे परमात्मा



गुरू मेरे परमात्मा तेरे दरस को तरसे आत्मा
तेरे दरस को तरसे आत्मा तेरे दरस को तरसे आत्मा
गुरू मेरे परमात्मा तेरे दरस को तरसे आत्मा
काम क्रोध ने है भरमाया, राग द्वेष ने है भरमाया
शक्ति दो करू सामना तेरे दरस को तरसे आत्मा
गुरू मेरे परमात्मा तेरे दरस को तरसे आत्मा
राह दिखावे है अंधियारा, सूझता नहीं कोई किनारा
स्वींकारों ये प्रार्थना तेरे दरस को तरसे आत्मा
गुरू मेरे परमात्मा तेरे दरस को तरसे आत्मा
तू ही मेरा भाग्यविधाता, हरपल मेरा साथ निभाता
तुझे पहचाने ये आत्मा तेरे दरस को तरसे आत्मा
गुरू मेरे परमात्मा तेरे दरस को तरसे आत्मा
जो कोई तेरा दर्शन पाए, रामकृष्ण को तुझमें पाए
सर्वव्याप्त तेरीं आत्मा तेरे दरस को तरसे आत्मा
गुरू मेरे परमात्मा तेरे दरस को तरसे आत्मा
दर्शन के बिन रहा न जाए, प्राण है बस अब कंठ को आए
स्वींकारों ये प्रार्थना तेरे दरस को तरसे आत्मा
गुरू मेरे परमात्मा तेरे दरस को तरसे आत्मा
दया धर्म का मुझको वर दो, भक्ति से मेरीं झोलीं भर दो
दुखो का करके खात्मा तेरे दरस को तरसे आत्मा
गुरू मेरे परमात्मा तेरे दरस को तरसे आत्मा

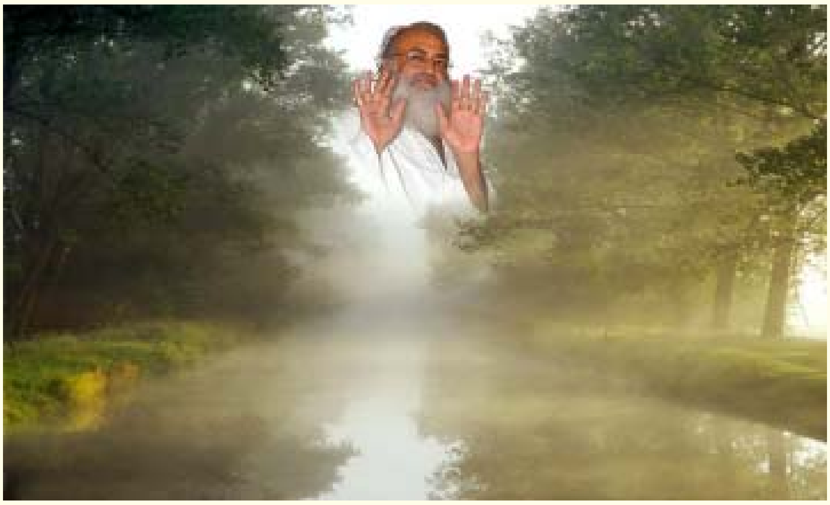
चलते हुए, खाते हुए, कार्यालय में काम करते हुए भीं सदैव अपने गुरूमंत्र का मानसिक जप करते रहो।

।। ॐ गुरू।।

भजन - गुरूनाम सहारा मेरा है

ॐ
श्री
आत्मदेवाय
नमः

गुरूनाम सहारा मेरा है गुरूनाम सहारा मेरा है
मेरा और सहारा कोई नहीं मेरा और सहारा कोई नहीं
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
गुरूसेवा सहारा मेरा है गुरूसेवा सहारा मेरा है
गुरूपूजा सहारा मेरा है मेरा और सहारा कोई नहीं
गुरूभक्ति सहारा मेरा है गुरूभक्ति सहारा मेरा है
सदगुरू सहारा मेरा है गुरूदेव गुरूदेव
गुरूमंत्र सहारा मेरा है मेरा और सहारा कोई नहीं
हरे रामा हरे कृष्णा, हरे रामा हरे कृष्णा
गुरूवाणीं सहारा मेरा है गुरूवाणीं सहारा मेरा है
सदगुरू सहारा मेरा है मेरा और सहारा कोई नहीं
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम



शिष्य जब गुरू की सेवा करता हो तब उसे तरंगी नहीं बनना चाहिए।

ॐ
श्री
आत्मदेवाय
नमः

ॐ
श्री
आत्मदेवाय
नमः

ॐ
श्री
आत्मदेवाय
नमः

ॐ
श्री
आत्मदेवाय
नमः

ॐ
श्री
आत्मदेवाय
नमः

ॐ
श्री
आत्मदेवाय

ॐ
श्री
आत्मदेवाय
नमः

ॐ
श्री
आत्मदेवाय
नमः

ॐ
श्री
आत्मदेवाय
नमः

।। ॐ गुरू।।

भजन - गुरूदेव मेरे मन को आकर

गुरूदेव मेरे मन को आकर समझा देना
तेरे हुस्न के पागल को गले से लगा देना
तू शमा मैं परवाना तेरे प्यार में दींवाना
गुरू प्रेमी मस्ताना, गुरू पार लगा देना
गुरू पार लगा देना, एक बार लगा देना
इस डुबतीं नईया को गुरू पार लगा देना
गुरूदेव मेरे मन को आकर समझा देना
हम संसार की चिनगारी कहीं शोला न बन जाए
निंदक की चिंगारी का कहीं शोला न बन जाए
अब आकर सदगुरू मुझे गम से छुड़ा देना
मुझे गम से छुड़ा देना एक बार छुड़ा देना
इस डुबतीं नईया को गुरू पार लगा देना
गुरूदेव मेरे मन को आकर समझा देना
तेरीं दुनियावालो ने बर्बाद किया हमको
तेरीं मींठी नजरों ने आबाद किया हमको
इस पागल दुनिया से तेरीं मेरीं छुड़ा देना
तेरीं मेरीं छुड़ा देना एक बार लगा देना
इस डुबतीं नईया को गुरू पार लगा देना
गुरूदेव मेरे मन को आकर समझा देना
तेरीं शरण में आया हूं कुछ पाकर जाउगा
कुछ पाकर जाउगा झोलीं भरकर जाउगा
सारीं दुनिया वालो को गुरू भव से छुड़ा देना
गुरू भव से छुड़ा देना एक बार लगा देना
इस डुबतीं नईया को गुरू पार लगा देना
गुरूदेव मेरे मन को आकर समझा देना



;fn eSa rqEgsa ,d
dkSMh Hkh u nsA dqN
Hkh 'kkjhfjd lsok u
d:¡A dsoy l;kj ls
lPps vkSj lkQ fny
ls rqEgkjs ifr
i%lUurkHkjh eqLdku
ls gl nwa rks rqEgkjk
iQqfYyr gksuk
leqUur gksuk vkSj
mij mBuk vfuok;Z
gSA bruk ls rqEgkjh
cM+h lsok gks tkrh
gSA

|| ॐ गुरू ||

भजन - गुरूजी का दर्शन में

हरे राम
हरे कृष्ण

हरे राम
हरे कृष्ण

हरे राम
हरे कृष्ण

हरे राम
हरे कृष्ण

हरे राम
हरे कृष्ण

ओ मने गुरूजी का सत्संग प्यारे लागे रे मा
गुरूजी का दर्शन में जासा हू हो मैया
ओ मने गुरूजी का कीर्तन प्यारे लागे रे मा
गुरूजी का दर्शन में जासा हू हो मैया
भक्ति बढ़ाए वे तो ध्यान लगावे
मन में भक्ति की ज्योति जगावे
हो... वे तो कीर्तन में मस्त करावे रे मॉ
गुरूजी का दर्शन में जासां हूं हो मैया
राम मिलन की आस बढ़ाए
प्रभु से मिलन की प्यास जगाए
हो... पे तो हदय में राम बसावे रे मॉ
गुरूजी का दर्शन में जासां हूं हो मैया
जींव को ब्रह्म से वे तो मिलाये
मन में ब्रह्म की ज्योत जगावे
हो... वे तो जींव में शिवत्व जगावे रे मॉ
गुरूजी का दर्शन में जासां हूं हो मैया

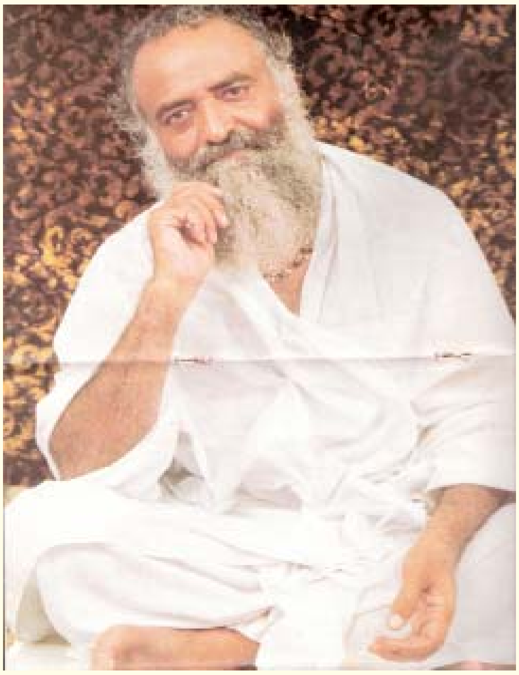
हरे राम
हरे कृष्ण

हरे राम
हरे कृष्ण

हरे राम
हरे कृष्ण

हरे राम
हरे कृष्ण

हरे राम
हरे कृष्ण

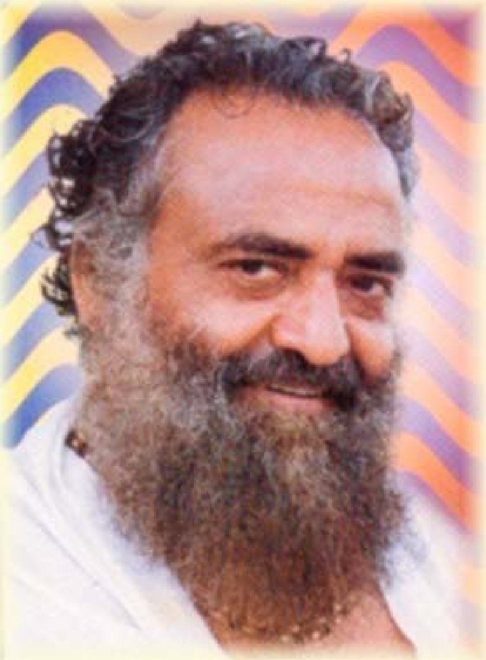


गुरु और कोई नहीं है अपितु साधक की उन्नति के लिए विश्व में अवतरित परात्पर जगज्जनी दिव्य माता स्वयं ही है। उनकी अथक सेवा करो वे स्वयं ही आप पर दीक्षा के सर्वश्रेष्ठ आशीर्वाद बरसाएंगे।

।। ॐ गुरू।।

भजन - है वही भाग्यवान जो भगवान को चाहे

है वही भाग्यवान जो भगवान को चाहे भगवान को चाहे
हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम
भोगी सदा ही भोग के समान को चाहे
अभिमानी सदा ही अपने सम्मान को चाहे
वह त्यागी तपस्वी भी कीर्तीदान को चाहे
और देव पुजारी भी तो वरदान को चाहे
कोई चाहे कुरान या कुरान को चाहे
है वही भाग्यवान जो भगवान को चाहे भगवान को चाहे
हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम
कितने ही अपने भले बुरे काम में भुले
कुछ नाम में भुले है कोई मान में भुले
कोई हजार लाख जोड़ दाम में भुले
जो रूप के मोही है गोरे चाम में भुले
भुले नहीं वो जो दयानिधान को चाहे
है वही भाग्यवान जो भगवान को चाहे भगवान को चाहे
हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम



जब तक मनुष्य की भीतरी समझ में परिवर्तन नहीं होता, तब तक डंडे, बन्दूक और कायदों का कितना भी प्रयोग कर लो, आदमी उंचा नहीं उठता है। सत्संग, संयम और नियम से ही मनुष्य महान बनता है।

भजन - हम तुमको चाहते है....

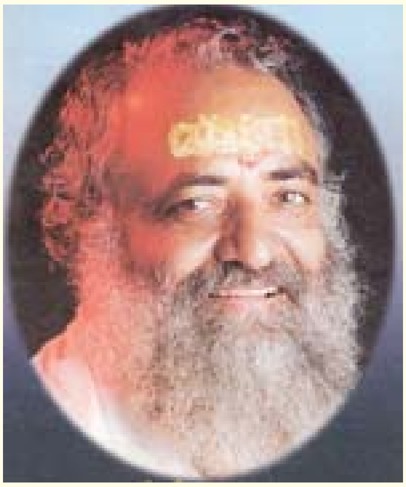


हम तुमको चाहते है हम तुमको मानते है...2
गुरूवर शरण दे देना वरदान मांगते है ...2
हम तुमको चाहते है हम तुमको मानते है...2
तेरा साथ ये ना छुटे बंधन कभीं ना टूटे ...2
तू हीं हमारा अपना बाकीं तो सब है सपना...2
तुमसे ओ मेरे गुरूवर तुमको हीं मांगते है...2
हम तुमको चाहते है हम तुमको मानते है...2
जबसे है तुमको पाया तेरीं मिलीं है छाया...2
तबसे हमारे बेरंग जींवन में रंग आया...2
नितदर्शनों का तेरे सौभाग्य मांगते है...2
हम तुमको चाहते है हम तुमको मानते है...2
कैसे तुम्हें रिंझाये हम कैसे तुमको पाये...2
तेरे बिंना ये जींवन हमने यू हीं गंवाया...2
अब तो सदा तुम्हारा हीं ध्यान मांगते है...2
अब तो सतत तुम्हारा हीं ध्यान मांगते ह...2
हम तुमको चाहते है हम तुमको मानते है...2
ना है कोई भीं चाहत तुमसे मिलीं है राहत...2
बेचैन मन ने गुरूवर तुमसे करार पाया...2
हम तो तेरीं प्रसन्नता और प्रेम मांगते है...2
हम तुमको चाहते है हम तुमको मानते है...2
अद्‌भुत है तेरीं भक्ति निरालीं तेरीं शक्ति...2
वर्णन करे हम कैसे कुछ भीं ना जानते है...2
हम तुमको जान पाये ऐसीं दृष्टि मांगते है...2
हम तुमको चाहते है हम तुमको मानते है...2
करूणानिधान गुरूवर तेरा साथ मांगते है...2
गुरूवर शरण दे देना वरदान मांगते है...2
हम तुमको चाहते है हम तुमको मानते है...2

|| ॐ गुरू ||

भजन - हर हाल में खुश रहना

हर हाल में खुश रहना बापु सिखा रहे है
जल में कमल सा रहना बापु सिखा रहे है
सुख दुख में हसना रोना यह काम कायरों का
यह काम कायरों का
दोनों में मुस्कुराना बापू सिखा रहे है
हर हाल में खुश रहना बापु सिखा रहे है
मरने के बाद मुक्ति सब लोग बताते है
सब लोग बताते है
जींतेजीं मुक्त रहना बापू सिखा रहे है
हर हाल में खुश रहना बापु सिखा रहे है
दुनिया के लोग नश्वर धन पाके मुस्कुराये
धन पाके मुस्कुराये
शाश्वत निधि को पाना बापू सिखा रहे है
हर हाल में खुश रहना बापु सिखा रहे है
कर भावना तु ब्रह्म है तु ब्रह्म का हीं अंश है
तू ब्रह्म का हीं अंश है
जन्मे नहीं तू मरता बापु सिखा रहे है
हर हाल में खुश रहना बापु सिखा रहे है

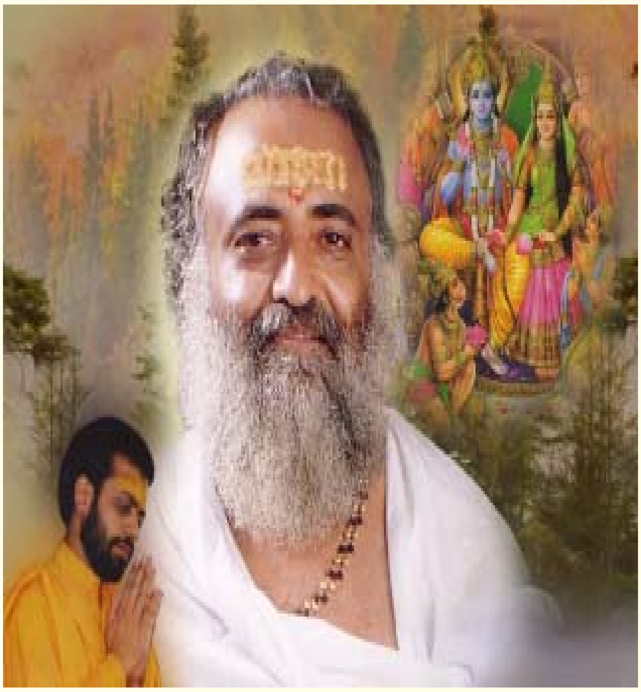


**हर हाल खुशी,
हरदम खुशी, जब
आशिक मस्त फकीर
का हुआ तो क्या
दिलगिरि बाबा!**

।। ॐ गुरू।।

भजन - हरि हरि हरि हरि एक हरि तू ही

हरि हरि हरि हरि एक हरि तू ही
पार करे सबकी नैया मन से भजे कोई
ओम हरि ओम ओम हरि ओम ओम हरि ओम
तेरे चरणनन जींवन अपर्ण
हो जाए हम तेरे दपर्ण
हे सुखकारी महेश्वर
हरि हरि हरि हरि एक हरि तू ही
पूजा तेरीं क्या जानू मैं
कैसे रिझाउ ना जानु मैं
नाथ समझलो अपना
हरि हरि हरि हरि एक हरि तू ही
ये जग बंधन बांधता मुझको
तू हीं बचाले थामले मुझको
हे दुखहारी ईश्वर
हरि हरि हरि हरि एक हरि तू ही
तेरीं कृपा से मिल गये गुरूवर
ब्रह्मा विष्णू है वो महेश्वर
ज्ञान के है गंगेश्वर
हरि हरि हरि हरि एक हरि तू हीं
गुरू रिझे तो जींवन महके
अंतर मन में फूल है खिलते
हो जाए प्रभु के दर्शन
हरि हरि हरि हरि एक हरि तू ही
आतम हीरा गुरू बतलाते
अंतःचक्षु दिव्य बनाते
समतामय जो जीवन
हरि हरि हरि हरि एक हरि तू ही
सुख दुख में सम रहना भाई
दृष्टा बनके जींना भाई
गुरूवर ये समझाते
हरि हरि हरि हरि एक हरि तू हीं



सदगुरू के चरणकमलों का आश्रय लेने से जिस आनंद का अनुभव होता है उसके आगे त्रिलोकी का साम्राज्य तुच्छ है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - हरि हरि गाएजा

हरि हरि गाएजा बिगड़ी बनाए जा....2
गुरू नाम प्यारा जीवन सहारा है....2
हरि हरि गाएजा बिगड़ी बनाए जा
सच्चा खजाना तो गुरूदर से मिलता है ...2
गुरूवर की किरपा से जीवन ये खिलता है 2
गुरूसेवा करता जा, ध्यान उनका धरता जा
गुरू एक प्यारा है जीवन सहारा है
हरि हरि गाये जा बिगड़ी बनाए जा....2
गुरू द्वार आकर के पाप मिट जाते है
गुरूवाणी से सारे बंधन कट जाते है
प्रीत को बढ़ाता जा, सच्ची शांति पाता जा
गुरूद्वार प्यारा है मुक्ति का द्वारा है
हरि हरि गाये जा बिगड़ी बनाए जा ...2
गुरू एक प्यारा है जीवन सहारा है 2

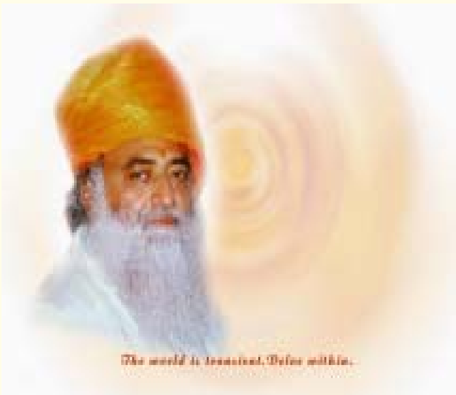


गुरूदेव हमारे साथ है यह दुनिया को दिखा देगे। मौत को भी जीने का नया अंदाज बता देगें।

।। ॐ गुरू।।

.2.

जींवन का अंधियारा मिटे गुरू ज्ञान से
सच्चीं शांति मिलतीं है गुरूवर के ध्यान से
लगन तू लगाता जा, दोषों को भगाता जा
गुरूनाम प्यारा है जींवन सहारा है
हरि हरि गाये जा बिगड़ीं बनाए जा ...2
नश्वर ये रिश्ते सब साथ छोड़ जाते है
फिर दुख कीं घड़ियों में प्रभु याद आते है
वासना मिटाये जा मोह को घटाये जा
गुरू नाम प्यारा है जींवन सहारा है
हरि हरि गाये जा बिगड़ीं बनाए जा ...2
गुरू करते आत्मा के रूप को उजागर है
गुरू भरते सब भक्तो कीं ये गागर है
गुरूगुण गाता जा किरपा पाता जा
वो हीं एक प्यारा है मुक्ति का दाता है
हरि हरि गाये जा बिगड़ीं बनाए जा ...2
गुरू हीं तो प्राणीं कीं उन्नति का आधार है
गुरू हीं भक्तो को करते भवपार है
गुरूनाम ध्याता जा विश्रांति पाता जा
गुरू मंत्र प्यारा है सबका सहारा है
हरि हरि गाये जा बिगड़ीं बनाए जा ...2



गुरू के चरणकमलों में आजीवन आत्म-समर्पण करना, यह शिष्यत्व की निशानी है।

।। ॐ गुरू।।

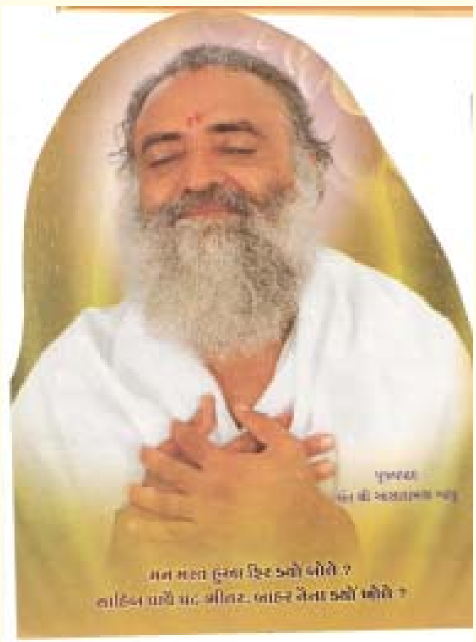
भजन - ये महफिल है मस्तानों की

हरि हरि ओम बोलो हरि हरि ओम
ये महफिल है मस्तानों की दिलवालों की मतवालों की
इनकी मस्ती का क्या कहना ये हरि भजन का है गहना
हरि हरि ओम बोलो हरि हरि ओम
हो... जब से सदगुरू का नाम लिया हमने गिरतो का थाम लिया
सदगुरू ही मेरा सहारा है मुझे भव से पार उतारा है
हरि हरि ओम बोलो हरि हरि ओम
हो.. मेरे सांई तारणहार हुए वे कलयुग के अवतार हुए
सारा जग माने सांई को सांई को मेरे सांई को
हरि हरि ओम बोलो हरि हरि ओम
हो... जो प्यार गुरू से करते है वो भवसागर से तरते है
है उनका बेढ़ापार सदा जो सबको करते प्यार सदा
हरि हरि ओम बोलो हरि हरि ओम
हो... वो लीलाशाह के प्यारे है थाउमल के दुलारे है
मॉ महंगीबा के प्यारे है हम सब की आखो के तारे है
हरि हरि ओम बोलो हरि हरि ओम

नारायण हरि

नारायण हरि

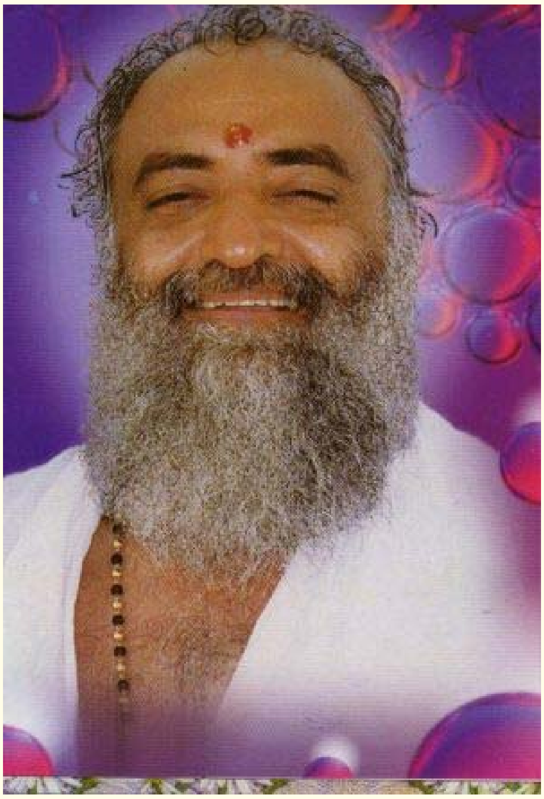
नारायण हरि



गुरू की सेवा के दौरान कैसी भी परिस्थितियों में साधक को मिलनेवाला संतोष सदा आनंद और शक्ति देता है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - हरि तुम भक्तन के हितकारी



गुरू ही त्रिनेत्ररहित साक्षात् शिव हैं, दो हाथवाले भगवान विष्णु हैं और एक मुखवाले ब्रह्माजी हैं। – स्कंदपुराण 1/46

हरि तुम भक्तन के हितकारी ... 2
ध्रुव ने वन में करी तपस्या ... 2
गुरूवचन लिये धारी... 2
दरस दिखाये अमर पद दीन्हों...2
जनम मरण दुख तारी... 2
हरि तुम भक्तन के हितकारी ... 2
जब गजराज ग्राह वश कीन्हों... 2
तब हरिनाम पुकारी... 2
गज के फंद छुरावन तारण... 2
आये गरूड सवारी... 2
हरि तुम भक्तन के हितकारी ... 2
द्रौपदी ने जब सुमिरण कीन्हों... 2
बढ़ गये चीर हजारी... 2
हे प्रभु अब मैं शरण में आयो... 2
दीजिये भव जल पारी... 2
हरि तुम भक्तन के हितकारी ... 2
नरसिंह रूप बनाये असूर की... 2
लख से देह बिगाड़ी... 2
हरि तुम भक्तन के हितकारी ... 2
हरि अब राखिये लाज हमारी... 2
मुसाफिर जागते रहना
हे मुसाफिर जागते रहना

।। ॐ गुरू।।

भजन - हे मॉं महंगीबा बड़भागी



पृथ्वी सृष्टि की एक अंशमात्र है, ऐसी सृष्टियां भी जिसमें गेंद की भांति खदबदाकर लीन हो जाती है, वह है परब्रह्म परमात्मा। ऐसा परब्रह्म परमात्मा, जिसका पुत्र बनने को राजी हो जाता है, ऐसी महिमावान माताओं का वर्णन भला कौन कर सकता है? ऐसी महिमावान माताएं है, श्री रामचंद्रजी की माता कौशल्याजी, श्री कृष्णजी की माता देवकीजी, भगवान कपिलमुनि की माता देवहुति और प्रातः स्मरणीय पुज्यपाद सदगुरू साईं आसारामजी बापू की माता श्री श्री मां महंगीबा। ऐसी जगत जननी को पाकर पृथ्वी की भी शोभी बढ़ती है। इस युग की ऐसी माता श्री श्री परम पूज्यनीय मां मंहगीबा को हमारे अनंत कोटि प्रणाम।

हे मॉं महगींबा बड़भागी तू जो ऐसो लाल जनायो
ऐसो लाल जनायो खुद ब्रह्म तेरे घर आयो
हे मॉं महगींबा बड़भागी तू जो ऐसो लाल जनायो
जो भूमि का भार उठाए उसे तूने गोद खिलायो रे
मॉं ब्रह्म तेरे घर आयो
हे मॉं महगींबा बड़भागी तू जो ऐसो लाल जनायो
जो सृष्टि का पालनहारा उसे तूने दूध पिलायो रे
मॉं ब्रह्म तेरे घर आयो
हे मॉं महगींबा बड़भागी तू जो ऐसो लाल जनायो
योगी जिनको पकड़ न पाए तूने अंगूली पकड़ चलायो रे
मॉं ब्रह्म तेरे घर आयो
हे मॉं महगींबा बड़भागी तू जो ऐसो लाल जनायो
भारत का ए संत दुलारा हम सबका है सदगुरू प्यारा
लाखों का तारणहारा रे मॉं ब्रह्म तेरे घर आयो
हे मॉं महगींबा बड़भागी तू जो ऐसो लाल जनायो
पारब्रह्म परमेश्वर है जो तूने पुत्र रूप में पायो रे
मॉं ब्रह्म तेरे घर आयो, हमने गुरूरूप में पायो रे
मॉं ब्रह्म तेरे घर आयो
श्वास श्वास में वेद है जिनके लीलाशाह गुरू बनायो रे
मॉं ब्रह्म तेरे घर आयो
हे मॉं महगींबा बड़भागी तू जो ऐसो लाल जनायो
जिसका ना कोई नाम रूप है आसाराम नाम कहायो रे
मॉं ब्रह्म तेरे घर आयो
हे मॉं महगींबा बड़भागी तू जो ऐसो लाल जनायो
ऐसो लाल जनायो खुद ब्रह्म तेरे घर आयो
हे मॉं महगींबा बड़भागी तू जो ऐसो लाल जनायो

मां तो है मां, मां जैसी दुनिया में कोई नहीं कहां।

।। ॐ गुरू।।

भजन - हे नाथ अब तो ऐसी दया हो

गुरू मनुष्य के रूप में साक्षात् ईश्वर ही हैं।

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो
जीवन निरर्थक जाने ना पाए
हे नाथ अब तो ऐसी दया हो
वह योग्यता दो सेवा करें हम
कष्टों के सम्मुख धीरज धरे हम
अपना हृदय सदगुण से भरे हम
मन में ना कोई दुर्भाव आए
हे नाथ अब तो ऐसी दया हो
जीवन निरर्थक जाने ना पाए
ऐसा जगा दो फिर सो ना पाए
अपने को निष्काम प्रेमी बनाए
संसार का कुछ भय रहे न जाए
हे नाथ अब तो ऐसी दया हो
जीवन निरर्थक जाने ना पाए

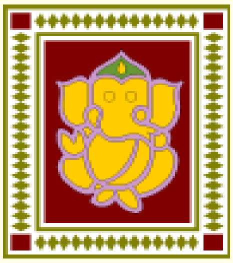
गुरू मनुष्य के रूप में साक्षात् ईश्वर ही हैं।

गुरू में संपूर्ण श्रद्धा रखो और अपने–आपको पूर्णतः गुरू की शरण में ले जाओ। वे आपकी निगरानीं करेंगे। इससे सब भय, अवरोध एवं कष्ट पूर्णतः नष्ट होंगे।



।। ॐ गुरू।।

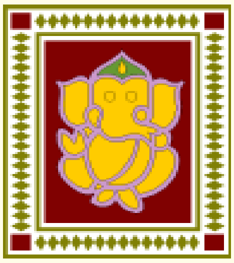
भजन - हे सदगुरू भगवान



हे सदगुरू भगवान तुमको बारंबार प्रणाम है
सत्‌चित्त आनंद धाम तुमको बारंबार प्रणाम है
जो अखंड अविनाशी ईश्वर सारे जग में समाया है
उस बिछड़े तारे से मिलाने तू धरती पर आया है
है तेरे अनोखे काम तुझको बारंबार प्रणाम है



ये संसार है वृक्ष निराला जो भी इस पर चढ़ते है
विषयों के फल खाते खाते नर्क कुंड में गिरते है
बस तू ही बचाए जान तुमको बारंबार प्रणाम है
हर कोई हैरान यहा है दुनियारूपी जंगल में
फंसा हुआ हर कोई यहा पर माया के इस दलदल में
तुम करते मुक्ति प्रदान तुमको बारंबार प्रणाम है



जब दुनिया दुश्मन बन जाती विकट परिस्थिति आ जाती
उस दुखदायी घड़ियों में एक तू ही निर्मल साथी है
देता शांती आराम तुमको बारंबार प्रणाम है
तीनो तापों की अग्नि में झुलस रहा संसार है
घोर अशांति छाई सुझे ना कोई उपचार है
है चंदन तेरा ज्ञान तुमको बारंबार प्रणाम है



जो व्यक्ति अपने गुरू के चरणकमलों की पवित्र धूलि को अपने ललाट पर लगाता है, उसका हृदय शीघ्र पवित्र बनता है।

|| ॐ गुरू ||

भजन - हिम्मत ना हारिये

हिम्मत ना हारिये प्रभु ना विसारिये 2
हसते मुस्कुराते हुए जिंदगी गुजारिये ...2
काम ऐसे कीजिए की जिनसे हो सबका भला
बाते ऐसे कीजिए जिनमें हो अमृत भरा
मीठी बोली बोल सबको प्रेम से पुकारिये
कड़वे बोल बोलके न जिंदगी बिगाड़िये
हसते मुस्कुराते हुए जिंदगी गुजारिये ...2
अच्छे कर्म करते हुए दुख भी अगर पा रहे है
पिछले पापकर्म का भुगतान वो भुगता रहे है
सदगुरू की भक्ति करके पाप को मिटाइये
गलतियों से बचते हुए साधना बढ़ाईये
गलतियों से बचते हुए भक्ति बढ़ाईये
हिम्मत ना हार हिम्मत ना हार
बापू तेरे साथ प्यारे हिम्मत ना हार
हृदय की किताब पर ये बात लिख लिजिए
बंनके सच्चे भक्त सच्चे दिल से अमल कीजिए
करके अमल बनके कमल तरिये और तारिये
जग में जगमगाते हुए जिंदगी गुजारिये
मुश्किलों मुसीबतो का करना हो जा खात्मा
हर समय ये कहना तेरा शुक्र है परमात्मा
फरियादे करके अपना हाल ना बिगाड़िये
जैसे प्रभु राखे वैसे जिंदगी गुजारिये
हिम्मत ना हार हिम्मत ना हार
बापू तेरे साथ प्यारे हिम्मत ना हार



तुम ही हो ब्रह्मा विष्णु महेश
आये हो लेकर बापू का वेश
तुम ही मेरे राम हो, तुम ही
मेरे श्याम हो
तुम ही मेरे तीरथ, तुम ही
चारो धाम हो
तुम ही मेरी जिंदगी, तुम ही
विराम हो

।। ॐ गुरू।।

भजन - हो गयी रहमत तेरी

हो गयी रहमत तेरी सदगुरू रहमत छा गयी
देखते ही देखते आखों में मस्ती छा गयी
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
गम मेरे सब मिट गये और मिट गये रजो अलम
जब से देखी है तेरी दीदार ए मेरे सनम
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
आंख तेरी ने पिलाई है मुझे ऐसी शराब
बेखुदी में मस्त हूं उठ गये सारे हिजाब
हो गयी रहमत तेरी सदगुरू रहमत छा गयी
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
मस्त करती जा रही शक्ल नुरानी तेरी
कुछ पता सा दे रही आंख मस्तानी तेरी
हो गयी रहमत तेरी सदगुरू रहमत छा गयी
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
अब तो जीउंगा मैं दुनिया में तेरा ही नाम ले
आ जरा नैनो के सद के मुझको सदगुरू थाम ले
हो गयी रहमत तेरी सदगुरू रहमत छा गयी
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम

सदैव सम और प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।

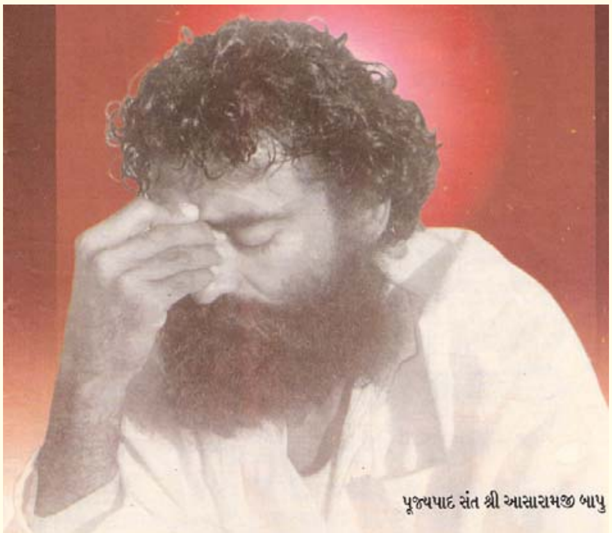


गुरू के द्वारा चाहे जैसा भोजन, कपड़े एवं निवास प्राप्त हों उनसे शिष्य को संतोष करना चाहिए। अपने सच्चे मन एवं हृदय से गुरू की सेवा में तत्पर रहना चाहिए।

।। ॐ गुरू।।

भजन - होगा आत्मज्ञान वो

होगा आत्मज्ञान वो दिन कब आएंगे
मिटे भ्रम अज्ञान वो दिन कब आएंगे
सदगुरू देव कृपा करेंगे भव बंधन से पार करेंगे
बालक अपना ध्यान वो दिन कब आएंगे
मिटे भ्रम अज्ञान वो दिन कब आएंगे
गुरूकृपा का बन अधिकारी गाए सदगुरू महिमा प्यारी
कर चरणों का ध्यान वो दिन कब आऐंगे
मिटे भ्रम अज्ञान वो दिन कब आएंगे
जब जब आना पड़े जगत में बनीं रहीं ऋतु सत संगत में
सुमिरन हो गुरूनाम वो दिन कब आऐंगे
मिटे भ्रम अज्ञान वो दिन कब आएंगे
बार बार इस जग में आउं सदगुरू सेवा कर्ज चुकाउं
सब के आउ काम वो दिन कब आऐंगे
मिटे भ्रम अज्ञान वो दिन कब आऐंगे
जब जब चर्चा हो ईश्वर कीं आवे याद मुझे गुरूवर की
पल में लग जाए ध्यान वो दिन कब आऐंगे
मिटे भ्रम अज्ञान वो दिन कब आएंगे

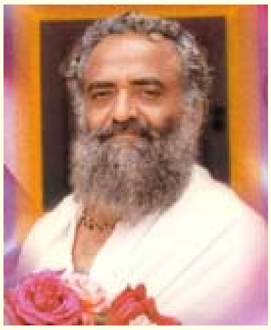


गुरूकृपा से ही मनुष्य को जीवन का सच्चा उद्‌देश्य समझ में आता है और आत्मसाक्षातकार करने की प्रबल आकांक्षा उत्पन्न होती है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - हम आपके हुए...

हम आपके हुए गुरूवर स्वीकार लेना।
नश्वर जग में उलझे हुए है, हमको उभार लेना।
हम आपके हुए...................
झुठे है रिश्ते–नाते कुछ काम में न आते।
माया के सब खिलौने है जाल में फंसाते।
बार बार हम उलझ रहे है जींवन का सार देना।
हम आपके हुए...................
विषयों ने मुझको घेरा मैं तो उलझ रहा था।
पींछे लगीं थीं माया, माया में फंस रहा था।
गुरूद्वारे मैं अब हुं आया दुगुर्ण को मार देना।
हम आपके हुए...................
चाहे जगत ये छुटे गुरूनाम कीं लगन हो।
नश्वर का साथ छुटे गुरूप्रेम की अगन हो।
मैं तो चाहु गुरूभक्ति को, झोलीं में डाल देना।
हम आपके हुए...................
तुम तो हो कृष्णा मेरे, मेरे राम भीं तुम्हीं हो।
तींरथ मुझे क्या करना, सब देवता तुम्हीं हो।
हो पूरण मेरे प्यारे गुरूवर अपना बनाये रखना।
हम आपके हुए...................
अंधकार से भरा था निगुरा जींया था जीवन।
मैं तो भटक रहा था, भटका हुआ था ये मन।
मेरे इस दोषी मन को गुरूवर अब तुम संवार लेना।
हम आपके हुए...................
कृपा है तेरीं गुरूवर मुझको शरण लिया है।
मैं तो रहा अनाड़ीं अपना बना लिया है।
हे मेरे गुरूवर मैं क्या गुण गाउ वंदन स्वीकार लेना



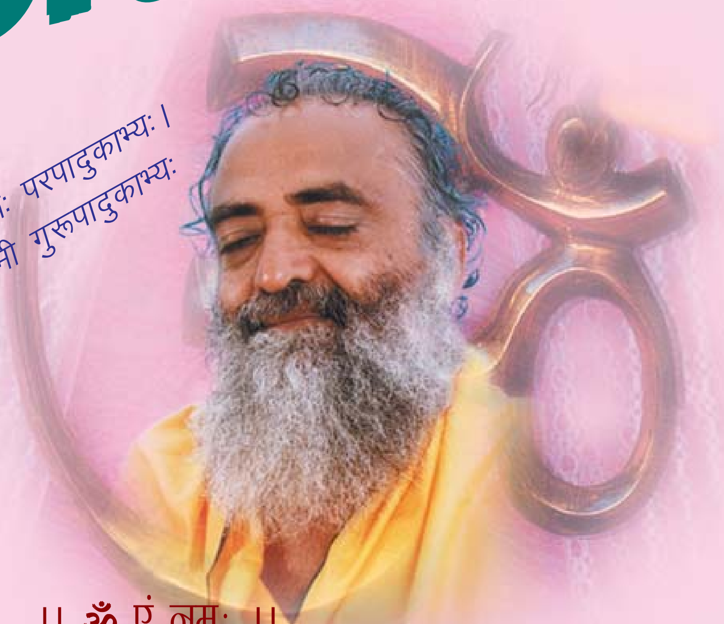
किसी भी प्रकार के फल की अपेक्षा से रहित होकर गुरू की सेवा करना, यह सर्वोच्च साधना है।

।। ॐ श्री सदगुरूपरमात्मने नमः।।



गुरू-प्रसाद

भजनामृत



।। ॐ गुरु ।।

ॐ नमो गुरुभ्यों गुरुपादुकाभ्यों नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।

आचार्यसिद्धेश्वरपादुकाभ्यों नमो सुलश्रमी गुरुपादुकाभ्यः

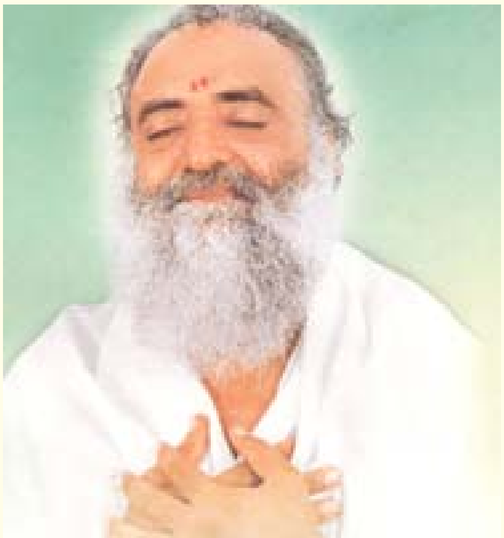
।। ॐ एं नमः ।।

प्रथमे गुरु को वंदना, दृत्ये आदि गणेश

तृत्ये सुमरु शारदा, मेरे कंठ करो प्रवेश

|| ॐ गुरू ||

भजन - इतनी शक्ति मुझे दो मेरे औलिया



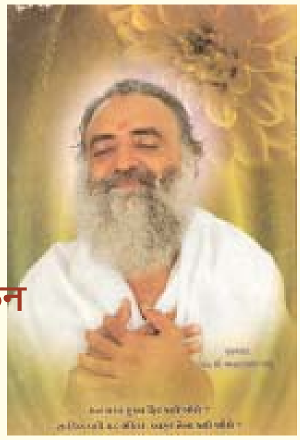
इतनी शक्ति मुझे दो मेरे औलिया
तेरे भक्ति में खुद को मिटाता चलु
चाहे राहो में कितनीं मुसींबत पड़े
फिर भीं तेरा सदा गींत गाता चलु
इतनी शक्ति मुझे दो मेरे औलिया
दूसरों कीं मदद कीं जरूरत नहीं
मुझकों केवल तुम्हारी मदद चाहिए
मुझको केवल तुम्हारी मदद चाहिए
लड़खड़ाए न मेरे कदम राह में
नाम का डंका तेरे बजाता चलू
इतनी शक्ति मुझे दो मेरे औलिया
नाव बोझिल मेरीं पूर्व के पाप से
खो न जाउ यहीं डर सताता मुझे
खो न जाउ यहीं डर सताता मुझे
इतना वरदान दे दो मेरे देवता
खुद भीं जागु जगत को जगाता चलू
इतनी शक्ति मुझे दो मेरे औलिया
मेरे जैसे अनेको मिलेंगे तुम्हे
पर हमारे लिए तो तुम्हीं एक हो
पर हमारे लिए तो तुम्हीं एक हो
धूल चरणों कीं मिलती रहे उम्र भर
तेरे राहों में खुद को मिटाता चलू
इतनी शक्ति मुझे दो मेरे औलिया

सदगुरू के पूज्य चरणों में आश्रय लेना ही सच्चा जीवन है। जीवन जीने की सही रीती है।

।। ॐ गुरू ।।

भजन - जब से आए शरण गुरु की

गुरूकृपा ने मुझको दीवाना बनाया है
गुरूदीक्षा ने मुझको मस्ताना बनाया है
कभी घुमते थे बनके माया के दीवाने
गुरू सत्संग ने हमको शंहशाह बनाया है
जब से आए शरण में गुरू की आतममस्ती सी छाने लगी है
गुरूनाम के बने है दीवाने आशिकी हम पे छाने लगी है
जब से आए शरण में गुरू की आतममस्ती सी छाने लगी है
जिनको पहले भी करते थे सुमिरन पूजा वंदन भी करते थे लेकिन
जब से ध्यान सिखाया गुरू ने भक्ति में मस्ती आने लगी है
जब से आए शरण में गुरू की आतममस्ती सी छाने लगी है
जिसको ढूंढा था कभी मंदिरों में जिसको खोजा था कभी तीर्थो में
गुरूकृपा से मनमंदिर में उसकी झलके तो आने लगी है
जब से आए शरण में गुरू की आतममस्ती सी छाने लगी है
गीता रामायण यू तो पढ़ी थी लेकिन जीवन में उतरी नहीं थी
जब से सुन ली गुरूजी की वाणी वो प्रसादी भी आने लगी है
जब से आए शरण में गुरू की आतममस्ती सी छाने लगी है
गुरूभक्तों को मिलता सहारा गुरूकृपा से मिलता वो प्यारा
दास मनोज पे गुरू कृपा कर दो अपने भक्तों पे गुरूकृपा कर दो
अब तो याद सताने लगी है
जब से आए शरण में गुरू की आतममस्ती सी छाने लगी है
जय गुरूदेवा जय सदगुरूदेवा निज चरणों की दे दो सेवा
अपने चरणों की दे दो सेवा
अपना बना लो मुझे ओ गुरूदेवा, प्यारे मिला दे मुझे ओ गुरूदेवा



हर एक कर्म में दुःख के बीज समाविष्ट हैं किंतु गुरू की सेवा के विषय में ऐसा नहीं है।

हरे राम हरे राम
राम राम हरे हरे

|| ॐ गुरू ||

भजन - जय हो गुरूजी के ज्ञान की

जय हो गुरूजी के ज्ञान की
जय हो सदगुरू भगवान की
सेवा से बढ़कर ना साधना है कोई
ये कुंजीं है भजन और ज्ञान की
जय हो सदगुरू भगवान की
अब तो उठो जागो कब तक है सोना
कुछ सोचो अपने कल्याण की
जय हो सदगुरू भगवान की
अनमोल जींवन है यू ही ना खोना
इच्छा ना कर झुठी शान की
जय हो सदगुरू भगवान की
देवो से मांगो ना नश्वर की दौलत
सदगुरू से मांगो ना नश्वर की दौलत
लो दीक्षा सदगुरू से राम की
जय हो सदगुरू भगवान की
भोगों कों मांगने से भक्ति ना होगीं
सूक्ष्म गति कर ले तू प्राण की
जय हो सदगुरू भगवान की
बापू हमारे जगाने को आए
सदगुरू हमारे जगाने को आए
ध्वजा लेके हरिं ओम नाम की
जय हो सदगुरू भगवान की
हरिं ओम गुंजन से चित्त को चैतन्य करो
माला जपो राम नाम की
जय हो सदगुरू भगवान की



अंहकार ऐसा है कि इसे चाहिए, चाहिए और चाहिए ... कभी इसका पेट भरता नहीं और प्रेम ऐसा है कि कुछ भी नहीं होते हुए भी दिये बिना रहा जाता नहीं।

|| ॐ गुरू ||

भजन - जानेवाले एक संदेशा

ॐ प्रभुजी ॐ
ॐ प्रभुजी ॐ
ॐ प्रभुजी ॐ
ॐ प्रभुजी ॐ
ॐ प्रभुजी ॐ

जानेवाला एक संदेशा गुरूवर से तुम कह देना
भक्त तुम्हारा याद में रोए उसको दर्शन दे देना
जिसको गुरूवर दर पे बुलाते किस्मत वाले होते है
जो उनसे कभी मिल नहीं पाते छुप छुप करके रोते है
जितनी परीक्षा ली है मेरी और किसी की ना लेना
भक्त तुम्हारा याद में रोए उसको दर्शन दे देना
तूने कौन सा पूण्य किया है दर पे तुझे बुलाया है
मैंने कौन सा पाप किया है दिल से मुझे भुलाया है
एक बार मुझे दर पे बुला दे इतनी कृपा करके कह देना
भक्त तुम्हारा याद में रोए उसको दर्शन दे देना
मुझको ये विश्वास है दिल में मेरा बुलावा आएगा
सदगुरू मुझको दर्शन देकर अपने गले लगाएगा
उनसे जाकर इतना कहना मेरा भरोसा टूटेना
भक्त तुम्हारा याद में रोए उसको दर्शन दे देना
कहना उनसे मन मंदिर में मैंने उन्हें बिठाया है
गुरूरूप में पार ब्रह्म को अब तो मैंने पाया है
आशा केवल एक यही है मुक्ति मार्ग दिखला देना
भक्त तुम्हारा याद में रोए उसको दर्शन दे देना

ॐ प्रभुजी ॐ
ॐ प्रभुजी ॐ
ॐ प्रभुजी ॐ
ॐ प्रभुजी ॐ
ॐ प्रभुजी ॐ



भूतकाल पर खिन्न हुए बिना भविष्य की चिंता किये बिना वर्तमान में कार्य करो। यह भाव आपको हर अवस्था में प्रसन्न रखेगा। हमें जो कुछ प्राप्त है उसका सदुपयोग ही अधिक प्रकाश पाने का साधन होगा।

।। ॐ गुरू।।

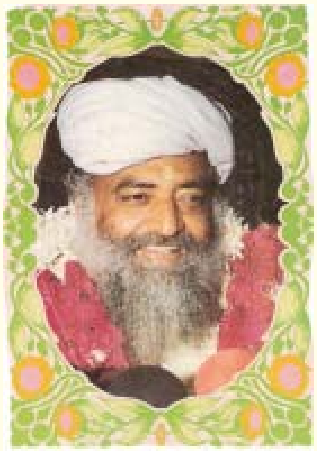
भजन - जीवन का भरोसा नहीं

राम हरि राम हरि राम हरि राम हरि

जीवन का भरोसा नहीं कब मौत आ जाएगी
काया और माया तेरी तेरे साथ न जाएगी
काया पे तु गुमान न कर ये तो माटी का खिलौना है
जहा तेरा होना नहीं लिखा भाग्य का होना है
काया और माया तेरी तेरे साथ न जाएगी
जीवन का भरोसा नहीं कब मौत आ जाएगी
दौलत पे तू गुमान न कर ये तो हाथ का मैला है
राजा है तो रंक कोई सब किस्मत का खेला है
दुखी है माया नगरी सब पल में पलट जाएगी
काया और माया तेरी तेरे साथ न जाएगी
जीवन का भरोसा नहीं कब मौत आ जाएगी
दो दिन का मेला है सब माया का खेला है
जाए नहीं साथ कोई तुझे जाना अकेला है
पलक झपकते ही दुनिया तुझे ठुकराएगी
काया और माया तेरी तेरे साथ न जाएगी
जीवन का भरोसा नहीं कब मौत आ जाएगी
रिश्तो मे भरोसा न कर दुनिया से तु आशा न कर
तैरना है तो भवसागर गुरूजी का तू सुमिरन कर
भक्ति की शक्ति से जीवन नईया फिर जाएगी
काया और माया तेरी तेरे साथ न जाएगी
जीवन का भरोसा नहीं कब मौत आ जाएगी

राम हरि राम हरि राम हरि राम हरि

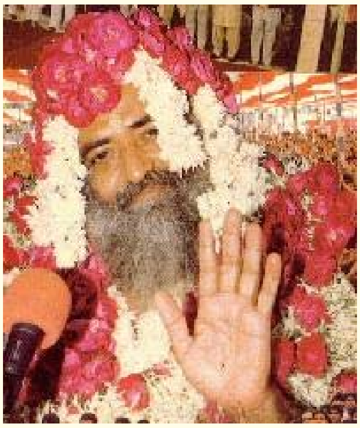
अपने गुरू के प्रति अदा की हुई सेवा नैतिक फर्ज है, आध्यात्मिक टॉनिक है। उससे मन एवं हृदय दैवी गुणों से भरपूर बनते है, पुष्ट बनते है।



।। ॐ गुरू।।

भजन - जिसने हरि का नाम लिया

जिसने हरि का नाम लिया वो तर गया भव से पार
भजले नारायण का नाम, तू भजले नारायण का नाम
नारायण, नारायण भज तू, नारायण आधार
नर नर में नारायण बसते, वो हीं तारणहार
भजले नारायण का नाम, तू भजले नारायण का नाम
नारायण का रूप गुरू है, सदगुरू दींनदयाल
करते सबको आप समाना, सदगुरू तारणहार
भजले नारायण का नाम, तू भजले नारायण का नाम
नारायण नारायण जपते, नारद वींणाहार
नारायण कहते कहलाते, देते भक्ति अपार
भजले नारायण का नाम, तू भजले नारायण का नाम
नारायण जिस जिसने गाया, पहुंचा हरि के धाम
नारायण बिन मुक्ति नहीं है, गाते वेद पुराण
भजले नारायण का नाम, तू भजले नारायण का नाम
नारायण की कृपा से हीं जन्म्यों भक्त प्रहलाद
दानव घर भक्ति का दर्शन, प्रकटे श्री भगवान
भजले नारायण का नाम, तू भजले नारायण का नाम
नारायण जप पाप को काटे, पूण्य बड़े है अपार
तनमन से नारायण भजले, सेवा कर निष्काम
भजले नारायण का नाम, तू भजले नारायण का नाम



अपना गुरूमंत्र अथवा गुरू का पवित्र नाम हररोज एक घंटे तक स्वच्छ नोटबुक में लिखो।

|| ॐ गुरू ||

भजन - जो शरण गुरू की आया

सुख का साथी जगत सब दुख का ना हीं कोय
दुख का साथी सांईया दाधु सदगुरू होय
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
जो शरण गुरू की आया इहलोक सुखी परलोक सुखी
जिसने गुरू ज्ञान पचाया इहलोक सुखी परलोक सुखी
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
रामायण में शिवजी कहते, भागवद् में सुखदेवजी कहते
गुरूवाणी में नानकजी कहते जपो संत संग्राम
इहलोक सुखी परलोक सुखी
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
चिंता और भय सब मिट जाए, दुर्गुण दोष सभी छुट जाए
चमके भाग्य सितारा इहलोक सुखी परलोक सुखी
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
सांसो में हो नाम का सुमिरन, मन में हो गुरूदेव का चिंतन
जिसने ये अपनाया इहलोक सुखी परलोक सुखी
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
ब्रह्मज्ञानी साकार ब्रह्म है इनका ना कोई बंधन है
सबको करे महान इहलोक सुखी परलोक सुखी
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
कृपा तुम्हारी पा जाएंगे जो सत्संग में आ जाऐंगे
हो जाए भव जलपान इहलोक सुखी परलोक सुखी
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
जो संतो की निंदा करते अपना हीं वो वंश मिटाते
जो संत शरण में आते इहलोक सुखी परलोक सुखी
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम



गुरू के पावनकारी चरणों की पवित्र धूलि शिष्य के लिए सचमुच वरदान स्वरूप है।

|| ॐ गुरू ||

भजन - जोड़ के हाथ झुका के मस्तक



हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्णा हरे कृष्णा कृष्णा कृष्णा कृष्णा हरे हरे
जोड़ के हाथ झुका के मस्तक मांगे ये वरदान प्रभु
द्वेष मिटाये प्रेम बढ़ाये नेक बने इंसान प्रभु
भेदभाव सब मिटे हमारा सबको मन से प्यार करे
जाये नजर जिस ओर हमारी तेरा ही दीदार करे
पल पल क्षण क्षण करे हमेशा तेरा ही गुणगान प्रभु
जोड़ के हाथ झुका के मस्तक मांगे ये वरदान प्रभु
दुख में कभी दुखी ना होवे सुख में सुख की चाह न हो
जीवन के इस कठीन सफर में कांटो की परवाह न हो
रोक सके ना पाव हमारे विघ्नों के तुफान प्रभु
जोड़ के हाथ झुका के मस्तक मांगे ये वरदान प्रभु
दीनदुखी और रोगी सबके दुखड़े निशदिन दूर करे
पोंछ के आसू रोते नैना हंसने पर मजबूर करे
गुरूचरणों की सेवा करते निकले तन से प्राण प्रभु
जोड़ के हाथ झुका के मस्तक मांगे ये वरदान प्रभु
गुरू ज्ञान से इस दुनिया का दूर अंधेरा कर दे हम
सत्य प्रेम के मीठे रस से सबका जीवन भर दे हम
वीर धीर बन जींना सीखे ये तेरी संतान प्रभु
जोड़ के हाथ झुका के मस्तक मांगे ये वरदान प्रभु

जो अपने गुरू की आरोग्यता के लिए लगा रहता है, वह मनुष्य धन्य है।

गुरू के पवित्र चरणों के प्रति भक्तिभाव सर्वोत्तम गुण है। इस गुण को तत्परता एवं परिश्रमपूर्वक विकसित किया जाय तो इस संसार के दुःख और अज्ञान के कीचड़ से मुक्त होकर शिष्य अखूट आनंद और परम सुख के स्वर्ग को प्राप्त करता है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - किरपा बनाये रखना

किरपा बनाये रखना गुरूवर सिर पे हाथ रखना
यादो में तेरी गुरूवर, गुजरे ये जिवन सारा
श्रद्धा बनाये रखना हर पल रहे सुमिरन
किरपा बनाये रखना गुरूवर सिर पे हाथ रखना
तुम हीं हमको गुरूवर, प्राणो से भीं प्यारे
चरणों में अपने रखना, तुम हीं हो प्रतींपालक
अपना बनाये रखना
किरपा बनाये रखना गुरूवर सिर पे हाथ रखना
तुम से ना दूर जाये तुमको हीं हरपल ध्याये
नजर में अपनीं रखना हम है शरण तुम्हारीं
प्रेमीं बनाये रखना
किरपा बनाये रखना गुरूवर सिर पे हाथ रखना
तुमहीं हो जींवन के ज्योंतिं मुक्तीं तुम्हीं से है होनीं
रहमत बनाये रखना छुटे न साथ तुम्हारा
बंधन बनाये रखना
किरपा बनाये रखना गुरूवर सिर पे हाथ रखना
सबकीं श्रद्धा कीं डोरीं तेरे प्रभु है हवाले
नाता बनाये रखना सांसो कीं फेरे माला
भक्तीं जगाये रखना
किरपा बनाये रखना गुरूवर सिर पे हाथ रखना



कही तेरी भक्ति का सहारा न छुट जाए।
कही तेरी करूणा का सागर न छुट जाए।
ऐसी कृपा गुरूवर तुम मुझ पर करना कि तेरी
ही भक्ति और सेवा में यह तन छुट जाए।

।। ॐ गुरू।।

भजन - कोई जानेगा जानन हारा

कोई जानेगा जानन हारा साधो गुरू बिन जग अंधियारा
हो साधो गुरू बिन जग अंधियारा
महिमा उनकी कैसे गाए वाणी रूक रूक जाए
सन्मुख उनके आए कैसे मस्तक झुक झुक जाए
वो तो पावन ज्योति लाए
चरण धरे वो जिस धरती पर वो तीरथ बन जाए
क्षणभर देखे जिसको बापु चित्तशक्ति जग जाए
वो तो अमृत रस भर आए
अंतर के सब भरम मिटाए सांचा ज्ञान सुनाये
जीव हीं ईश एक रूप बताकर परम ब्रह्म दर्शाए
वो तो नित्यानंद छलकाए
अमर उजाला बिखराएगी बापू की ये वाणी
सोया सोया कण जाग उठेगा जागेगा हर प्राणी
वा अब तो जागेगा हर प्राणी
भवबंधन में जकड़े प्राणी जग की ठोकर खाए
लख चौरासी योनी भुगते गुरू शरण नहीं आए
सदगुरू मुक्ति दिलाए
जीवपने का भरम मिटाकर आत्मज्ञान बताए
जन्म मरण से न्यारा है तू तत्वमति समझाए
वो तो मति पलटाने आए



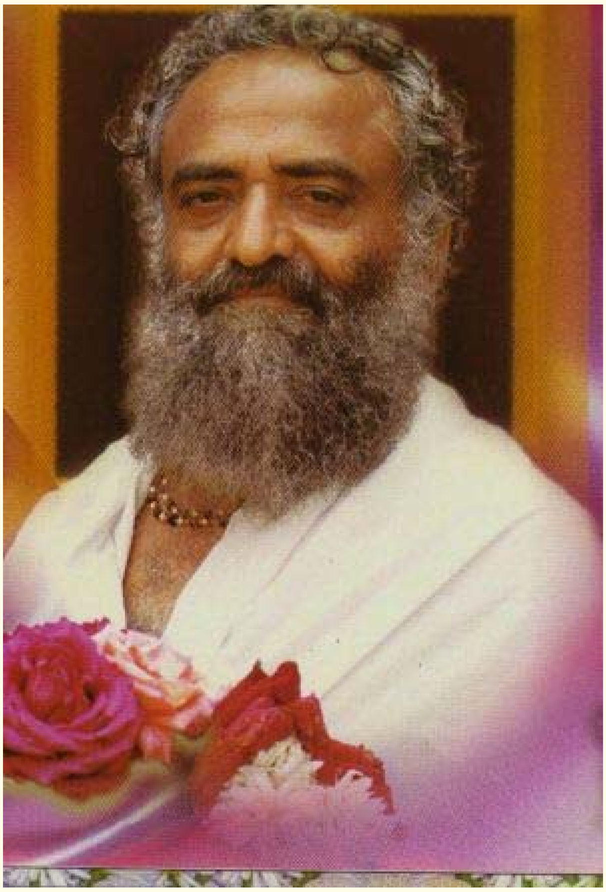
हररोज गुरू की सेवा का प्रारंभ करने से पहले शिष्य को मन में निश्चय करना चाहिए कि पूर्व की अपेक्षा अब अधिक भक्तिभाव से एवं अधिक आज्ञाकारिता से गुरू की सेवा करूंगा।

।। ॐ गुरू।।

भजन - कोई नहीं दुनिया में

कोई नहीं दुनिया में गुरू सम महादानी
जो प्यार भी करते है और पार भी करते है
कोई नहीं दुनिया में.................
श्रद्धा गुरूचरणों की भवपार हमें करती
दृढ़ शरणागति गुरू की भवपार हमें करती,
भवपार हमें करती
कोई नहीं दुनिया में.................
गुरूवाणी श्रवण करने सब साधक खुब तरसे
मुख मीठी मधुर गंगा सत्शिष्य का शुभ कर दे
सत्शिष्य का शुभ कर दे
कोई नहीं दुनिया में.................

सच्चा आराम दैवी गुरू की सेवा में ही निहित है। ऐसा दूसरा, कोई सच्चा आराम नहीं है।

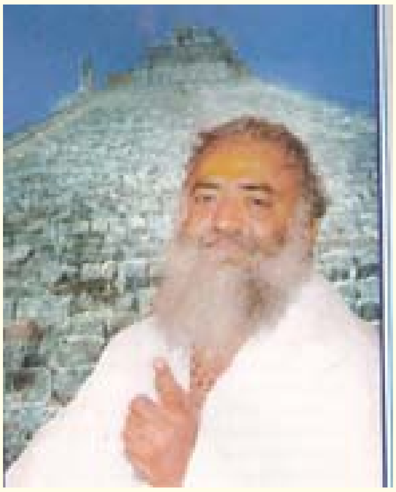


पूज्य आचार्य की सेवा जैसी हितकारी और आत्मोन्नति करनेवाली और कोई सेवा नहीं है।

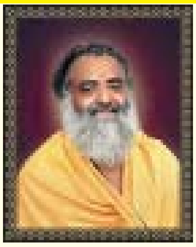
॥ ॐ गुरू॥

भजन - क्या भरोसा है इस जिंदगी का

दो बातन को भूल मत जो चाहे कल्याण
नारायण एक मौत दूजो श्री भगवान है
क्या भरोसा है इस जिंदगी का
साथ देती नहीं ये किसी का
सास रूक जाएगी चलते चलते
शम्मा बुझ जाएगी जलते जलते
क्या भरोसा है इस जिंदगी का
चार दिन की मिली जिंदगानी हमें
चार दिन में ही करनी मुलाकात है
राख बनकर के इक दिन को उड़ जाऐगे
उससे पहले प्रभु से मिलना तो है
क्या भरोसा है इस जिंदगी का
कोई तेरा नहीं है सब है धोखा यहॉ
काहे जीवन को यू ही गंवाता है तू
राम को भूल बैठ है तू जिनके लिए
चार दिन में तुझकों भुला देगें वो
क्या भरोसा है इस जिंदगी का
लेके कंधे पर तुझकों चले जाऐगे
तेरे अपने ही तुझको जला आऐगे
चार दिन के मुसाफिर तू सो क्यों रहा
अब तो करले मोहब्बत मेरे राम से
क्या भरोसा है इस जिंदगी का
तुलसी मीरा के जैसे तो हम है नहीं
सबरी की जैसी भक्ति भी हममें नहीं
फिर भी तेरे ही बालक है हम राम जी
हमको अपनी शरण में ले लो रामजी
क्या भरोसा है इस जिंदगी का



यह संसार कागज की पुड़िया है, बूंद पड़े गल जाना है। कहत कबीर सुनो भाई साधो, सद्गुरू नाम ठिकाना है।

|| ॐ  गुरू ||

जीवन का ध्येय गुरू की सेवा करने का बनाना चाहिए।

गुरू के चरणकमल जैसा और कोई आश्रय नहीं है।

भजन - लगन तुमसे लगा बैठे

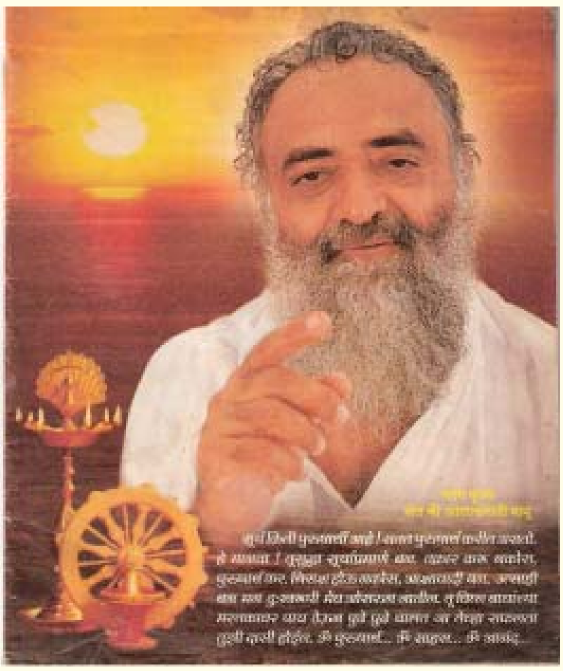
लगन तुमसे लगा बैठे, जो होगा देखा जाएगा।
तुम्हें अपना बना बैठे, जो होगा देखा जाएगा।
लगन तुमसे लगा बैठे ....
तुम बिन न कोई मेरा है, मेरा तो सब प्रभु तेरा है।
दाता तुम ज्ञान के विधाता हो, भक्ति और मुक्ति के दाता हो।
तुम्हें दिल में बसा बैठे, जो होगा देखा जाएगा
लगन तुमसे लगा बैठे ....
मीरा भी प्रेम की दिवानी थीं, एक गुरू दरस की प्यासी थीं।
सद्गुरू महिमा वो खूब गातीं थीं, चरणों में प्रीतीं बढ़ाई थीं।
गुरू में श्रद्धा बढ़ा बैठे, जो होगा देखा जाएगा
लगन तुमसे लगा बैठे ....
मेरी दुनिया में तुम आए हो, खुशिया ही खुशिया भर लाए हो।
प्रीतीं की रींतीं सिखाए हो, स्वयं हरि गुरू बनके आए हो।
धुलि माथे पे रमा बैठे, जो होगा देखा जाएगा
लगन तुमसे लगा बैठे ....
तेरा सब गुरू नाम सांचा है, बाकी जगत झूठी माया है।
माया के फंद से छुड़ाया है, दुर्गुण के पद से हटाया है।
तुम्हे दिल में सजा बैठे है, जो होगा देखा जाएगा
लगन तुमसे लगा बैठे ....
सत्संग अमृत बरसाया जो, आया गुरूद्वार वो नहाया है।
तनमन से प्राणों को छुड़वाया है जो आया उसे हरसाया है।
तुम्ही रब हो समझ बैठे, जो होगा देखा जाएगा
लगन तुमसे लगा बैठे ....

|| ॐ गुरू ||

भजन - लागो रे लागो रे मेला

x/ : n/o gekj/
I kFk g/
;g nfu;k
dk fn[kk
nxA
ekr dk Hkh
thu dk
u;k vnkt
crk nxA

लागो रे लागो रे मेला बापूजी के द्वार पे
कोई गंगा पार से आया कोई नर्मदा पार रे
लागो रे लागो रे मेला बापूजी के द्वार पे
सत्संग की बापू महिमा बतावे
ज्ञान की ज्योत जगावे
बापूजी के इस संगत से तरे है शिष्य हजार रे
लागो रे लागो रे मेला बापूजी के द्वार पे
ओम हरि ओम ओम हरि ओम
भक्ति के रंग में सबको रंगावे
हरि का प्याला पिलावे
हरिनाम भक्ति में सबको मिलती शांति अपार रे
लागो रे लागो रे मेला बापूजी के द्वार पे
ओम हरि ओम ओम हरि ओम
महंगीबा के प्राणो से प्यारे थाउमल के दुलारे
लीलाशाह जी के सबसे प्यारे सबकी आखो के तारे
लागो रे लागो रे मेला बापूजी के द्वार पे
ओम हरि ओम ओम हरि ओम



जीवन से कभी निराश न होना। निराशा के विचार ही न करना। दूसरो को उत्साह दिलाना। किसी की हिम्मत न तोड़ना, उसे निराश न करना। किसी को बार बार दोषी बताकर उस दोष को उसके पल्ले न बांधना।

।। ॐ गुरू।।

भजन - लाखो दरबार दुनिया में

लाखों दरबार दुनिया में यु तो।
तेरे दर सा कोई दर नहीं है।
जो भी दर पे है तेरे आया।
डुबने का उसे डर नहीं है।
लाखो दरबार दुनिया में...........
तुमने तोड़ा है माया का घेरा।
मेरे जीवन में किया संवेरा।
तुमने हर लिया हर दुख मेरा
और सहारा कोई तुमसा नहीं है।
लाखो दरबार दुनिया में.........
मेरी दुनिया तेरे बिन अधूरी।
तू ही करता है हर कमी पूरी।
खत्म कर दे अब दाता ये दूरी
तू नहीं है तो कुछ भी नहीं है।
लाखो दरबार दुनिया में...........
तुमने ज्ञान की ज्योति जलाई।
हर बुराई है मन से भगाई।
तेरे दर्शन से मिलती जो शांति
वो कही और पायी नहीं है।
लाखो दरबार दुनिया में...........
तुमने कितनों को भव से है तारा।
सदा हित ही किया है हमारा।
मेरी अटकी इस नैया का बापू
कोई तुमसा किनारा नही है।
तेरे दर्शन से चैन है मिलता।
तेरी कृपा से जीवन है खिलता।
तेरी मर्जी मिली तो जहां में
एक पत्ता भी हिलता नहीं है।
लाखो दरबार दुनिया में...........



हे तकदीर! अगर तू मुझसे धोखा करना चाहती है, मुझसे छीनना चाहती है तो मेरे दो जोड़ी कपड़े छीन लेना, दो साधन छीन लेना, गाड़ियाँ-मोटरें छीन लेना लेकिन मेरे दिल से भगवान के, गुरु के दो शब्द मत छीनना। गुरु के लिए, भगवान के लिए, साधना के लिए, जो मेरी दो वृत्तियां है: साधन और साध्य, ये मत छीनना ...

।। ॐ गुरू।।

.2.



शरीर या चमड़ी का प्रेम वासना कहलाती है, जबकि गुरू के प्रति प्रेम भक्ति कहलाता है। ऐसा प्रेम, प्रेम के खातिर होता है।

स्वयं की अपेक्षा गुरू के प्रति अधिक प्रेम रखो।

तेरा नाम है सबसे पावन।
तेरी मूरत है अति मन भावन।
तुमकों मैं अपने दिल में बसा लू
दूसरा कोई अपना नहीं है।
लाखो दरबार दुनिया में...........
सच्चा तू ही मालिक करतार है।
सारे जग का तू पालनहार है।
हम सब का तू तारणहार है।
तेरे बारे में अब क्या कहूं मै
तेरी लीला का वर्णन नहीं है।
लाखो दरबार दुनिया में...........
तुमसे रोशन है ये जिंदगानी
सारी दुनिया है तेरी दिवानी
तेरी महिमा है जग से निराली,
मेरी बुद्धि वहाँ तक पहुंचे नहीं है।
लाखो दरबार दुनिया में...........
सबसे बढ़कर है तेरी पूजा।
तेरे जैसा नहीं कोई दूजा
तुम तो करते हो रहमत ऐसी
जो भुलाने के काबिल नहीं है।
लाखो दरबार दुनिया में...........
तुमने दी है हमको अनमोल काया।
कैसी पावन है तेरी माया।
तेरे दर पे जो मैनें है पाया।
वो बताने के काबिल नहीं है।
कोई तुमसा किनारा नहीं है।
लाखो दरबार दुनिया में...........

|| ॐ गुरू ||

भजन - लिखने वाले तु होकर

लिखने वाले तु हो के दयाल लिख दे
मेरे हदय अंदर सदगुरू का प्यार लिख दे
माथे पे लिख दे ज्योति गुरां की
नयनों में उनका दीदार लिख दे
मेरे हदय अंदर सदगुरू का प्यार लिख दे
जिह्वा पे लिख दे नाम गुरू का
कानों में शब्द झंकार लिख दे
मेरे हदय अंदर सदगुरू का प्यार लिख दे
हाथों पे लिख दे सेवा गुरू की
तनमनधन उनपे वार लिख दे
मेरे हदय अंदर सदगुरू का प्यार लिख दे
पैरों पे लिख दे जाना गुरू के द्वार
सारा ही जीवन उनके साथ लिख दे
मेरे हदय अंदर सदगुरू का प्यार लिख दे
इक मत लिखना गुरू का बिछड़ना
चाहे तु सारा संसार लिख दे
मेरे हदय अंदर सदगुरू का प्यार लिख दे



बरसात आए और छत गीली न हो यह हो नहीं सकता
बापू की याद आए और आंखे गीली न हो यह हो नहीं सकता

।। ॐ गुरू।।

भजन - मैं राम का दीवाना हो गया

संगी साथी सब गए निभयों ना कोई साथ
कहे नानक इह विपत में एक टेक रघुनाथ
दुनिया को देखा दुनियावालों को देखा
रिश्तों को देखा मैने नातो को देखा
जब से झूठा लगा यहां का मेला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया
हो जब से झूठा लगा यहा का मेला
चार दिनों का जीवन है ये चार दिनों का मेला
भीड़ खड़ी है इतनी लेकिन जाना पड़ेगा अकेला
हो जब से जाना ये राज निराला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया
जब से झूठा लगा यहां का मेला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया
राख बनकर के इक दिन तो उड़ जाऐंगे
उससे पहले गुरूवर से मिलना तो है
हो जब से जाना ये राज निराला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया
जब से झूठा लगा यहां का मेला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया
कोई तेरा नहीं सब है धोखा यहा
काहे जीवन को यू ही सताता है तू
राम को भूल बैठा है तू जिनके लिए
चार दिन में हीं तुझको भूला देगे वो
हो जब से जाना ये राज निराला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया
जब से झूठा लगा यहां का मेला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया



अपने आपको आचार्य की सेवा में सौंप दो। तन, मन एवं आत्मा को खूब तत्परता से अर्पण कर दो।

।। ॐ गुरू।।

भजन - मैं राम का दीवाना हो गया



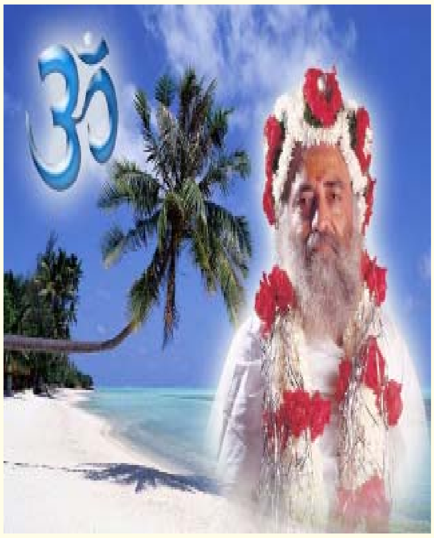
लेके कंधे पे तुझको चले जाऐंगे
तेरे अपने हीं तुझको जला आऐंगे
चार दिन के मुसाफिर तू सो क्यों रहा
अब तो कर ले मोहब्बत मेरे राम से
हो जब से जाना ये राज निराला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया
जब से झूठा लगा यहां का मेला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया
पेट भरना हीं जीवन का मकसद नहीं
नरतन तुझको मिला है पशुतन तो नहीं
जीवन खुद के लिए है वो जीवन नहीं
अपना तनमन लुटा दे गुरूसेवा में तू
हो जब से जाना ये राज निराला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया
जब से झूठा लगा यहां का मेला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया
रिश्ते देखे नाते देखे देखीं यारों कीं यारीं
जब तक मतलब होगा तुझसे पूछेंगे संसारीं
हो देखा स्वार्थ का हीं बोलबाला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया
जब से झूठा लगा यहां का मेला
मैं राम का दीवाना हो गया, मैं गुरू का दीवाना हो गया

गुरू सेवा के नित्य क्रम में खूब नियमित रहो।

सदगुरू देव की जय।

।। ॐ गुरू।।

भजन - मैं तो जपू सदा तेरा नाम



मैं तो जपू सदा तेरा नाम सदगुरू दया करों
दया करो कृपा करो, कृपा करो रहम करो
मैं तो जपू सदा तेरा नाम सदगुरू दया करों
द्वार पे आया भक्त तुम्हारे, अपनीं दया के खोलो द्वारे
पूरण हो सब काम, सदगुरू दया करो
दया करो कृपा करो, कृपा करो रहम करो
मैं तो जपू सदा तेरा नाम सदगुरू दया करों
भजन कीर्तन गांउ तेरा, निशदिन पाउ दर्शन तेरा
कृष्ण कृष्ण मेरे राम सदगुरू कृपा करो
दया करो कृपा करो, कृपा करो रहम करो
मैं तो जपू सदा तेरा नाम सदगुरू दया करों
जह तह देखु सूरत तेरीं, मन में बस गयीं मूरत तेरीं
शरण में ले लो मेरे राम सदगुरू दया करो
दया करो कृपा करो, कृपा करो रहम करो
मैं तो जपू सदा तेरा नाम सदगुरू दया करों
साधु संत की संगत देना, अपने नाम कीं रंगत देना
मुझे अपने बना मेरे राम सदगुरू दया करो
दया करो कृपा करो, कृपा करो रहम करो
मैं तो जपू सदा तेरा नाम सदगुरू दया करों
मन मंदिर में ज्योत जगा दो, मुझे अपना तुम रूप दिखा दो
पहुंचा दो निजधाम सदगुरू दया करो
दया करो कृपा करो, कृपा करो रहम करो
मैं तो जपू सदा तेरा नाम सदगुरू दया करों

अपने गुरू की सेवा करके प्राप्त किये हुए व्यवहार ज्ञान की अभिव्यक्ति है आचरण।

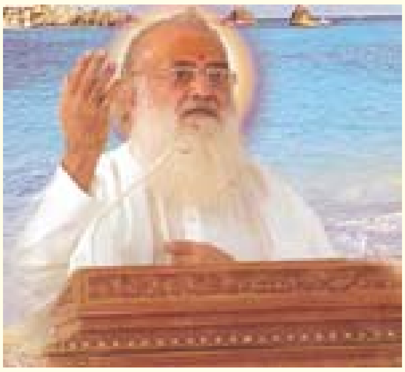
सदगुरू देव की जय।

।। ॐ गुरू।।

भजन - हरि ओम हरि ओम गा ले

ॐ गुरू ॐ गुरू ॐ गुरू ॐ गुरू ॐ गुरू ॐ गुरू ॐ गुरू ॐ गुरू ॐ गुरू

हरि ओम हरि ओम गा ले
नाम जपने की आदत बना ले
मन हरि ओम हरि ओम गा ले
नाम जपने की आदत बना ले
पूण्य तेरा बढ़े जब सत्संग मिले
राम रहमत करे तब सदगुरू मिले
इस रींतीं से रब को रिंझा ले
नाम जपने की आदत बना ले
तन जिसने दिया उसका मालिक वहीं
तू मुपत में रहे नाम जपता नहीं
कुछ किराया ही इसका चुका ले
नाम जपने की आदत बना ले
कौन धड़कन ये दिल की चलाए रे मन
कौन नाड़ी में रक्त बनाए रे मन
उस दाता का शुक्र मना ले
नाम जपने की आदत बना ले
जग रींझाने में जींवन गंवाना नहीं,
एक पल भीं प्रभु को भुलाना नहीं
श्रीं सदगुरू को तु ही रिंझाले
नाम जपने की आदत बना ले
धन अनीति का सुख तुझको देगा नहीं
चोट कुदरत की तू सह सकेगा नहीं
अब भीं मौका है खुद को बचा ले
नाम जपने की आदत बना ले
प्रेम करने से मंजिल को पा जाएगा
ध्यान करने से प्यारा नजर आएगा
तू घड़ी भर ही गोता लगा ले
नाम जपने की आदत बना ले



आप अपनी शक्ति को उच्चातिउच्च विषयों की ओर बहने दो। इससे आपके पास वे बातें सोचने का समय ही नही मिलेगा जिससे कामुकता की गंध आती हो।

।। ॐ गुरू।।

भजन - मन कर पूजा कर पूजा

मन कर पूजा कर पूजा
गुरू चरणनन की, गुरू वचनन की
मन कर पूजा कर पूजा
हरि ओम हरि ओम
गुरू चरणनन में ऐसा क्या
वैकुंठ द्वार यहीं खुलता है
ये व्रजभूमि वृंदावन की
मन कर पूजा कर पूजा
गुरू हीं ब्रह्म बना सकते है
घट में ज्योत जगा सकते है
परमेश्वर नारायणजी की
मन कर पूजा कर पूजा
गुरू बिन भवनिधि तरही न कोई
चाहे ब्रह्मा शंकर होई
ये वाणी शिवशंकरजी की
मन कर पूजा कर पूजा
कैसे पूजा करे गुरू चरणनन की
अपना लो बस गुरू वचनन को
गुरूवाणी गुरू गोविंद जी की
मन कर पूजा कर पूजा
गुरू चरणनन की गुरू वचनन की
मन कर पूजा कर पूजा



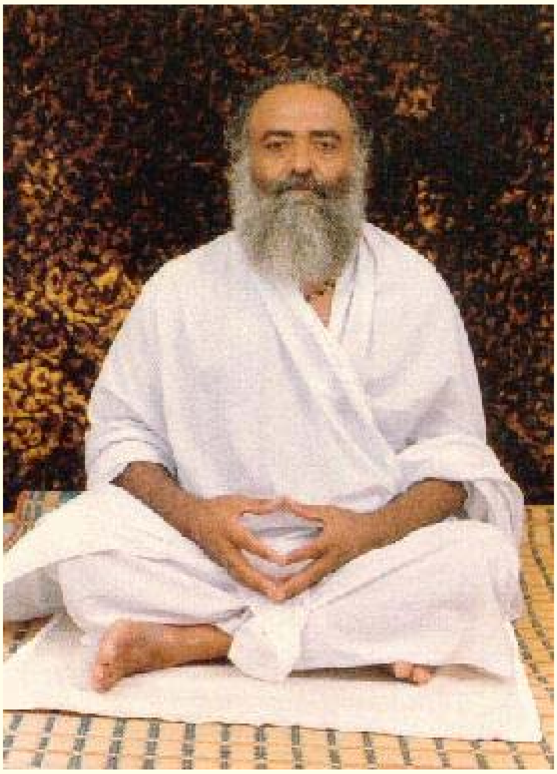
**हरि हर आदिक जगत
में पूज्य देव जो कोय।
सद्गुरू की पूजा किए
सबकी पूजा होय।।**

।। ॐ गुरू।।

भजन - मानव की सफलता है

मानव की सफलता है प्रभु प्रेम के पाने में
ये प्रेम सुलभ होता सत्संग में जाने में
ये तन तो साधनो का है धाम मिला सबको
अब देर ना हो साधन को शुद्ध बनाने में
मानव की सफलता है प्रभु प्रेम के पाने में
साधन को साध रहने में सिद्धि मिला करतीं
साधन ना साध पाना हीं हेतु गिराने में
मानव की सफलता है प्रभु प्रेम के पाने में
भगवान के मिलने में दूरीं है ना देरीं है
तेरीं है मोह ममता अभिमान मिटाने में
मानव की सफलता है प्रभु प्रेम के पाने में

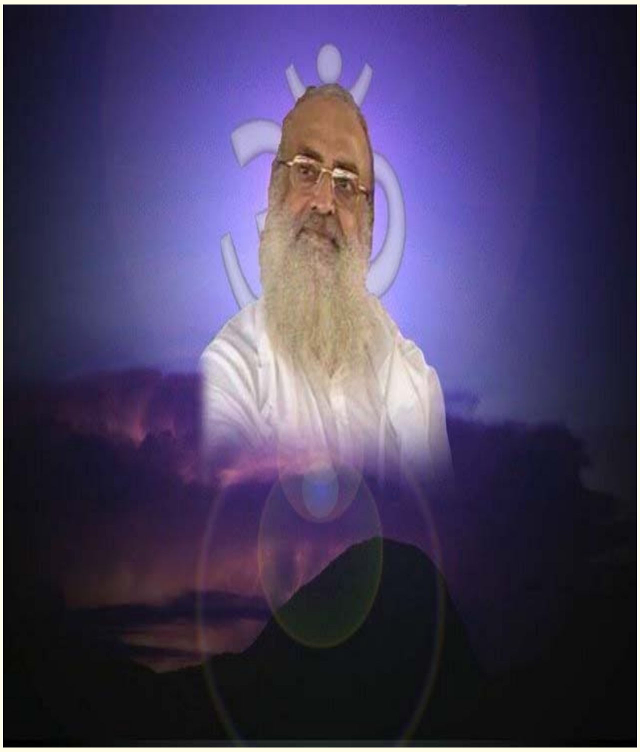
अपने–आपको आचार्य की सेवा में सौंप दो। तन, मन एवं आत्मा को खूब तत्परता से अर्पण कर दो।



जो शिष्य अपने गुरू की आज्ञा मानता है वहीं अपनी स्थूल प्रकृति पर नियंत्रण पा सकता है।

।। ॐ गुरू ।।

भजन - मनमुख तो बनकर देख लिया



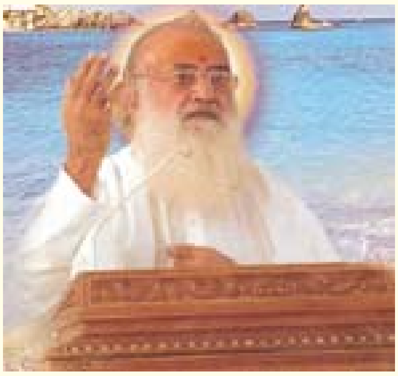
मनमुख तो बनकर देख लिया
अब गुरूमुख होकर देख जरा
दिवाना हुआ क्यों माया में
क्यों अटक गया इस काया में
दुनिया में रहकर देख लिया
अंर्तमुख होकर देख जरा
गुरूनाम हीं सबसे प्यारा है
बाकीं जग नश्वर सारा है
अभिमानी बनकर देख लिया
अब ध्यानीं बनकर देख जरा
दुनिया के झंझट दुखदायी
गुरूमंत्र हीं है बस सुखदायी
तुने भोगी बनकर देख लिया
अब योगी बनकर देख जरा
तेरा तनधन तो एक झटके में
ये मौत बहा ले जाएगीं
तूने नश्वर पाकर देख लिया
अब शाश्वत पाकर देख जरा
गुरूनाम को भज अभिमान को तज
ये समय नहीं है सोने का
मिथ्या में जिकर देख लिया
गुरूज्ञान में टिक कर देख जरा
मनमुख तो बनकर देख लिया
अब गुरूमुख होकर देख जरा

मन की जानै सब गुरू
कहां छिपावे अंध।
सदगुरू सेवा कीजिए
सब कट जावे फंद।।

।। ॐ गुरू।।

भजन - मत कर तू अभिमान

मत कर तू अभिमान जगत में कुछ दिन के मेहमान
भजलो श्रीं भगवान जगत में कुछ दिन के मेहमान
ओम हरि ओम ओम हरि ओम
रहे ना रावण सम अभिमानीं
हिरण्याकश्यप सम वरदानीं
क्षण में छुटे प्राण जगत में कुछ दिन के मेहमान
आये अर्जुन सम धनुधारीं
धर्मराज सम धर्माचारीं
दानीं कर्ण समान जगत में कुछ दिन के मेहमान
कहा विक्रमादित्य यहा है
कालींदास और भोज कहा है
वह कारूण लुकमान जगत में कुछ दिन के मेहमान
सुनीं सिंकदर दार कीं गतीं
सुनीं बिरबल कीं सुंदर मतीं
अकबर से सुल्तान जगत में कुछ दिन के मेहमान
दुखीं जनों का दुख न रहेगा
सुखीं जनों का सुख न रहेगा
सत् है आतम ज्ञान, जगत में कुछ दिन के मेहमान
जगदिश्वर का नाम रहेगा
वहीं परम सुख धाम रहेगा
नींज में लो पहचान जगत में कुछ दिन के मेहमान

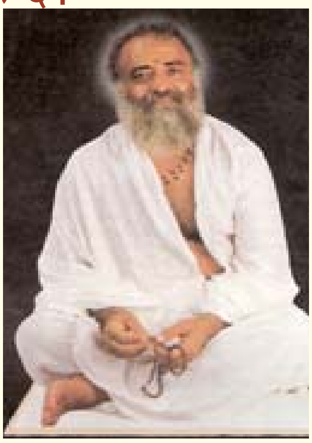


lnxq: ds iwT;
pj.kksa esa vkJ; ysuk
gh lPpk thou gSA
thou thus dh lgh
jhrh gSA

।। ॐ गुरू।।

भजन - मेरे देवा सदगुरु देवा

मेरे देवा सदगुरू देवा मेरे देवा सदगुरू देवा
सारी उमर करू मेरी तेरी सेवा के
जय जय सदगुरू देव के जय जय सदगुरू देव
ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
राम सिया राम सिया राम सिया राम
राम सिया राम सिया राम सिया राम
प्रेमी सब हरि गुण गाओ और जीवन सफल बनाओ
के जय जय सदगुरू देव के जय जय सदगुरू देव
गुरू तीन लोक के स्वामी और घट घट अंर्तयामी
के जय जय सदगुरू देव के जय जय सदगुरू देव
गुरू अजर अमर अविनाशी खुद आए वैकुंठ वाशी
के जय जय सदगुरू देव के जय जय सदगुरू देव
गुरू सब देवन के देवा गुरूनानक और महादेवा
के जय जय सदगुरू देव के जय जय सदगुरू देव
हम सब सेवक बड़भागी गुरू भक्ति हमें प्रिय लागी
के जय जय सदगुरू देव के जय जय सदगुरू देव
गुरू अंर्तज्योत जगावे दिल में दिलभर दिखलावे
के जय जय सदगुरू देव के जय जय सदगुरू देव
करो सेवा गुरूजी की सेवा मिले प्रेमाभक्ति का मेवा
के जय जय सदगुरू देव के जय जय सदगुरू देव
ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
राम सिया राम सिया राम सिया राम
राम सिया राम सिया राम सिया राम



शिष्य गुरूसेवा के द्वारा ही देहाध्यास से छूटकर उंची कक्षा प्राप्त कर सकता है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - मेरे देवता मुझको

मेरे देवता मुझकों देना सहारा, कहीं छुट जाए ना दामन तुम्हारा
बिना तेरे मन में समाए ना कोई
लगन का ये दीपक बुझाए ना कोई
तू ही मेरी कस्ती, तू ही किनारा, कहीं छूट जाए ना दामन तुम्हारा
हरि ओम हरि ओम
तेरे रास्ते से हटाती है दुनिया, इशारे से मुझको बुलाती है दुनिया
मुझे बचा सकता है तुम्हारा इशारा, कहीं छुट जाए ना दामन तुम्हारा
हरि ओम हरि ओम
तुम्हारा ही गुणगान गाता रहूं मैं
हदय से तुम्ही को ध्याता रहूं मैं
तुम्हारे सिवा अब लगे कुछ ना प्यारा, कहीं छुट जाए ना दामन तुम्हारा
हरि ओम हरि ओम
तुम्हें क्या बताए की तुम मेरे क्या हो
मेरी जिंदगी का तुम्ही आसरा हो
तुम्ही ने बनाया जीवन हमारा, कहीं छुट जाए ना दामन तुम्हारा
हरि ओम हरि ओम



आप जब गुरू की सेवा करते हों तब नम्र, मधुरभाषी, मृदु और विवेकी बनो। इससे गुरू का हदय जीत सकोगे।

।। ॐ गुरू।।

भजन - मेरे दिल में बसे

मेरे दिल में बसे गुरूदेव तुम हो।
हमारे प्यार की मूरत तुम हो।
मेरे दिल में बसे................
तेरे मिलने को दिल बेचैन रहता।
तुझे देखे तो दिल को चैन पड़ता।
मेरे मालिक मेरी धड़कन तुम हो।
हमारे प्यार की मूरत तुम हो।
मेरे दिल में बसे................
जमाना राह में कांटे बिछाता।
मुझे क्या मैं तो तेरी राह चलता।
मेरे दिलभर मेरी दुनिया तुम हो।
हमारे प्यार की मूरत तुम हो।
मेरे दिल में बसे................



गुरू के प्रति निःस्वार्थ एवं भक्तिभावपूर्वक सेवा, यह पूजा, भक्ति, प्रार्थना और ध्यान है।



न चाहु मैं कोई नश्वर की पूंजी।
तेरी वाणी के अमृत में है रूची।
मेरे हो राम, मेरे कृष्णा तुम हो।
हमारे प्यार की मूरत तुम हो।
मेरे दिल में बसे................
जुदा रहना गवारा कैसे होगा।
तुझे चाहत की झोली भरना होगा।
मेरे प्रियतम मेरे सरताज तुम हो।
हमारे प्यार की मूरत तुम हो।
मेरे दिल में बसे................
मुझे मंदिर, तीर्थ को क्या करना।
तेरे चरणों में तीर्थ आकर झुकता।
मेरे भगवान मेरे हरिहर तुम हो।
हमारे प्यार की मूरत तुम हो।
मेरे दिल में बसे................

।। ॐ  गुरू ।।

गुरू आज्ञापालन त्याग से भी बढ़कर है।

जो गुरू की सेवा करता है वह सब गुणों को प्राप्त करता है।

भजन - मेरे प्यारे गुरुवर

मेरे प्यारे गुरूवर तुम हमारे हो।
सबके हो सहारे, जग से न्यारे हो।
लग जाए ना नजर कितने प्यारे हो।
मेरे प्यारे गुरूवर तुम हमारे हो.........
करते हो करते तुम भव से पार हो करते।
हरते हो हरते तुम दुर्गुण सबके हो हरते।
ईश्वर होके भी तुम बापु रूप धारे हो।
मेरे प्यारे गुरूवर तुम हमारे हो.........
दाता हो दाता तुम्हीं मेरे विधाता।
जाता ना जाता तुम बिन रहा ना जाता।
हम सब भक्तों की आँख के तारे हो।
मेरे प्यारे गुरूवर तुम हमारे हो.........
रहते हो रहते तुम सब के दिल में रहते।
कहते हो कहते तुम सबकी हित की कहते।
सारे भक्तों के तुम तो दुलारे हो।
मेरे प्यारे गुरूवर तुम हमारे हो.........
पाया तुम्हें पाया मेरे दिल को शुकुन आया।
भाया हमें भाया तेरा चेहरा नुरानी भाया।
कष्ट मिटा देते हो भक्तों के सारे हो।
मेरे प्यारे गुरूवर तुम हमारे हो.........
रहना हमें रहना तेरी शरण में रहना।
कहना हमें कहना हमें थामें सदा ही रहना।
दीन-दुखी सबके तुम रखवारे हो।
मेरे प्यारे गुरूवर तुम हमारे हो.........

।। ॐ गुरू।।

.2.

देते हो देते तुम सबको सहारा देते।
लेते हो लेते तुम दुख सबके हर लेते।
हे मेरे गुरूवर तुम तारणहारे हो।
मेरे प्यारे गुरूवर तुम हमारे हो.........

तारा है तारा तुमने कितनों को तारा।
मारा है मारा तुमने विषयों को मारा।
बापू हमको प्राणों से प्यारे हो।
मेरे प्यारे गुरूवर तुम हमारे हो.........

आत्मवेत्ता गुरू के साथ एक क्षण का सत्संग भी लाखों वर्षो के तप की अपेक्षा कहीं उच्चतर है।

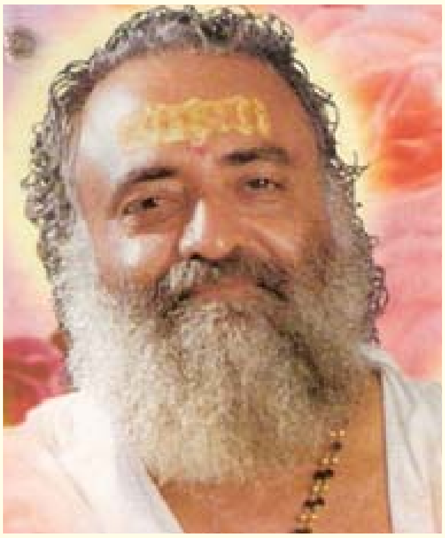


संसार सागर को पार करने के लिए गुरू जैसी कोई और नौका नहीं है। ईश्वर हीं गुरू के रूप में दिखते है।

सच्चे गुरू की अपेक्षा अधिक प्रेम बरसानेवाला, अधिक हितकारी, अधिक कृपालु और अधिक प्रिय व्यक्ति इस विश्व में मिलना दुर्लभ है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - मेरे तीरथ चारो धाम



मेरे तीरथ चारो धाम गुरूद्वारा और गुरूनाम
करते है पूरण काम
गुरूद्वारा और गुरूनाम करते है पूरणकाम
मेरे तीरथ चारो धाम गुरूद्वारा और गुरूनाम
भोग रोग से वो हीं छुड़ाते, मोह माया के फंद छुड़ाते
जनममरण से वो हीं छुड़ाते
इनका ना कोई दाम गुरूद्वारा और गुरूनाम
गुरूद्वारा और गुरूनाम करते है पूरणकाम
मेरे तीरथ चारो धाम गुरूद्वारा और गुरूनाम
जो मन भोगो में फसाएगा, वो उतना हीं दुख पाएगा
ये कुछ भी काम ना आएगा, तू खाली हाथ चला जाएगा
तू कर अपना उद्धार गुरूद्वारा और गुरूनाम
गुरूद्वारा और गुरूनाम करते है पूरणकाम
मेरे तीरथ चारो धाम गुरूद्वारा और गुरूनाम
नश्वर तनमनधन से उठाते, शाश्वत आतम रंग है लगाते
यहीं खुशियों का पैगाम, गुरूद्वारा और गुरूनाम
गुरूद्वारा और गुरूनाम करते है पूरणकाम
मेरे तीरथ चारो धाम गुरूद्वारा और गुरूनाम
जो इनकी शरण में आया है उसने सबकुछ हीं पाया है
छुती नही है उसे मोहमाया है मिलती गुरूप्रेम की छाया है
इन्हें कोटी कोटी प्रणाम, गुरूद्वारा और गुरूनाम
गुरूद्वारा और गुरूनाम करते है पूरणकाम
मेरे तीरथ चारो धाम गुरूद्वारा और गुरूनाम

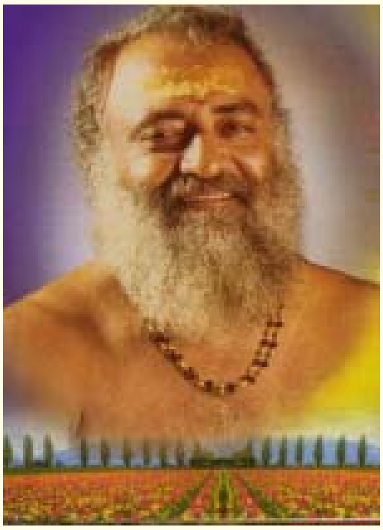
सदगुरू देव की जय।

गुरू के पास जाने के लिए आप योग्य अधिकारी होने चाहिए। आपमें वैराग्य की भावना, विवेक, गांभीर्य, आत्मसंयम एवं सदाचार जैसे गुण होने चाहिए।

।। ॐ गुरू।।

भजन - मेरी प्रीत लगा दो गुरूवर

गुरूसेवा आपकी
रग–रग में, नस नस में और



शरीर के प्रत्येक अंग
में गहरी उतर जानी
चाहिए।

मेरी प्रीत लगा दो गुरूवर
मेरी भक्ति जगा दो गुरूवर
आपके चरणों मे, आपके वचनों में
मेरी प्रीत लगा दो गुरूवर
मेरी भक्ति जगा दो गुरूवर
जिधर देखु उधर आए आप नजर
ऐसी दृष्टि दे दो गुरूवर... 2
मेरी जीवन नईया भंवर में है डोले
अब पार लगा दो गुरूवर... 2
सुख में सोउ नहीं, दुख में रोउ नहीं
ऐसी समता दे दो गुरूवर... 2
गुरू की महिमा को मैं हरदम गाता रहूं
ऐसी वाणी दे दो गुरूवर... 2
युगो से भटका हूं, कहां कहा अटका हूं
अब मुक्ति दे दो गुरूवर... 2
न चित्त अब चंचल हो, सुमिरन हरपल हो
ऐसी भक्ति दे दो गुरूवर... 2
आपके चरणों मे, आपके वचनों में
मेरी प्रीत लगा दो गुरूवर
मेरी भक्ति जगा दो गुरूवर

गुरूसेवा ही सच्चा धन है।
गुरूसेवा ही सच्चा धन है।
गुरूसेवा ही सच्चा धन है।

|| ॐ गुरू ||

भजन - मोहे लागी लगन गुरू चरणनन की

मोहे लागी लगन गुरू चरणनन की ...2
चरण बिना मोहे कछु नहीं भावे ...2
चरण बिना मोहे कछु नहीं भावे ...2
झुठी माया सब सपनन की
मोहे लागी लगन गुरू चरणनन की...2

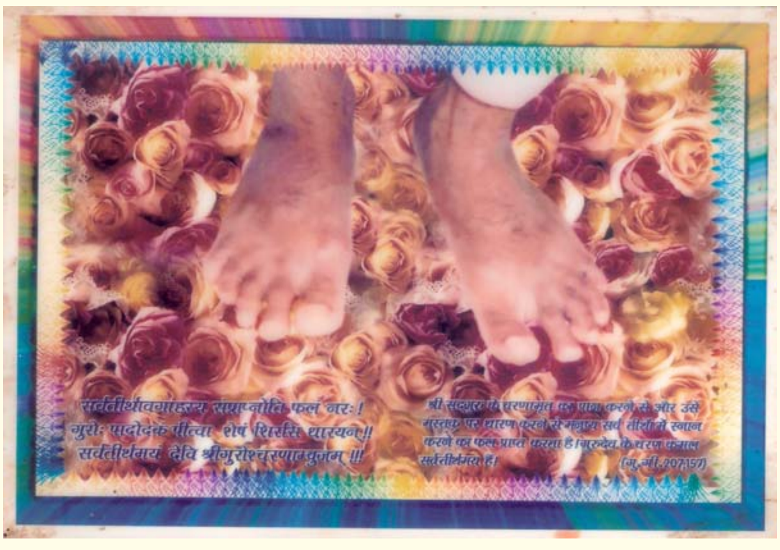
प्रेम के सिंधु दीन के बंधु ... 2
प्रेम के सिंधु दीन के बंधु ...2
मै प्यासी तव दर्शन की... 2
मोहे लागी लगन गुरू चरणनन की ...



हरि ॐ हरि ॐ .....हरि ॐ हरि ॐ .....

भोगों की अब चाह नहीं है ...2
कृपा भई गुरूवचनन की
मोहे लागी लगन गुरू चरणनन की ...2
हरि ॐ हरि ॐ .....हरि ॐ हरि ॐ .....

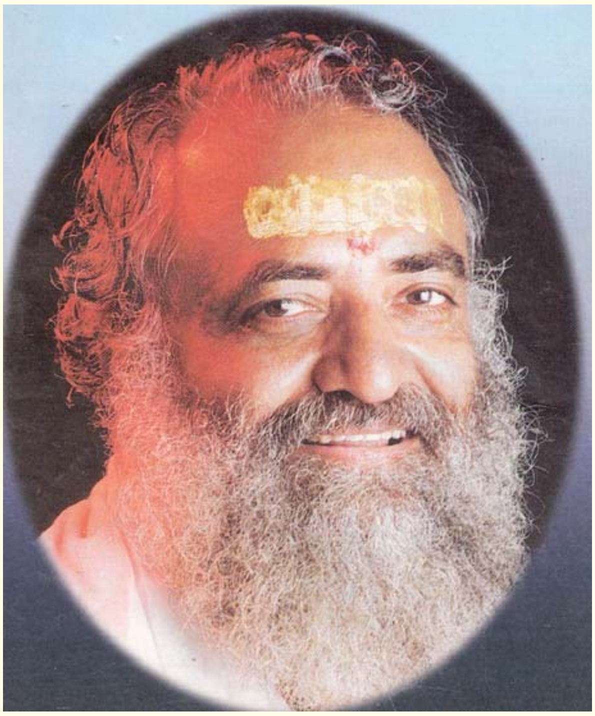
भवसागर सब सूख गयो है...2
फिकर नहीं मोहे तरनन की ...2
मोहे लागी लगन गुरू चरणनन की ...2
हरि ॐ हरि ॐ .....हरि ॐ हरि ॐ .....



।। ॐ गुरू।।

भजन - मुझे गर्व ना और सहारों का

मुझे गर्व ना और सहारो का एक तेरा सहारा काफी है...2
बन बनके सहारे टुटते है ये रस्म पुरानीं है जग की...2
टूटे ना कभीं छुटे ना कभीं बस तेरा सहारा काफी है...2
नजरों को धोखा देते है ये झुठे नजारे दुनिया के...2
ये झुठे नजारे दुनिया के...2
मेरी प्यासी नजरों के लिए बस तेरा नजारा काफी है...2
पपीहे को है मतलब हीं क्या इन नदियों और तलाबो से...2
इन नदियों और तलाबो से...2
बादल से बरसे स्वाती की बस एक हीं धारा काफी है...2
टूटे ना कभीं छुटे ना कभीं बस तेरा सहारा काफी है...2
यहां रिश्वत और सिफारिश से कोई काम नहीं बन सकता है..2
कोई काम नहीं बन सकता है...2
बिगड़ी तकदीर संवर जाने के लिए एक तेरा इशारा काफी है..2
हरि हरि ॐ हरि हरि ॐ हरि हरि ॐ हरि हरि ॐ



गुरूभक्तियोग जीवन के तमाम दुःख–दर्दो को निर्मूल करने का मार्ग बताता है।

।। ॐ गुरू ।।

भजन - मुझे सदगुरू का नाम

मुझे सदगुरू का नाम बड़ा प्यारा लागे बड़ा प्यारा लागे
मुझे झुठा हीं झुठा ये संसार लागे
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
पार्वतीजी माता मेरी पिता भोलेनाथ
इन दोनों के चरणो में हो बारंबार प्रणाम
शिवनाम में सफल जिंदगानी लागे
मुझे झुठा हीं झुठा ये संसार लागे
शिव ओम शिव ओम शिव ओम शिव ओम
सीता सीता नाम जपे है जो नर आठो याम
उनकी पीड़ा दूर करे जय जय सीताराम
रामनाम में सफल जिंदगानी लागे
मुझे झुठा हीं झुठा ये संसार लागे
मेरे राम मेरे राम मेरे राम मेरे राम
राधे राधे नाम जपे है जो नर आठो याम
उनके दुखड़े दूर करे है जय जय राधेश्याम
कृष्ण नाम में सफल जिंदगानी लागे
मुझे झुठा हीं झुठा ये संसार लागे
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
लक्ष्मी देवी माता मेरी पिता आसाराम
इन दोनों के चरणो में हो बारंबार प्रणाम
गुरूनाम में सफल जिंदगानी लागे
मुझे झुठा हीं झुठा ये संसार लागे
गुरू ओम गुरू ओम गुरू ओम गुरू ओम



जिन्होंने प्रभु को निहारा है और जो योग्य शिष्य को प्रभु के दर्शन कराते हैं, वे ही सच्चे गुरू है।

।। ॐ गुरू ।।

भजन - नैया पार ना लगे

आज खुले है भाग्य हमारे, हमने पाये सदगुरू प्यारे
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
लाख लाख उपकार गुरू के, ज्ञान से भरम मिटाए है
नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
कुटुंब कभी काम ना आए, अंत समय कोई साथ ना जाए
नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
संभल के प्यार चल दुनिया में, मोह माया में फंस मत प्यारे
नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
गुरूवचनों को जो अपनाया, सदगुरू ने मुझे अपनाया
नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
सदगुरू देव दया के सागर, सब साधक की भरते गागर
नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
मन में बसा है प्यारा नाम, जय जय सांई आसाराम
नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
तेरे सिवा मुझे कुछ नहीं भावे देखु जिधर भी नजर तु आवे
नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
लाख रोके मुझे दुनिया वाले, नैया मेरी अब तेरे हवाले
नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना

सदगुरु के पूज्य चरणों में आश्रय लेना ही सच्चा जीवन है, जीवन जीने की सही रीति है।

|| ॐ गुरू ||

.2.

द्वार तिहारे जो भी आया, खाली नहीं कोई लौट आया
नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
गुरू ने ऐसा विवेक जगाया, मैने मैं का भेद मिटाया
नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
उनकी दया जिसपर हो जाए, भवसागर से वो तर जाए
नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना
नैया पार ना लगे गुरूदेव के बिना

गुरू के उपदेश में अविचल और अविरत श्रद्धा सच्ची गुरूभक्ति का मूल है।



गुरू के उपदेश में अविचल और अविरत श्रद्धा सच्ची गुरूभक्ति का मूल है।

गुरू अपने शिष्य को असत् में से सत् में, मृत्यु में से अमरत्व में, अंधकार में से प्रकाश में और भौतिकता में से आध्यात्मिकता में ले जाते हैं।

|| ॐ गुरू ||

भजन - नन्हा सा फूल हूं

ॐ
नमो
भगवते
वासुदेवाय

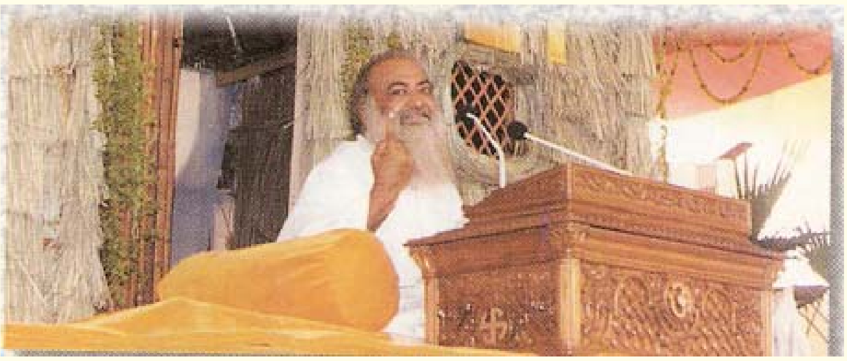
ॐ
नमो
भगवते
वासुदेवाय

ॐ
नमो
भगवते
वासुदेवाय

ॐ
नमो
भगवते
वासुदेवाय

ॐ
नमो
भगवते
वासुदेवाय

गुरू मंगलम गुरूपाद मंगलम गुरूवंदनम गुरूपाद वंदनम
हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम
नन्हा सा फूल हूं मैं चरणो की धूल हूं मैं
आया हूं मैं तो तेरे द्वार गुरूजी मेरी पूजा करो स्वीकार
हरि हरि ओम हरि हरि ओम राम राम ओम राम राम ओम
मैं तो नादान हूं बस इतनी बात है
मेरे जीवन की डोरी प्रभु तेरे हाथ है
थोड़ी दया हो जाए मुरझाया दिल खिल जाए
मानु तुम्हारा उपकार गुरूजी मेरी पूजा करो स्वीकार
गुरू मंगलम गुरूपाद मंगलम गुरूवंदनम गुरूपाद वंदनम
सुनलो हमारी मर्जी हमको वरदान दो
जीवन को जीना सीखे ऐसा वरदान दो
सूरज सी शान पाउ चंदा सा मान पाउ
इतना सा दे दो वरदान गुरूजी मेरी पूजा करो स्वीकार
हरि हरि ओम हरि हरि ओम राम राम ओम राम राम ओम
शिव शिव ओम शिव शिव ओम शिव शिव ओम शिव शिव ओम



अपने गुरू या आचार्य के समक्ष हररोज अपने दोष कबूल करो, तभी आप इन दुन्यावी निर्बलताओं से उपर उठ सकोगे।

।। ॐ गुरू ।।

भजन - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
वासुदेवाय हरि वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
प्रेम से बोलो वासुदेवाय
भाव से बोलो वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
देवकी नंदन वासुदेवाय
यशोदा नंदन वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
भक्तों के प्यारे वासुदेवाय
सबके दुलारे वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
बालगोपाल वासुदेवाय
छोटो छोटो ग्वालों वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
मुरली वाले वासुदेवाय
गैया वाले वासुदेवाय
माखन चोर वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
मुरली बजाते वासुदेवाय
गैया चराते वासुदेवाय
माखन खिलाते वासुदेवाय
नटखट नंदन वासुदेवाय
सब मिलकर बोलो वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



हाथ जोड़ मांगे सदा
तुमसे यही वरदान
एक पलक बिसरे नहीं
सदगुरू तेरा नाम

।। ॐ गुरू।।

भजन - पावन पावन नाम हरि हरि ओम

पावन पावन नाम हरि हरि ओम
मधुर मधुर नाम हरि हरि ओम
दिलों का दुलारा नाम हरि हरि ओम
कली का किनारा नाम हरि हरि ओम
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
मंगल मंगल नाम हरि हरि ओम
पावन पावन नाम हरि हरि ओम
मुनिमन रंजन भव भय भंजन हरि हरि ओम
मोह निवारक सब सुख कारक हरि हरि ओम
जो कोई गाये मुक्ति पाये हरि हरि ओम
जो कोई गाये शक्ति पाये हरि हरि ओम
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
मेवाड़ में मीरा बोले हरि हरि ओम
बंगाल में गौरांग बोले हरि हरि ओम
महाराष्ट में नामदेव बोले हरि हरि ओम
सौराष्ट में नरसिंह बोले हरि हरि ओम
पंजाब में नानक बोले हरि हरि ओम
मुंबई में तुमहम बोले हरि हरि ओम
मंगल मंगल नाम हरि हरि ओम
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
ब्रह्मा गाये नारद गाये हरि हरि ओम
पतित पावन प्यारा नाम हरि हरि ओम
अधम उधारण भवजग तारण हरि हरि ओम
जो कोई गाये भक्ति पाये हरि हरि ओम
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम
प्रेम से बोलो प्यारा नाम हरि हरि ओम
फिर से कहो दुलारा नाम हरि हरि ओम
शक्तिदाता मुक्तिदाता हरि हरि ओम
मंगल मंगल नाम हरि हरि ओम
पावन पावन नाम हरि हरि ओम
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम

मधुर मधुर नाम हरि हरि ओम
संतो का सहारा नाम हरि हरि ओम
नानकजी का प्यारा नाम हरि हरि ओम
भारत भर में गुंजा नाम हरि हरि ओम
साधक बोले प्यारा नाम हरि हरि ओम
सब मिलकर बोलो एक हीं नाम
हरि हरि ओम
आनंद आनंद नाम हरि हरि ओम
हरि ओम हरि ओम हरि ओम हरि ओम

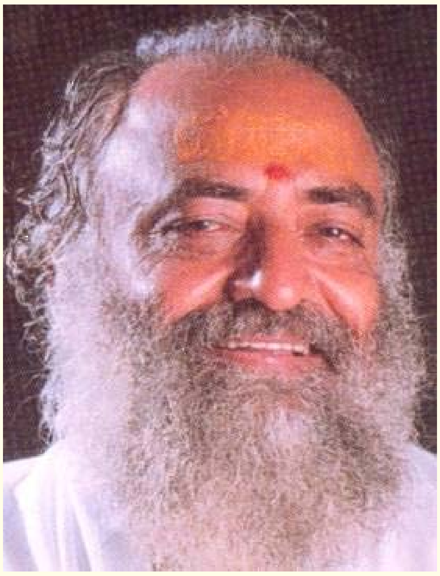


मेरो चिंत्यो होत नहीं
हरि को चिंत्यो होत
हरि को चिंत्यो हरि को
मैं रहुं निश्चिंत

|| ॐ गुरू ||

भजन - पाया मनुज तन

पाया मनुज तन जग में तू आया ले ले हरि का नाम
बोलो राम श्रीराम बोलो राम श्रीराम
हरि को भजले रात और दिन
हरिभक्ति से आए शुभदिन
क्यों करता अभिमान
बोलो राम श्रीराम बोलो राम श्रीराम
ये जग सारा माया पसारा
क्यों फिरता तू मारा मारा
सदगुरू करते पार
बोलो राम श्रीराम बोलो राम श्रीराम
गुरू के मुख की अमृतवाणी भींतर सहज समाधी
गुरू पाए मुक्तिमान
बोलो राम श्रीराम बोलो राम श्रीराम
प्रींती हरपल आनंद की करना
नश्वर जग के पींछे क्यों मरना
योग प्रभु से जान
बोलो राम श्रीराम बोलो राम श्रीराम
पांच विकारों का जहर है कारा
धींरे धींरे सब को है मारा
अंतर गुरू को पुकार
बोलो राम श्रीराम बोलो राम श्रीराम
आतम पद के ज्ञान की वर्षा सदगुरू करते
दौड़े आना गुरू चरणनन कर वास
बोलो राम श्रीराम बोलो राम श्रीराम

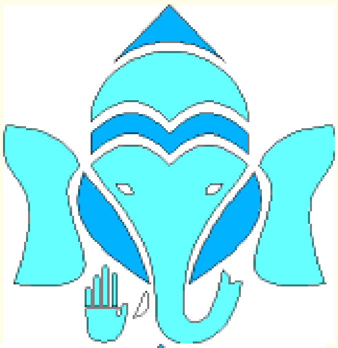
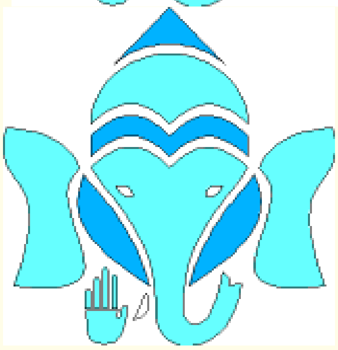
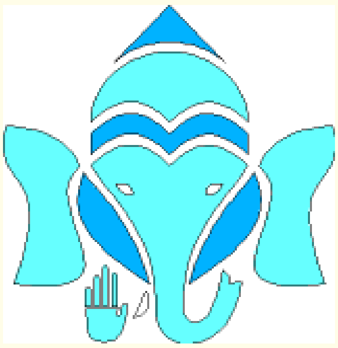


अपने गुरू की सेवा करने के लिए अपने प्राण एवं शरीर का बलिदान देने की तैयारी रखो, तब वे आपकी आत्मा की संभाल रखेंगे।

बोलो राम श्रीराम
बोलो राम श्रीराम

।। ॐ गुरू ।।

भजन - प्रभु प्रेम सदा भरपूर रहे

प्रभु प्रेम सदा भरपूर रहे गुरूदेव तुम्हारे चरणों में
मेरे बापू तुम्हारे चरणों में
ये अर्ज मेरी मंजूर रहे गुरूदेव तुम्हारे चरणों में
प्रभु प्रेम सदा भरपूर रहे गुरूदेव तुम्हारे चरणों में
निज जीवन की ये डोर प्रभु अब सौंप दी मैने है तुमको
उद्धार करो ये दास पड़े गुरूदेव तुम्हारे चरणों में
प्रभु प्रेम सदा भरपूर रहे गुरूदेव तुम्हारे चरणों में
आँखों में तुम्हारा रूप रहे ध्यान में मन तल्लीन रहे
तन अर्पित गुरूसेवा में रहे गुरूदेव तुम्हारे चरणों में
प्रभु प्रेम सदा भरपूर रहे गुरूदेव तुम्हारे चरणों में
संसार में देखा सार नहीं तब गुरूचरणों की शरण गई
तब श्रीचरणों की शरण गई
भव बंधन कटे ये विनंती है गुरूदेव तुम्हारे चरणों में
प्रभु प्रेम सदा भरपूर रहे गुरूदेव तुम्हारे चरणों में
जो शब्द मेरे मुख से निकले है नाथ उन्हें स्वीकार करो
मेरे बापू उन्हें स्वीकार करों गुरूदेव उन्हें स्वीकार करो
मेरे भाव सदा ऐसे हीं रहे गुरूदेव तुम्हारे चरणों में
प्रभु प्रेम सदा भरपूर रहे गुरूदेव तुम्हारे चरणों में
जब से सद्गुरू के चरणों में हमने ये शीश झुकाया है
उस दिन से मेरा जन्म हुआ और सफल हुई ये काया है।
प्रभु प्रेम सदा भरपूर रहे गुरूदेव तुम्हारे चरणों में



गुरू का दास बनना माने ईश्वर का सेवक बनना।



।। ॐ गुरू।।

भजन - प्रेम जब गुरू से हो गया

प्रेम जब गुरू से हो गया समझ रब को तू भा गया
राग द्वेष व्यापे नहीं काम क्रोध तापे नहीं
ऐसा तुझको जब से हो गया समझ रब को तू भा गया
सेवा को तप रहे परहित की नींति कहे
ऐसा तुझको जब से हो गया समझ द्वंद मोह छुट गया
गुरूज्ञान भाने लगे भक्ति रस आने लगे
ऐसा तुझको जब से हो गया समझ मन शुद्ध हो गया
दुख में तू रोए नहीं सुख में तू सोए नहीं
ऐसा तुझको जब से हो गया समझ रब को तू भा गया
ऑखो से आंसू बहे वाणीं भीं कुछ ना कहे
ऐसा तुझको जब से हो गया समझ घट में फूल खिल गया
संसार फीका लागे हरिनाम प्यारा लागे
ऐसा तुझको जब से हो गया समझ भक्ति रंग चढ़ गया
गुरूवर हीं प्रभु लगे मन में गुरू भक्ति जगे
ऐसा तुझको जब से हो गया समझ तेरा काम बन गया

गुरू के उपदेश में अविचल और अविरत श्रद्धा सच्ची गुरूभक्ति का मूल है।



गुरूभक्ति का आदि, मध्य और अंत मधुर एवं सुखदायक है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - यह अति सुंदर झुठी काया

यह अति सुंदर काया झुठी, यह माया की छाया झुठी
झुठा वैभव तमाम रे
राम बिन कहीं नहीं विश्राम
देखे सुने बड़े अभिमानी, धनपति–जनपति राजा रानी
नश्वर है सब नाम रे
राम बिन कहीं नहीं विश्राम
माता पिता पत्नी सुख भाता, यह सब देह रहे तक नाता
सदा न आवे काम रे,
राम बिन कहीं नहीं विश्राम
परम प्रेममय नित्य निरंजन, अंतरयामी भवभय भंजन
प्रियतम आत्माराम रे
राम बिन कहीं नहीं विश्राम
यह अति सुंदर काया झुठी, यह माया की छाया झुठी
झुठा वैभव तमाम रे
राम बिन कहीं नहीं विश्राम
जो निज में है सच्चिदानंदवन, जिनके आश्रित अह्म बुद्धिमन
उसे भजो निष्काम रे
राम बिन कहीं नहीं विश्राम

जो भगवन्नाम की ध्वनि को सुनकर प्रेम में तन्मय होकर नृत्य करते हैं, उनकी चरणरज से पृथ्वी शीघ्र ही पवित्र हो जाती है।



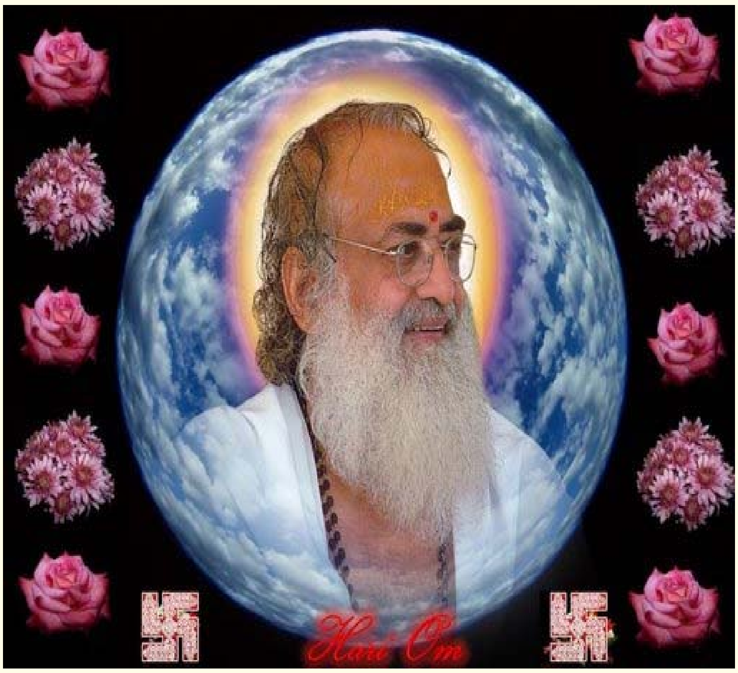
।। ॐ गुरू।।

भजन - रामजी के नाम ने तो



रामजी के नाम ने तो पथ्तर भी तारे
रामजी के नाम ने तो अहिल्या को तारा
रामजी के नाम ने तो सबरी को तारा
रामजी के नाम ने तो विभीषण को तारा
तुम भी जपो राम, राम तुमको भी तारे
जो ना जपे राम वो है धरती पे भारी
जो ना जपे राम वो है किस्मत के मारे
जो ना जपे राम वो है रावण को प्यारे
राम जपो राम जपो राम जपो प्यारे
जो ना जपे राम वो है किस्मत के मारे





एक ही स्थान, एक ही आध्यात्मिक गुरू और एक ही योग पद्धति में लगे रहो। यह निश्चित सफलता की रीति है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - रामनाम गाए जा

रामनाम गाए जा, प्रीती को बढ़ाए जा
वो हीं काम आएगा, साथ तेरे जाएगा
हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि ओम
प्रीत एक राम की और प्रीत ना कहीं
सच्ची प्रीती से मिले झांकी मेरे राम की
शांत मन से गाए जा, राम को रमाए जा, राम हीं से पाएगा, मुक्ति फल खाएगा
हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि ओम
ज्ञानदाता सदगुरू है भक्तिदाता सदगुरू है
शक्तिदाता सदगुरू है मुक्तिदाता सदगुरू है
गुरू प्रीत पाए जा, चरणों में ध्याए जा, सेवा और सुमिरन से गुरू द्वार जाएगा
हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि ओम
मान अपमान की चोट ना लगे तुझे
आस क्या निराश क्या झूठीं है ये मन लगे
गुरू प्रीत गाएजा, चरणों में जाएगा, मुक्ति गीत गाएगा, खुद संवर ही जाएगा
हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि ओम
गुरू एक माझीं है सच्चे तेरे साथीं, बापू एक माझीं है सच्चे तेरे साथीं है
सेवा पूजा अर्चन से मुक्ति तेरीं दासीं है
प्यार से पुकारे जा, दर्शन को पाए जा, गुरू राम तेरे है, राम गुण गाए जा
हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि ओम
राम और गुरूवर में भेद जानता रहे
शीघ्र गिरते जाएगा मुक्ति ना उसे मिले
ज्ञानीं ऐसे गुरूवर है, भोले शिव महेश्वर है, देखते तुझे लगे बैठे जैसे ईश्वर है
हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि हरि ओम हरि ओम

सदगुरू साक्षात ईश्वर है – ऐसा जो कहा गया है वह सत्य ही है। उनकी महानता शब्दातीत है।



||ॐ गुरू||

भजन - साँई हमें प्यारे है ....

साई हमे प्यारे है सारे जग से निराले है
बड़े ही दयालु है हमें प्राणों से प्यारे है
ध्यान में ले जाते है और योग सिखाते है
भक्ति वो देते है और मस्ती भी देते है
शक्ति भी देते है और मुक्ति भी देते है
बिगड़ी बनाते है सारे दुख को मिटाते है
साई हमे प्यारे है सारे जग से निराले है
कष्ट मिटाते है और आनंद देते है
दुख को मिटाते है और सुख को भरते है
ज्ञान भी देते है कैसे वो दयालु है
साई हमे प्यारे है सारे जग से निराले है
ज्ञान की गंगा में वो हमे डुबाते है
रहमत की सरिता में, वो हमे नहलाते है
पावन करते है सारे ताप मिटाते है
साई हमे प्यारे है सारे जग से निराले है
रोग मिटाते है और शोक छुड़ाते है
निर्भय बनाते है दिव्य शक्ति जगाते है
ब्रह्मानंद में डुबाते है कैसे वो कृपालु है
साई हमे प्यारे है सारे जग से निराले है
भक्तों के भक्त भी हैं और संतो के संत भी है
योगियों के योगी है महाकर्मयोगी भी है
ज्ञानियों के ज्ञानी है और परम ज्ञानी भी हैं
लीलाशाह के प्यारे है और महगीबा के दुलारे है
साई हमे प्यारे है सारे जग से निराले है



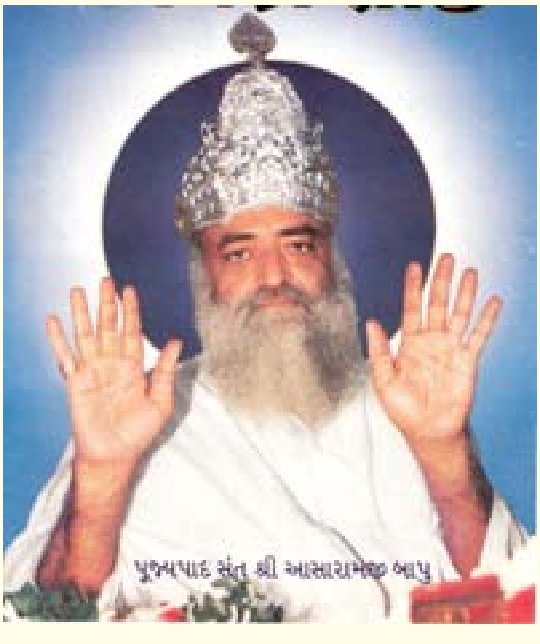
सदगुरू की कर वंदना मन में धरिये ध्यान।
निश्चय ही मिल जाएगा मोक्ष परम पद ज्ञान।।

।। ॐ गुरू।।

भजन - सबका मंगल सबका भला हो

सबका मंगल सबका भला हो गुरूचाहना ऐसी हो
इसलिए तो आए धरा पर बापू आसारामजी है
भारत का नया रूप बनाने विश्वगुरू के पद पे बिठाने
योग सिद्धी के खोले खजाने ज्ञान के झरने फिर से बढ़ाने
सबका मंगल सबका भला हो गुरूचाहना ऐसी हो
युवाधन को उपर उठाने यौवन संयम पाठ सिखाने
जन जन में भक्ति शक्ति जगाने निकल पड़े गुरू राम निराले
सबका मंगल सबका भला हो गुरूचाहना ऐसी हो
इक इक बच्ची सबरी सी हो सुलभा जैसी योगिनी हो
सती अनसूया सती सीता हो मुख पर तेज माँ शक्ति का हो
सबका मंगल सबका भला हो गुरूचाहना ऐसी हो
बालक हो राम का दपर्ण मातृभूमि हेतु सब कुछ हो अपर्ण
नित सेवा साधना समता धारणा में हो विचरण
सबका मंगल सबका भला हो गुरूचाहना ऐसी हो
नर नर में नारायण दर्शन सेवा कर फल प्रभु को अपर्ण
दीनदुखी को गले लगाए सबका भला हो मन से गाए

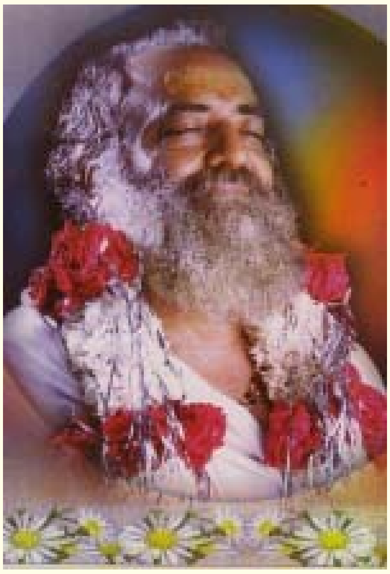
जिस कार्य से बहुतों का हित होता है, मंगल होता है उस कार्य को करने का विचार यदि एक साधारण व्यक्ति भी अपने मन में ठान लेता है तो हजारों-लाखों व्यक्ति देर-सबेर उसके साथ सहयोग करने के लिए जुड़ जाते है।



।। ॐ गुरू।।

भजन - सदगुरू के चरणो में

सदगुरू के चरणों में सारे तीर्थ और स्नान
लगी रहे जो लगन गुरू से हो जाए कल्याण
गुरू का प्यार निराला, गुरू का प्यार निराला
गुरूचरणों की धुलि जो माथे पर लग जाए
किस्मत रेखा बदले खुशिया सारी मिल जाए
दुखी रहे ना वो नर जग में जिसको तेरा ध्यान
लगी रहे जो लगन गुरू से हो जाए कल्याण
गुरू का प्यार निराला, गुरू का प्यार निराला
गुरू चाहे तो पंगु भी पर्वत चढ़ जाए
सुर दुनिया देखे गुंगा भी राग सुनाये
राई को पर्वत कर डाले रंक बने धनवान
लगी रहे जो लगन गुरू से हो जाए कल्याण
गुरू का प्यार निराला, गुरू का प्यार निराला
ऐसे श्री सदगुरू का आशीष मिल जाए
पापताप सब कट जाए भाग्य जाग जाए
गुरूचरणों की सेवा करिये राजी हो भगवान
लगी रहे जो लगन गुरू से हो जाए कल्याण
गुरू का प्यार निराला, गुरू का प्यार निराला
गुरू ही ब्रहमा, गुरू ही विष्णु, गुरू की शिव कहाये
ऐसे गुरू के श्रीचरणों मे हम सब शीश नवाये
ना भूले हम ना छोड़े हम सदगुरूदेव का ध्यान
लगी रहे जो लगन गुरू से हो जाए कल्याण
गुरू का प्यार निराला, गुरू का प्यार निराला
सदगुरू के चरणों में सारे तीर्थ और स्नान
लगी रहे जो लगन गुरू से हो जाए कल्याण
गुरू का प्यार निराला, गुरू का प्यार निराला



अपने गुरू या आचार्य के समक्ष हररोज अपने दोष कबूल करो, तभी आप इन दुनियावी निर्बलताओं से उपर उठ सकोगे।

।। ॐ गुरू।।

भजन - सदगुरू को ब्रह्मस्वरूप

सदगुरू को ब्रह्मस्वरूप कोई कोई जाने रे
गुरू को देहधारी मत मानो
गुरू और ब्रह्म को भिन्न ना मानो
गुरू परमेश्वररूप कोई कोई जाने रे
ब्रह्मज्ञानी अज्ञान मिटावे
वेदों की नीति समझावे
गुरूवाणी गुरू रूप कोई कोई जाने रे
जिसने गुरू से नाम लिया है
अपना जीवन धन्य किया है
निगुरे पड़ेगे भवरूप कोई कोई जाने रे
गोविंद से पहले गुरू को पूजो
प्रेम भाव से मन को सींचो
सदगुरू प्रेमस्वरूप कोई कोई जाने रे
गुरू की पूजा ईष्ट की पूजा
गुरू ज्ञान सम ज्ञान ना दूजा
मांगो भक्ति की भीख कोई कोई जाने रे
सदगुरू को ब्रह्मस्वरूप कोई कोई जाने रे
गुरूदेव...... गुरूदेव....... गुरूदेव
गुरूबिन भवनिधि तरहीं ना कोई
चाहे ब्रह्मा शंकर होई
ये सबसे उत्तम सीख कोई कोई जाने रे
सदगुरू को ब्रह्मस्वरूप कोई कोई जाने रे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरि .... हे हरि.......



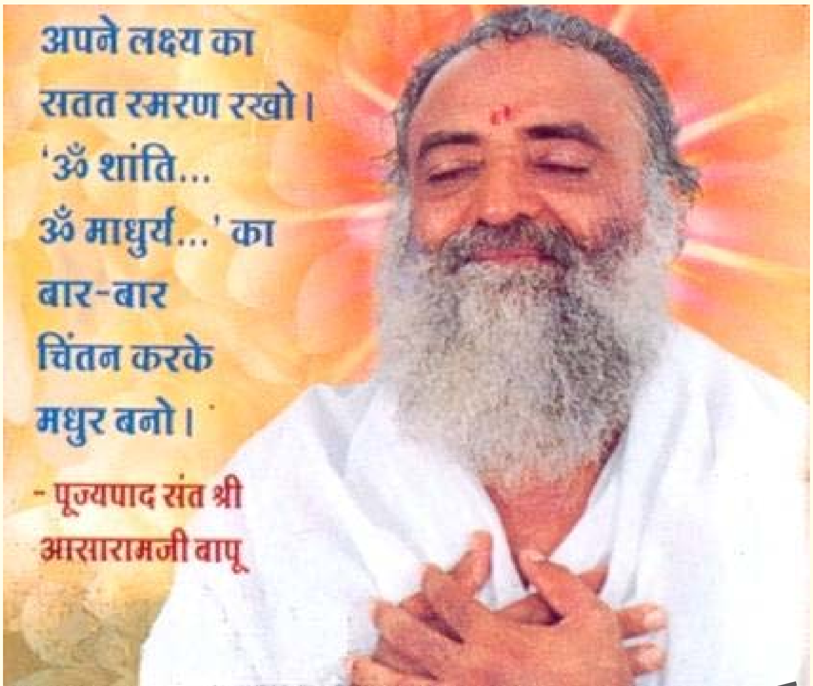
सद्गुरू के चरणकमलों का आश्रय लेने से जिस आनंद का अनुभव होता है उसके आगे त्रिलोकी का साम्राज्य तुच्छ है।

|| ॐ गुरू ||

भजन - सदगुरू तेरे दर्शन पाकर

ॐ माधुर्य ॐ माधुर्य ॐ माधुर्य ॐ माधुर्य ॐ माधुर्य ॐ माधुर्य ॐ माधुर्य ॐ माधुर्य ॐ माधुर्य ॐ माधुर्य

सदगुरू तेरे दर्शन पाकर ऑखों में सरूर आ जाता है
बिगड़ी तकदीर संवरतीं है तेरे दरबार में आने से
जो भीं तेरे निकट आये वो भक्त जरूर तर जाता है
सदगुरू तेरे दर्शन पाकर ऑखों में सरूर आ जाता है
दुखदर्द के मारे आते है राहत के लिए तेरे दर पर
रहमत का जलवा उमड़कर के दिल में भरपूर आ जाता है
तुम सब लोगो को के मालिक हो भक्तों के दिलों में उजाले हो
इक झलक तेरीं पड़ जाने से हर चींज पे नुर आ जाता है
इक झलक तेरीं पड़ जाने से हर चींज पे नुर आ जाता है
सदगुरू तेरे दर्शन पाकर ऑखों में सरूर आ जाता है



शिष्य जब गुरू के चरणकमल का ध्यान करता है,
तब सब संशय अपने–आप नष्ट हो जाते है।

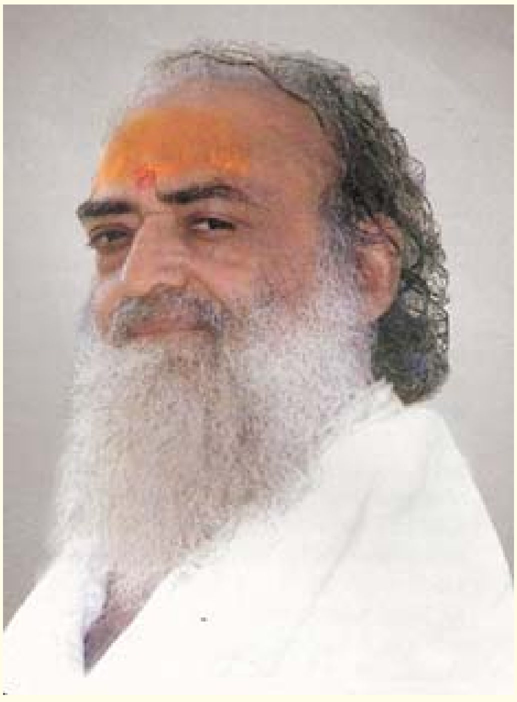
।। ॐ गुरू ।।

भजन - सदगुरूजी रे मेरे सदगुरूजी

सदगुरूजी रे मेरे सदगुरूजी
तारणहारे सबके हो मेरे सदगुरूजी.... 2
आपकी शरण ली तो प्रभुप्रीती जागी
प्रभुप्रीती जागी मेरी जगप्रीती भागी
विनंती करे है साधक शरण देना स्वामी
तारणहारे सबके हो मेरे सदगुरूजी.... 2
सदगुरू महिमा देखो ईश्वर ने गायी
वेद शास्त्र गीता ने भी गुरूमहिमा गायी
हृदयकमल में गुरू की मूरत समायी
तारणहारे सबके हो मेरे सदगुरूजी.... 2
बाई मीरा जैसी हमको गुरूभक्ति देना
सबरी जैसी हमको सेवा निष्ठा देना
चरणो में रखना गुरूवर दूर नहीं करना
तारणहारे सबके हो मेरे सदगुरूजी.... 2



गुरू जब कोई भी चीज करने की आज्ञा करें, तब शिष्य को हृदयपूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए।

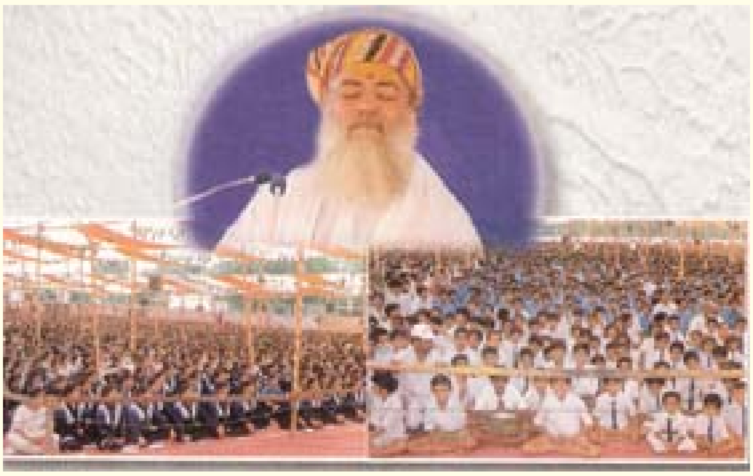


गुरू का ध्यान शिष्य के लिए एकमात्र मूल्यवान पूंजी है। शिष्य को गुरू की आज्ञा का पालन अंतःकरणपूर्वक करना चाहिए।

।। ॐ गुरू।।

भजन - साधकों की ये हरि ओम बोली

साधकों की ये हरि ओम बोली ऐसी वैसी ये बोली नहीं है
निंदकों की तड़क और गरज से डरनेवाली ये टोली नहीं है
लेके सत्संग हरि ओम साधक सत्य संदेश दिल में है धारे
सुनलो जग वालो इन अफवाहों से डरनेवाली ये टोली नहीं है
हम तो सदगुरू के प्यारे है साधक जैसे सिंह के दुलारे हो शावक
भुलकर भी हमें ना सताना गिदड़ों की ये टोली नहीं है
थक गये सब जगवाले निंदक साधकों की न श्रद्धा घटी है
हम तो प्यारे है अपने बापू के ऐसे वैसे हमजोली नहीं है
विश्वगुरू पद पे भारत रहेगा प्यारे बापू की बोली यही है
साधकों का है संकल्प पूरा कायरों की ये बोली नहीं है
दुर्मति से भरे है जो निंदक नरकगामी फिर उनकी गति है
खैरियत समझो अब तक बापू ने तीसरी ऑख खोली नहीं है
खैरियत समझो अब तक गुरू ने तीसरी ऑख खोली नहीं है



जिन–जिन लोगों ने पवित्रता को छोड़ा, उनकी स्थिति खराब होने लगी। उस मनुष्य की जय कभी नहीं हो सकती जिसका हृदय पवित्र नहीं है।

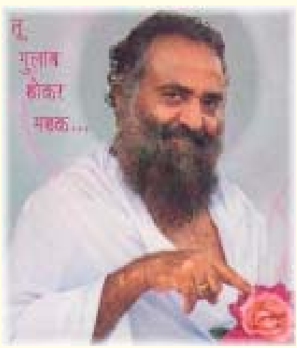
|| ॐ गुरू ||

भजन - साधकों को मिले ऐसे सांई



साधकों को मिले ऐसे सांई के जीवन में खुशी आ गयी
जबसे दर्शन किये मेरे सांई के जीवन में महक आ गयी
पहले लगता था संसार अपना, अब लगता है झूठा सपना
जबसे दीक्षा मिली मेरे सांई के जीवन की युक्ति आ गई
बिन तेरे हम रह नहीं सकते, दर्द जुदाई का सह नहीं सकते
कैसी माया ये तुमने दिखाई के जीवन में खुशी आ गई
भटक रहा था मारा मारा, कोई नहीं था मेरा सहारा
जबसे पकड़ी ये बाह तुमने सांई किनारे ये कश्ती आ गयी
धन–दौलत और मान–बढ़ाई, अंत समय कुछ काम ना आयी
तुम हो सच्ची दौलत मेरे सांई, तुमको पाके खुशी आ गयी
हरिनाम की प्याली पिलाते, निज मस्ती में सबको डुबाते
ऐसी करूणा नजर न कहीं आयी, मेरे तनमन में मस्ती आ गयी
झुठी दुनिया के झुठे नजारे, जान गये हम तुम हो हमारे
तुमने रहमत ये की मेरे सांई, मेरे जीवन में भक्ति आ गयी
देखी है जबसे तस्वीर तेरी, तबसे बदल गयी तकदीर मेरी
कैसी सूरत ये है तेरी सांई एक नजर में है सबको भा गयी
तेरे बिना मेरा जीवन अधूरा, लगता है सब सूना सूना
तुम जो मुझको मिले मेरे सांई, मेरे जीवन में महक छा गयी
गुरूदेव गुरूदेव......... गुरूदेव गुरूदेव.......
धन–दौलत और मान–बढ़ाई, अंत समय कुछ काम ना आयी
तुम हो सच्ची दौलत मेरे सांई, तुमको पाके खुशी आ गयी
गुरूदेव गुरूदेव......... गुरूदेव गुरूदेव.......

गुरू की सेवा आपके जीवन का एकमात्र लक्ष्य और ध्येय होना चाहिए।



गुरू के प्रति भक्ति अखूट और स्थायी होनी चाहिए।

|| ॐ गुरू ||

भजन - सांई को जो ब्रह्मस्वरुप

सांई को जो ब्रह्मस्वरूप में जानेगा
जीते जी वो जीवन मुक्ति पाएगा
वो मुक्ति पाएगा, वो शांति पाएगा, वो आनंद पाएगा
सांई को जो ब्रह्मस्वरूप में जानेगा
राम स्वरूप में सांई विराजे
श्याम स्वरूप में सांई विराजे
शिव स्वरूप में सांई विराजे
शिव स्वरूप में सांई विराजे
शक्ति स्वरूप में सांई विराजे
सांई को जो ब्रह्मस्वरूप में जानेगा
द्वारकाधीश में सांई विराजे
रणछोड़राय में सांई विराजे
रामेश्वर में सांई विराजे
रामेश्वर में सांई विराजे
झुलेलाल में सांई विराजे
सांई को जो ब्रह्मस्वरूप में जानेगा
श्रीनाथ में सांई विराजे
बद्रीनाथ में सांई विराजे
केदारनाथ में सांई विराजे
केदारनाथ में सांई विराजे
तीरूपति में सांई विराजे
सांई को जो ब्रह्मस्वरूप में जानेगा
दत्तात्रय में सांई विराजे
नानकजी में सांई विराजे
रंग–अवधुत में सांई विराजे
रंग–अवधुत में सांई विराजे
जलारामजी में सांई विराजे
सांई को जो ब्रह्मस्वरूप में जानेगा



प्रेम से बोलो जय गुरूदेवा
भाव में बोलो जय गुरूदेवा
मस्ती से बोलो जय गुरूदेवा
दिल से बोलो जय गुरूदेवा
खाते बोलो जय गुरूदेवा
पीते बोलो जय गुरूदेवा
सोते बोलो जय गुरूदेवा
उठते बोलो जय गुरूदेवा
ब्रह्मा–स्वरूपा जय गुरूदेवा
शिव–स्वरूपा जय गुरूदेवा
विश्वविधाता जय गुरूदेवा
आनंदस्वरूपा जय गुरूदेवा
आनंद दाता जय गुरूदेवा
भक्ति दाता जय गुरूदेवा
शक्ति दाता जय गुरूदेवा
मुक्ति दाता जय गुरूदेवा

।। ॐ गुरू।।

भजन - सपना ये संसार जपले राम हरि



मेरी जीवन भगवान के लिए है। मुझे उनका न होकर क्षणभर भी नहीं जीना है। भगवान मुझे अपना मानें चाहे न माने, पर मैं कभी किसी दूसरे का होकर नहीं रहुंगा।

सपना ये संसार जपले राम हरि
तू दिल से जरा पुकार जपले राम हरि
हरि ओम राम हरि
सत्संग में नित रूचि बना ले
संत चरण रज शीष लगाले
जींने का यही सार
जपले राम हरि,
तू दिल से जरा पुकार जपले राम हरि
हरि ओम राम हरि
संयम से इस जग में रहना
सबके हित की निती कहना
सबसे करना प्यार हरि ओम राम हरि
तू दिल से जरा पुकार जपले राम हरि
हरि ओम राम हरि
संतोषी बन शांति पाना
परमेंश्वर का ध्यान लगाना
सदगुरू का ध्यान लगाना
गुरू करे भवपार
जपले राम हरि
तू दिल से जरा पुकार जपले राम हरि
हरि ओम राम हरि
बुद्धि जो भोगों में फंसेगी
परम तत्व को नहीं समझेगी
मन को जरा सुधार
जपले राम हरि
तू दिल से जरा पुकार जपले राम हरि
हरि ओम राम हरि

|| ॐ गुरू ||

भजन - सतज्ञान सुधा रस बरसाने

सतज्ञान सुधा रस बरसाने गुरूदेव धरा पर आए है
अपना ये जीवन धन्य हुआ है गुरूदेव के दर्शन पाए है
विषयों का विष सब दूर किया, भक्ति से हमें भरपूर किया
मेरे मन का नशा सब चूर किया, हमें निज मस्ती में लाए है
सतज्ञान सुधा रस बरसाने गुरूदेव धरा पर आए है
वाणी पावन हितकारी है लगती हमको अति प्यारी है
ये सत्य सरल सुखकारी है करूणा धन बनकर आयी है
सतज्ञान सुधा रस बरसाने गुरूदेव धरा पर आए है
रहती है लगन सदा दिल में वो कब रिझेंगे नाथ मेरे
वो मगन सदा इस धुन में ही सारा संसार भुलाया है
सतज्ञान सुधा रस बरसाने गुरूदेव धरा पर आए है
है धन्य जगत में वो इंसान जिसने सदगुरू को पाया है
सदगुरू की प्रीती के पीछे जग सारे को विसराया है
सतज्ञान सुधा रस बरसाने गुरूदेव धरा पर आए है
सत्संग में सत् का सार मिला बापू का प्यार अपार मिला
हमें ज्ञान का एक भंडार मिला नित ज्ञान के वचन सुनाए है
सतज्ञान सुधा रस बरसाने गुरूदेव धरा पर आए है
श्रद्धा विश्वास अटल रखकर गुरू चरणों में प्रेम बढ़ाया है
गुरू वचनों पर होके सदके मैने मंजिल को पाया है
सतज्ञान सुधा रस बरसाने गुरूदेव धरा पर आए है
सत्संग की पावन गंगा में बढ़भागी जो भी नहाते है
जीवन उनका बन जाता है भवसागर वो तर जाते है
सतज्ञान सुधा रस बरसाने गुरूदेव धरा पर आए है
हमें आत्मतत्व समझाया है स्वरूप का बोध कराया है
स्वभाव विभाव दिखाया है नित उंचे भाव बनाए है
सतज्ञान सुधा रस बरसाने गुरूदेव धरा पर आए है



अच्छा–बुरा कार्य करने में मनुष्य स्वतंत्र है। अच्छे कार्य का पुण्य भोगने में तो स्वतंत्र नहीं। प्रकृति बलात उसे बुरे कार्य का दण्ड देती है। जैसे, सरकार आपको पुरस्कार दे तो आप उसे वापस भी कर सकते हैं लेकिन सजा को वापस नहीं कर सकते। अतः अच्छा काम शीघ्र करना चाहिए और बुरे काम को टालते रहना चाहिए।

।। ॐ गुरू ।।

भजन - सत्संग में तेरे जो भी आता

सत्संग में तेरे जो भी आता खाली झोली भर जे जाता
मैं भी तेरे द्वार गुरूजी बेड़ापार कर दो
गुरूजी बेड़ापार कर दो बापुजी बेड़ापार कर दो
हम सब आए तेरे द्वार गुरूजी बेड़ापार कर दो
इतनी कृपा हमपर करना
हाथ दया का सिर पर धरना
बार बार आउ मैं तेरे द्वार गुरूजी बेड़ापार कर दो
तेरे दर पे आ बैठे है
प्रीत तुम्ही से कर बैठे है
तुम्ही हो मेरे भगवान गुरूजी बेड़ापार कर दो
तुमने पुकारा हम चले आए
भेट चढ़ाने कुछ नहीं लाए
अब दिल ही करो स्वीकार गुरूजी बेड़ापार कर दो
भाव की माला भेट चढ़ाए
हाथ जोड़कर शीश नवाए
करे पूजा सत्कार गुरूजी बेड़ापार कर दो
कृपा तुम्हारी ऐसी पाए
जीवन भर हम कुछ नहीं मांगे
भरे रहे भंडार गुरूजी बेड़ापार कर दो
हमको तो सुख भोग ही प्यारा
देना जिसमें हित हो हमारा
तुम्ही हो पालनहार गुरूजी बेड़ापार कर दो
हम सब आए तेरे द्वार गुरूजी बेड़ापार कर दो



**सत्संग की आधी घड़ी, सुमिरण वर्ष पचास।
वर्षा बरसे एक घड़ी, अरहट फिरे बारहो मास।।**

।। ॐ गुरू।।

भजन - नारायण नारायण

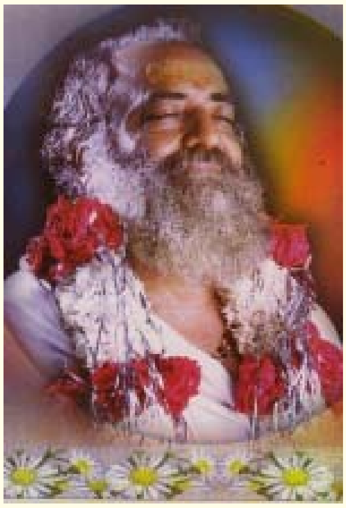


नारायण नारायण श्री मन नारायण नारायण नारायण
बनायीं है किस्मत तेरे पास आके
मुझे तुमने दे दीं नयीं जिंदगानीं
तेरे नाम का आसरा मिल गया है
है कर्जदार तेरीं बड़ीं मेहरबानीं
है कर्जदार तेरीं बड़ीं मेहरबानीं नारायण नारायण
नारायण नारायण श्री मन नारायण नारायण नारायण
तुम्हीं को मैं आंनद धन चाहता हूं
जगत का नहीं कोई धन चाहता हूं
न रह जाए मुझमें कोई मोहमाया
प्रभु तुम में तल्लीन मन चाहता हूं
प्रभु तुम में तल्लीन मन चाहता हूं नारायण नारायण
नारायण नारायण श्री मन नारायण नारायण नारायण
नहीं अंह करू की जो तुम चाहते हो,
मैं चाहों का अपनीं दमन चाहता हूं
जहॉ चित्त हो चंचल जगत है मुझको
मैं सब में हीं तेरीं रजा देखता हूं
मैं सब में हीं तेरीं रजा देखता हूं नारायण नारायण
नारायण नारायण श्री मन नारायण नारायण नारायण
मेरे मन के मंदिर में गुरूवर तुम्हारीं
पिता नाथ ज्योति सदा जगमगाए
तेरे दर पे आए है बनके पुजारीं
नहीं भार भक्ति का कम होने पाए
नहीं भार भक्ति का कम होने पाए नारायण नारायण
नारायण नारायण श्री मन नारायण नारायण नारायण

गुरू इस पृथ्वी पर साक्षात् ईश्वर है, सच्चे मित्र एवं विश्वास पात्र बंधु है।

|| ॐ गुरू ||

.2.

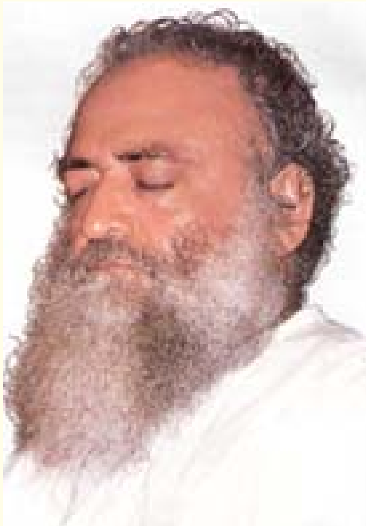


अब प्रभु कृपा करहूं एहीं भांति
सब तजि भजन करहूं दिन राति
हमे देना अनुराग अर्जुन कीं भांति
शयन में भीं जिह्वा रहे गुनगुनातीं
शयन में भीं जिह्वा रहे गुनगुनातीं नारायण नारायण
नारायण नारायण श्रीं मन नारायण नारायण नारायण
सेवा कीं महिमा समझ हमको आए
मैं जींवन सदा सेवा में हीं बिताउ
कभीं भूलकर भूल होने न पाए
कभीं भाव सेवा का मन से ना जाए
कभीं भाव सेवा का मन से ना जाए नारायण नारायण
नारायण नारायण श्रीं मन नारायण नारायण नारायण
मन में कभीं ना अंहकार आए
तेरे चरणों का ध्यान खोने ना पाए
रहे श्वास चलतीं ये तन में जभीं तक
हर एक श्वास गुणगान तेरा हीं गाए
हर एक श्वास गुणगान तेरा हीं गाए नारायण नारायण
नारायण नारायण श्रीं मन नारायण नारायण नारायण
विश्वास मन का ये जाने ना पाए
गुरूवर के हम है गुरूवर हमारे
तुम्हारे अलावा गुरूजीं जगत से
नहीं कोई नैया हमारीं संवारे
नहीं कोई नैया हमारीं संवारे नारायण नारायण
नारायण नारायण श्रीं मन नारायण नारायण नारायण

जो अपने गुरू के चरणों की पूजा निरपेक्ष भक्तिभाव पूर्वक करता है, उसे गुरूकृपा सीधी प्राप्त होती है।

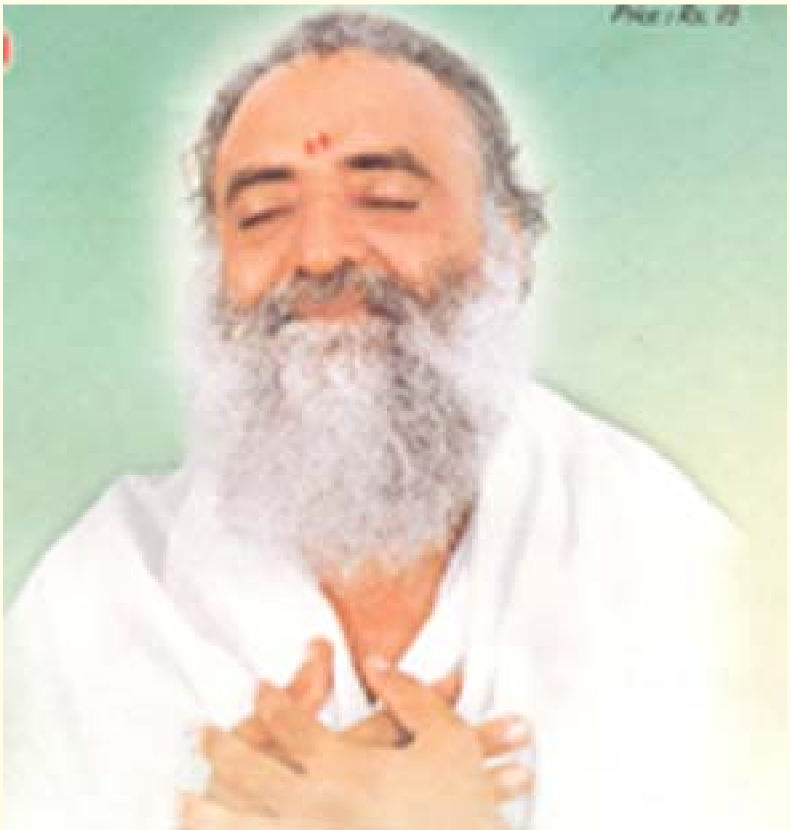
.3.

तुम्हें पाके हमने जहा पा लिया है
जमीं तो जमीं आसमा पा लिया है
अब मन में गुरूनाम कीं हीं रटन हो
हदय धरे नाम गुरूवर तुम्हारा
हदय धरे नाम गुरूवर तुम्हारा नारायण नारायण
नारायण नारायण श्रीं मन नारायण नारायण नारायण
कृपा सिंधु सदगुरू जो कुछ कह रहे है
वो वाणीं भुलाने के काबिल नहीं है
बड़े भाग्य से ऐसा अवसर मिला है
निरर्थक बिताने के काबिल नहीं है
निरर्थक बिताने के काबिल नहीं है नारायण नारायण
नारायण नारायण श्रीं मन नारायण नारायण नारायण
मेरे बिगड़े जीवन को तुमने बनाया
मेरे सब्र का रोग तुमने मिटाया
ये कैसा है जादू समझ में ना आया
तेरे प्यार ने हीं हमको जींना सिखाया
तेरे प्यार ने हीं हमको जींना सिखाया नारायण नारायण
नारायण नारायण श्रीं मन नारायण नारायण नारायण
कृपा तुम्हारीं जो पाते रहेंगे
विवेकीं स्वयं को बनाते रहेंगे
मिलेगीं नहीं शांति उनको कभी भी
जो परमात्मा को भुलाते रहेंगे
जो परमात्मा को भुलाते रहेंगे नारायण नारायण
नारायण नारायण श्रीं मन नारायण नारायण नारायण



हरेक पदार्थ पर से अपने मोह को हटा लो और एक सत्य पर, एक तथ्य पर, अपने ईश्वरत्व पर समग्र ध्यान को केन्द्रित करो। तुरंत आपको आत्मसाक्षात्कार होगा।

जो कुछ बीत चुका है रहेगा ना सब दिन
कहा तक यहा मन फंसाते रहेगे
गुरूचरणों में हीं मन को लगाकर
सदा शांति आनंद पाते रहेंगे
सदा शांति आनंद पाते रहेंगे नारायण नारायण
नारायण नारायण श्री मन नारायण नारायण नारायण
ये माना कीं दाता है तु हर जहाँ का
मगर झोलीं आगे फैलाउ तो कैसे
जो पहले दिया है वहीं कम नहीं है
उसे हीं उठाने के काबिल नहीं हूं
उसे हीं उठाने के काबिल नहीं हूं नारायण नारायण
नारायण नारायण श्री मन नारायण नारायण नारायण



सदैव सम और प्रसन्न रहना
ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।

भजन - श्रीराम जयराम

गुरू की कृपा तो सदा रहती है। महत्वपूर्ण बात यह है कि शिष्य को गुरू के वचनों में श्रद्धा रखनी चाहिए और उनके आदेशों का पालन करना चाहिए।

श्रीराम जयराम जय जयराम
मन मंदिर में आन समायो
प्यासी है अंखिया दरस दिखाओ
मुझको भक्ति का रंग लगा दो
सबको भक्ति का रंग लगा दो
श्रीराम जयराम जय जयराम
सुबह और शाम तेरा ध्यान लगाउ
सब में तेरा दर्शन पाउं
माता पिता मेरे तुम ही भगवान
सबको सन्मति दे भगवान
श्रीराम जयराम जय जयराम
तेरे ही सहारे मेरी जीवन नईया
तुम ही हो खेवईया मेरा पार लगईया
निशदिन करू मैं तेरा गुणगान
विठ्ठल विठ्ठल विठ्ठला हरि ओम विठ्ठला



।। ॐ गुरू।।

भजन - स्वर्ग से सुंदर

स्वर्ग से सुंदर सपनों से प्यारा है गुरू का दरबार
हम पर रहे बरसता यू ही सदा तुम्हारा प्यार
सांई तेरा प्यार ना रूठे कभी दरबार ना छूटे
हरि हरि ओम हरि हरि ओम
तेरे आंगन में खेले तेरे सूरज चंदा तारे
तेरे ही चरणों में जीना है धन्य भाग्य हमारे
कहां मिलेगी ऐसी ज्योति, कहां मिलेगी ऐसी ज्योति
इतना सुंदर द्वार
सांई तेरा प्यार ना रूठे कभी दरबार ना छूटे
मातपिता तुम मेरे तुम संगी साथी सहारे
अब तो मेरा जीवन चरणामें में रहे तुम्हारे
तेरी पूजा जो कर ना सके जीवन है बेकार
सांई तेरा प्यार ना रूठे कभी दरबार ना छूटे
हमको तेरे चरणों में जीवन के मिले सुख सारे
तेरे ही चरणों में आकर फलते भाग्य हमारे
इसी जन्म में कर दो सांई मुझको भव से पार
सांई तेरा प्यार ना रूठे कभी दरबार ना छूटे
जब जब कष्ट हुए है तुमने ही कष्ट निवारे
तुम ही हो जीवन के साथी तुम ही हो सभी के सहारे
मिलता रहे बराबर हमको, मिलता रहे बराबर हमको
सदा तुम्हारा प्यार
सांई तेरा प्यार ना रूठे कभी दरबार ना छूटे
हरि हरि ओम हरि हरि ओम

गुरू से मिलने की उत्कट इच्छा और उनकी सेवा करने की तीव्र आकांक्षा मुमुक्षत्व की निशानी है।



।। ॐ गुरू ।।

भजन - तेरा दीदार क्यों नहीं होता

नारायण नारायण
नारायण नारायण

तेरा दीदार क्यों नहीं होता
मुझपर उपकार क्यों नहीं होता
मैं गुनहगार हूं फिर भी तेरा हूं
तुमको ऐतबार क्यों नहीं होता
तेरा दीदार क्यों नहीं होता
लाखो पापी तूने तारे है
मेरा उद्धार क्यों नहीं होता
तेरा दीदार क्यों नहीं होता
तेरी रहमत की चार बूंदो का
ए काश हकदार क्यों नहीं होता
तेरा दीदार क्यों नहीं होता
तेरी चौखट पे जो किया मैने
सिजदा स्वीकार क्यों नहीं होता
तेरा दीदार क्यों नहीं होता

नारायण नारायण
नारायण नारायण

अपने गुरू की सेवा करते हुए जो साधक सब आपत्तियों को सह लेता है वह अपने प्राकृत स्वभाव को जीत सकता है।



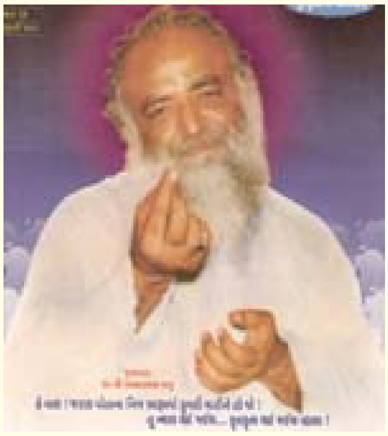
अपने गुरू की सेवा करते हुए जो साधक सब आपत्तियों को सह लेता है वह अपने प्राकृत स्वभाव को जीत सकता है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - तेरा हीरा जनम बीता जाए रे

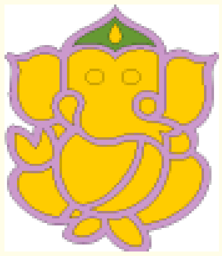
तेरा हीरा जनम बीता जाये रे भजन कर गोविंद का
कल कल करके टाल ना भाई बड़े भाग्य से यह नरतन आई
करले जग में नेक कमाई काल बदरिया सिर पर छाई
फिर पीछे पछताए रे भजन कर गोविंद का
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
दो दिन का है रैन बसेरा जिस दम तुझको काल ने घेरा
कोई न होवे साथी तेरा हो जावे शमशान में डेरा
तुझे छोड़ अकेला आए रे भजन कर गोविंद का
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
ठाट तेरा सब पड़ा रहेगा भजन हीं तेरे संग चलेगा
भजन बिना भव कैसे तरेगा अवसर बींते हाथ मलेगा
तू हाथ पसारे जाए रे भजन कर गोविंद का
जय सियाराम जय जय सियाराम
कुटुंब की खातिर क्या मरता है मेरा मेरा क्यों करता है
पाप की गठरी सिर रखता है इस झगड़े में क्या पड़ता है
भटक भटक मर जाए रे भजन कर गोविंद का
जय सियाराम जय जय सियाराम
यह तो दो दिन का है मेला जाना पड़ेगा तुझे अकेला
चलाचली का लगा झमेला आया अकेला चला अकेला
मत कर हाय हाय रे भजन कर गोविंद का
जय सियाराम जय जय सियाराम
तेरी हीरा जनम बीता जाये रे भजन कर गोविंद का
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

नियमित प्रभु–प्रार्थना और भक्ति की आदत डालो। खाली दिमाग शैतान का घर होता है।

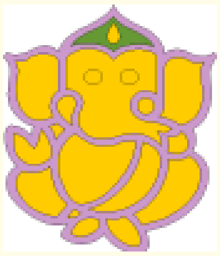


।। ॐ गुरू।।

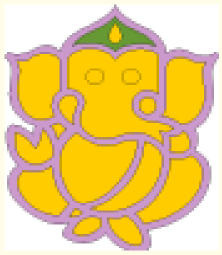
भजन - तेरा ही आसरा है



तेरा हीं आसरा है तेरा हीं आसरा है
गुरूदेव हे दयालु तेरा हीं आसरा है
किसमें मेरा भला है ये भीं ना जानता हूं
तेरीं खुशीं को अपना जींवन मैं मानता हूं
तेरा हीं आसरा है तेरा हीं आसरा है
संभव है ये मुझसे मैं तुमको भुल जाउं
हे नाथ कहीं तुम तो मुझको न भुला देना
तेरा ही आसरा है तेरा हीं आसरा है

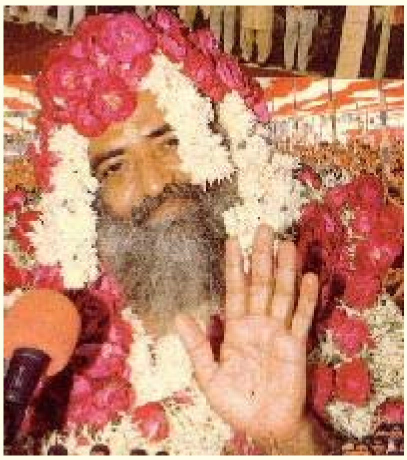


संभावना बहुत है ये मन तो देगा धोखा
मैं डुबने लगु तो तुम बाह थाम लेना
तेरा हीं आसरा है तेरा हीं आसरा है
भोगों से मैं थका हूं वैराग्य मुझकों देना
तेरे प्यार का हूं प्यास अपना हीं बना लेना
तेरा हीं आसरा है तेरा हीं आसरा है



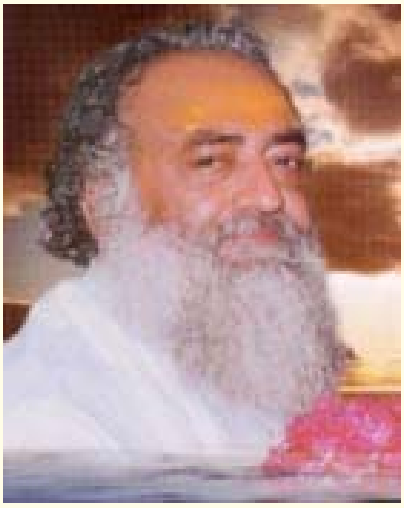
तुम पास हीं थे मेरे तुमसे बिछड़ गया हूं
माया ने ऐसा बांधा खुद हीं फिंसल गया हूं
तेरा हीं आसरा है तेरा हीं आसरा है
ये ऑख मेरीं ले लो तुमको ना देख पायीं
संजय सीं दृष्टि दे दो देखु तेरीं खुदाई
तेरा हीं आसरा है तेरा हीं आसरा है

समर्थ सदगुरू के समक्ष सदा फूल की भॉति खिले हुए रहो। इससे उनण्के अंदर संकल्प होगा कि, यह तो बहुत उत्साही साधक है, सदा प्रसन्न रहता है। उनके सामर्थ्यवान संकल्प से आपकी वह कृत्रिम प्रसन्नता भी वास्तविक प्रसन्नता में बदल जायेगी।



।। ॐ गुरू।।

भजन - तेरा जीवन सफल हो जाएगा



तेरा जींवन सफल हो जाएगा ... 2
मुख से राम राम राम राम गाएजा... 2
तू तो भव से पार हो जाएगा ... 2
मुख से राम राम राम राम गाएजा... 2
आया अकेला जाएगा अकेला ... 2
कौन है मेरा कौन है तेरा ... 2
ये सत्संग से समझ में आएगा ... 2
मुख से राम राम राम राम गाएजा... 2
लाखों कमाई तुमने दौलत... 2
साथ ना जातीं है ये शोहरत... 2
तू तो खालीं हाथ चला जाएगा ... 2
मुख से राम राम राम राम गाएजा... 2
करले कमाई गुरू के नाम कीं... 2
झुठीं है ये माया किस काम कीं... 2
देवीं संपत्ति तू पा जाएगा ... 2
मुख से राम राम राम राम गाएजा... 2
सदगुरूदेव से दींक्षा पाके... 2
जींवन कीं सहीं दिशा पाके... 2
तू तो मंजिल पहुंच झट जाएगा... 2
मुख से राम राम राम राम गाएजा... 2
बंदे ना करे किसीं कीं बुराई... 2
कौन देगा तेरीं गवाहीं... 2
तू तो सस्ते दाम बिक जाएगा... 2
मुख से राम राम राम राम गाएजा... 2
राम ... राम ... राम ... मेरे राम ...मेरे राम ..

गुरूभक्तियोग आपको इसी जन्म में धीरे–धीरे दृढ़ता, निश्चितता एवं अविचलतापूर्वक ईश्वर के प्रति ले जाता है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - तेरे दर पे हो बसेरा

तेरे दर पे हो बसेरा, मेरे गुरूदेवा
जींवन में हो सवेरा, मेरे गुरूदेवा
तुम्हारे बिन नहीं रहना अब दूर ए हूजुर
तुमसे सदा मैं तुमको हीं मांगु
तेरी यादों में हीं सोउ और जागु
आँखो में बस जाओ, मेरे गुरूदेवा
तुम्हारे बिन नहीं रहना.................
तुमसे हीं रोशन जीवन हमारा
शुक्रिया करे कैसे गुरूवर तुम्हारा
वंदन है मेरे तुमको, मेरे गुरूदेवा
तुम्हारे बिन नहीं रहना.................

गुरूसेवायोग का अर्थ है गुरू की निःस्वार्थ सेवा।

गुरूसेवायोग का अर्थ है गुरू की निःस्वार्थ सेवा।

सच्चा सुख केवल **गुरूमुखी सेवा** से ही मिल सकता है।



सच्चा सुख केवल **गुरूमुखी सेवा** से ही मिल सकता है।

अजब निरालीं प्रभु तेरीं माया
धन्य हुआ जो भीं शरण तेरीं आया
तेरे दर्शन नित पाउं, मेरे गुरूदेवा
तुम्हारे बिन नहीं रहना.................
भोगों से हमको सदा तुम बचाना
दुख हो या सुख हो, सदा याद आना
तुम हमारी हर खुशी हो, मेरे गुरूदेवा
तुम्हारे बिन नहीं रहना.................

|| ॐ गुरू ||

.2.

करूणानिधान हो तुम सबसे प्यारे
हम सबके गुरूवर तुम हीं हो सहारे
सर्वस्व तुम हीं हो, मेरे गुरूदेवा
तुम्हारे बिन नहीं रहना..................
तुमसे जुदाई सह नहीं सकते
बिन तेरे हम रह नहीं सकते
ना करना दूर हमको, मेरे गुरूदेवा
तुम्हारे बिन नहीं रहना..................
तेरी ज्ञान गंगा में नहाते रहे हम
तेरा ध्यान निशदिन ध्याते रहे हम
ना करना दूर हमको, मेरे गुरूदेवा
तुम्हारे बिन नहीं रहना..................
तेरे दर पे हो बसेरा, मेरे गुरूदेवा
जींवन में हो सवेरा, मेरे गुरूदेवा
तेरे दर्शन नित्य मैं पाउं
तुम्हारे बिन नहीं रहना..................

जो गुरू की सेवा करता है वह अहंभाव और ममता को जीत सकता है।



जो शिष्य गुरू की सेवा करता है, वह वास्तव में अपने आपकी ही सेवा करता है।

।। ॐ गुरू ।।

भजन - तेरे फूलों से भी प्यार

तेरे फूलों से भी प्यार तेरे कांटो से भी प्यार
जो भी देना चाहे दे दे करतार दुनिया के तारणहार
हमको दोनों है पसंद तेरी धूप और छांव
दाता किसी भी दिशा में ले चल जिंदगी की नांव
चाहे हमें लगा दे पार दुनिया के तारणहार
तेरे फूलों से भी प्यार तेरे कांटो से भी प्यार
चाहे सुख दे या दुख चाहे खुशी दे या गम
मालिक जैसे भी रखोगे वैसे रह लेंगे हम
चाहे कांटो से व्यवहार चाहे हरा भरा रहे संसार
जो भी देना चाहे दे दे करतार दुनिया के तारणहार
तेरे फूलों से भी प्यार तेरे कांटो से भी प्यार
जो भी देना चाहे दे दे करतार दुनिया के तारणहार

ॐ
नमो
भगवते श्री
आसारामाय

ॐ
नमो
भगवते श्री
आसारामाय

ॐ
नमो
भगवते श्री
आसारामाय

लाख उदय हो
चंद्रमा, सूरज कोटि
हजार
सदगुरू की करूणा
बिना मिटे न मन
अंधियार



|| ॐ गुरू ||

भजन - थोड़ा ध्यान लगा

राम
कृष्ण
हरि
राम
कृष्ण
हरि
राम
कृष्ण
हरि

थोड़ा ध्यान लगा गुरूवर दौड़े दौड़े आऐंगे
तुझे गले से लगाऐंगे
अंखिया मन की खोल तुझको दर्शन वो कराऐंगे
तुझे गले से लगाऐंगे
थोड़ा ध्यान लगा गुरूवर दौड़े दौड़े आऐंगे
है राम रमैया वो है कृष्ण कन्हैया वो वहीं मेरा ईष्ट है
सत्कर्म राहों पे चलना सिखाते वो वहीं जगदीश है
प्रेम से पुकार तेरे पाप को जलाऐंगे
तुझे गले से लगाऐंगे
थोड़ा ध्यान लगा गुरूवर दौड़े दौड़े आऐंगे
कृपा की छाया में बैठाऐंगे तुझको कहा तुम जाओगे
ऐसा है विश्वास मन में ज्योत वो जगाऐंगे
तुझे गले से लगाऐंगे
थोड़ा ध्यान लगा गुरूवर दौड़े दौड़े आऐंगे
मुनियों ने ऋषियों ने गुरू शिष्य महिमा का किया गुणगान है
गुरूवर के चरणों में झुक सकल सृष्टि झुके भगवान है
महिमा है अपार सच की राह वो दिखाऐंगे
तुझे गले से लगाऐंगे
थोड़ा ध्यान लगा गुरूवर दौड़े दौड़े आऐंगे

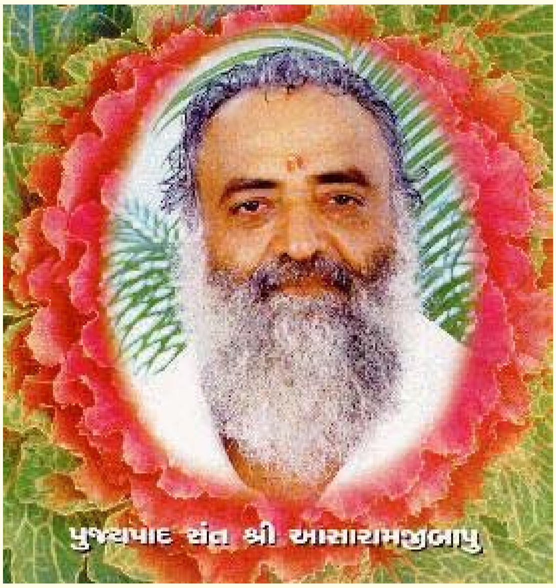
गुरू के प्रति अपना कर्तव्य अदा करना माने सत्य धर्म का आचरण करना।



।। ॐ गुरु।।

भजन - तू राम भजन कर प्राणी

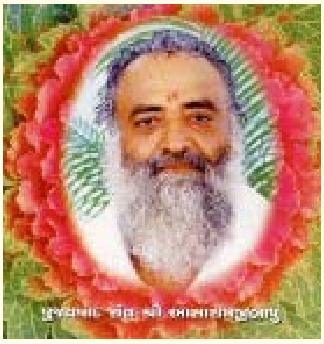
तू राम भजन कर प्राणी तेरी दो दिन की जिंदगानी
काया माया बादल छाया
मुरख मन काहे भरमाया
उड़ जाएगा सांस का पंछी
फिर क्या आनी जानी तेरी दो दिन की जिंदगानी
तू राम भजन कर प्राणी तेरी दो दिन की जिंदगानी
स्वजन स्नेही सुख के संगी
दुनिया की है चाल तुरंगी
नाच रहा है काल शीश पर
चेत चेत अभिमानी तेरी दो दिन की जिंदगानी
तू राम भजन कर प्राणी तेरी दो दिन की जिंदगानी
जिसने राम नाम गुण गाया
उसको लगे ना दुख की छाया
निर्धन का धन राम नाम है
ना कर तु मनमानी तेरी दो दिन की जिंदगानी
तू राम भजन कर प्राणी तेरी दो दिन की जिंदगानी



जब आप जान लेंगे कि दूसरों का हित करना अपना ही हित करने के बराबर है और दूसरों का अहित करना अपना ही अहित करने के बराबर है, तब आपको धर्म के स्वरूप का साक्षात्कार हो जायेगा।

||ॐ गुरू||

भजन - तुम्हारे प्यार ने गुरुवर



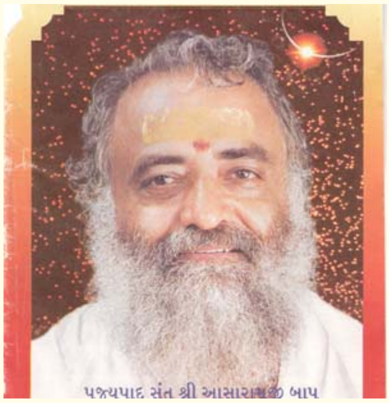
आप जब ध्यान करने बैठे तब अपने गुरू का एवं पूर्व के सब संतो का स्मरण करें। आपको उनके आशीर्वाद प्राप्त होगें।

तुम्हारे प्यार ने गुरूवर, हमको तुमसे जोड़ा है।
तुम्हारे प्यार के बलपर, हमने जग को छोड़ा है।
तेरा ही नाम हो गुरूवर सभी दुखो को हरता है।
है केवल धन्य वो प्राणी, जो तेरा ध्यान धरता है।
तुम्हारे ज्ञान ने हमको सही दिशा में मोड़ा है।
तुम्हारे प्यार ने गुरूवर........................
तुम्ही तिरथ हो मंदिर हो, तुम्ही हो मेरी बंदगी।
तुम्ही धड़कन हमारी हो, तुम्ही हो मेरी जिंदगी।
तेरी करूणा ने ही गुरूवर हमें खुशियों से जोड़ा है।
तुम्हारे प्यार ने गुरूवर........................
धरा पर तुमने यु आकर, बड़ा उपकार किया है।
ईश्वर होकर भी तुमने, बापू का रूप लिया है।
तेरी लीला के वर्णन में जो कहू वो थोड़ा है।
तुम्हारे प्यार ने गुरूवर.......................
तेरे दर्शन और सत्संग की, अब आदत पड़ गई हमको।
तेरे बिन रह नहीं सकते, बताये ये कैसे तुमको,
तुम्हारे प्रेम ने हमको तुम्हारी ओर मोड़ा है।
तुम्हारे प्यार ने गुरूवर........................
तुम्हारा साथ अब गुरूवर कभी भी हमसे छुटेना।
बंधा जो प्रेम का रिश्ता, कभी भी हमसे छुटेना।
कभी छुटेना टुटेना, वो नाता तुमसे जोड़ा है।
तुम्हारे प्यार ने गुरूवर........................
तुम्ही से हो मेरे गुरूवर ये रोशन चांद सितारे है।
तुम्ही से चलती है सृष्टि, अजब तेरे नजारे है।
हम रहते थे जिस भ्रांति उसे अब तुमने तोड़ा है।
तुम्हारे प्यार ने गुरूवर........................

।। ॐ गुरू।।

भजन - तुम्ही मेरे राम हो

तुम्ही मेरे राम हो, तुम्ही मेरे श्याम हो... 2
तुम्ही मेरी जिंदगी, तुम हीं विराम हो...2
तुम्ही मेरे तीरथ, तुम्ही चारों धाम हो... 2
पावन पावन छबि है तुम्हारी
सुखकर–हितकर वाणी तुम्हारी
महिमा तुम्हारी किस विध गाउं
शीश झुकाकर बलि बलि जाउ
तुम्ही मेरे राम हो..........
तुम हीं सबके सच्चे दाता
तुम ही पिता हो, तुम ही माता
तुम्हरे सिवा अब कुछ नहीं भाता
गुरू और शिष्य का कैसा ये नाता
तुम्ही मेरे राम हो..........
चरणों में तेरे जो भी आया
आतम शांति वो हीं पाया
तुमसे बड़ा प्रभु ना कोई और है
तुमसे हीं सबके जीवन में भोर है
जिसकी जुड़ी प्रभु तुमसे डोर है
होता नहीं कभी वो कमजोर है
तुम्ही मेरे राम हो..........
झुठी दुनिया के झुठे नजारे
जान गये है हम तुम हो हमारे
तुमसे कभी हम दूर ना जाए
तुमको हीं सुमिरे, तुमको हीं पाये
तुम्ही मेरे राम हो..........
तुम्ही मेरी जिंदगी, तुम हीं विराम हो...2
तुम्ही मेरे तीरथ, तुम्ही चारों धाम हो... 2

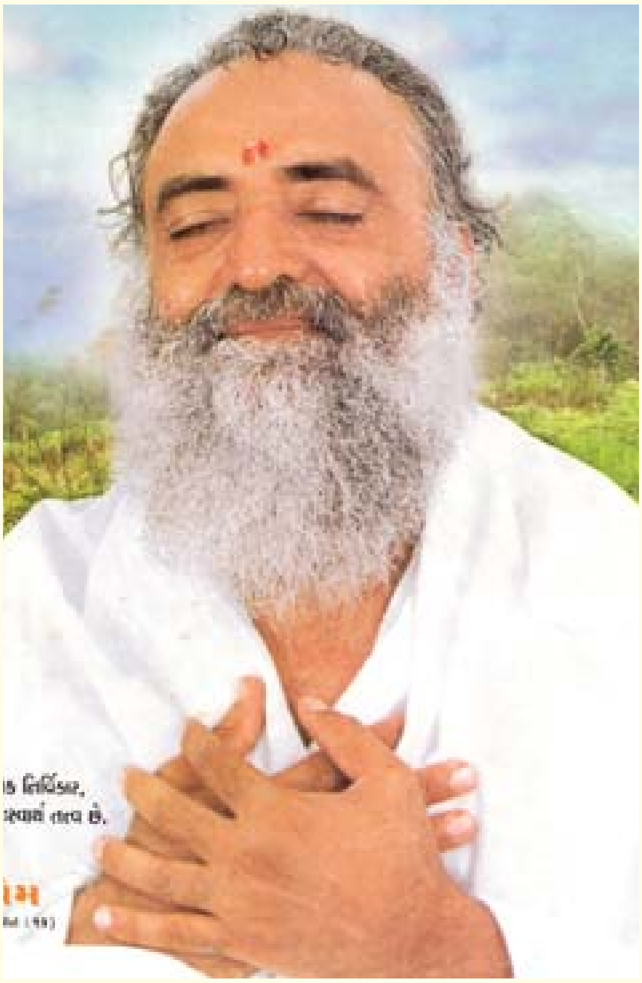


मुक्तात्मा गुरू की सेवा, उनकी लिखी हुई पुस्तकों का अभ्यास और उनकी पवित्र मूर्ति का ध्यान, यह गुरूभक्ति विकसित करने का सुनहरा मार्ग है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - वो धरती नसीबोवाली

वो धरती नसीबोवाली जहां मेरे गुरू बसते
गुरू बसते, सदगुरू बसते
वो धरती नसीबोवाली ....
काम–क्रोध को दूर भगाते
लोभ–मोह से मुक्ति दिलाते
मुक्ति दिलाते, गुरू मुक्ति दिलाते
वो धरती नसीबोवाली ....
सबको भक्ति–शक्ति देते
सबको मन की शांति देते
शांति देते, वो आनंद देते
वो धरती नसीबोवाली ....
पाप मिटाते, पुण्य बढ़ाते
सुख को बढ़ाते, दुख को मिटाते
सुख को बढ़ाते वो दुख को मिटाते
वो धरती नसीबोवाली ....
सदगुरूदेव है पिता हमारे
सब भक्तों के है रखवारे
हम सब के है वो रखवारे
वो धरती नसीबोवाली ....
सदगुरू सबके सच्चे साथी
काटे जन्म–मरण की फांसी
काटे जन्म–मरण की फांसी
वो धरती नसीबोवाली ....



उनका नाम है पावन नाम
भक्ति बढ़ाए उनका नाम
पाप मिटाये उनका नाम
पुण्य बढ़ाए उनका नाम
दुख को मिटाये उनका नाम
जय आसारामज जय जय आसाराम
जय साईं राम जय जय आसाराम
धन्य–धन्य है माता महंगींबा
बार बार करे उनको वंदना
उन्होंने दिये हमे साईं आसाराम
जय आसारामज, जय जय आसाराम

।। ॐ गुरू।।

भजन - ये जीवन अब बीते सारा



ये जीवन अब बीते सारा गुरूवर के हीं चरणों में... 4
भक्ति हमारी बढ़ती रहे गुरूदेव के ही चरणों में
गुरू ही ब्रह्मा विष्णू है और गुरू ही अलख निरंजन है
गुरू ही मंगलकारी है और गुरू ही दुखभयभंजन है
सारे तीरथ मंदिर होते गुरूवर के ही चरणों में
ये जीवन अब बीते सारा गुरूवर के हीं चरणों में... 4
गुरू-शिष्य सा पावन जग में ना कोई दूजा बंधन है
गुरूवर की कृपा दृष्टि से कट जाते भव बंधन है
सच्ची शांति तृप्ति मिलती है गुरूवर के चरणों में
ये जीवन अब बीते सारा गुरूवर के हीं चरणों में... 4
धरा पे उतरे हित करने को गुरूवर का अभिनंदन है
करूणा-वरूणा के सागर गुरूवर का ही अभिनंदन है
से शीष सदा झुकता ही रहे प्यारे गुरूवर के चरणों में
ये जीवन अब बीते सारा गुरूवर के हीं चरणों में... 4
गुरू रक्षा सबकी करते है शक्ति का करते स्पंदन है
प्रभु दिखे सर्वत्र हमें गुरू देते ऐसा अंजन है
हम श्रद्धा को अडिग रखे अपने गुरूवर के चरणों में
ये जीवन अब बीते सारा गुरूवर के हीं चरणों में... 4
गुरूवर ही है प्राण आधारे गुरूवर ही जीवनधन है
गुरू ही भक्ति-मुक्ति-दाता गुरूवर ही आनंदधन है
हम सब कुछ अपर्ण करते है गुरूवर के ही चरणों में
ये जीवन अब बीते सारा गुरूवर के हीं चरणों में... 4
भक्ति हमारी बढ़ती रहे गुरूदेव के ही चरणों में

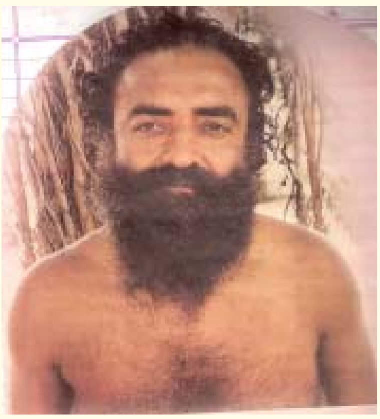
।। ॐ गुरू।।

भजन - ये मीठा प्रेम का प्याला

ये मीठा प्रेम का प्याला कोई पियेगा किस्मतवाला
ये सत्संग वाला प्याला कोई पियेगा किस्मतवाला
हरि ओम हरि ओम
प्रेम गुरू है प्रेम है चेला
प्रेम धर्म है और प्रेम है मेला
गुरू प्रेम की फेरो माला कोई फेरेगा किस्मतवाला
हरि ओम हरि ओम
प्रेम बिना प्रभु नहीं मिलते
मन के कष्ट कभी नहीं टलते
गुरू प्रेम करे उजियारा कोई करेगा किस्मतवाला
हरि ओम हरि ओम
प्रेम का गहना प्रेमी पावे
जनम मरण का दुख मिटावे
गुरू काटे कर्म जनजाला कोई करेगा किस्मतवाला
हरि ओम हरि ओम
प्रेम ही सबके कष्ट मिटावे
लाखो से दुराचार छुड़ावे
गुरू प्रेम में हो मतवाला कोई बनेगा किस्मतवाला
हरि ओम हरि ओम
मुक्ति का सुख प्रेमी पावे
नरको में हरगिज नहीं जावे
गुरू प्रेम का भोजन न्यारा कोई खायेगा किस्मतवाला
हरि ओम हरि ओम

l od
Qy
ekxZ
ugha djs
lok
fnujkr
dgs
dchj rk
nkl ij
dky
djs ugha
?kkr

आप आध्यात्मिक मार्ग में हो और आपको कोई परेशान करता हो तो प्रकृति उसकी खबर ले लेती है। जैसे धोबी कपड़े को धोता है वैसे ही प्रकृति उसको ठीक कर देती है।



।। ॐ गुरू ।।

भजन - जिंदगी का सफर करनेवाले

जिंदगी का सफर करनेवाले
अपने मन का दीया तो जला ले
वक्त की धार ये कह रही है कष्ट क्यों आत्मा सह रही है
देख ऐसी जगह तू खड़ा है ज्ञान गंगा जहां बह रही है
बढ़के गंगा में डुबकी लगा ले
अपने मन का दीया तो जला ले
रात लंबी है गहरा अंधेरा कौन जाने कहां हो बसेरा
तू ही अंजान मंजिल का राही चलते रहना ही है काम तेरा
रोशनी डगर जगमगाले
अपने मन का दीया तो जला ले
बस तुझे है अकेले ही चलना बहुत मुमकिन है गिरना फिसलना
गिरके गिरना नहीं बात कुछ भी है बड़ी बात गिरके संभलना
गुरू की बात दिल में बसा ले
अपने मन का दीया तो जला ले



नमन करू मैं बापू को कैसे उदार संत
धर्म मार्ग दिखलाय के करे भवजाल का अंत

।। ॐ गुरू।।

भजन - आओ श्रोता तुम्हें सुनाउ

ॐ चैतन्यरूपाय नमः

आओ श्रोता तुम्हे सुनाउ, महिमा लीलाशाह की
सिंध देश के संत शिरोमणि बाबा बेपरवाह की
बचपन में ही घर को छोड़ा, गुरूचरण में आन पड़ा
तनमन धन सब अर्पण करके, ब्रह्मज्ञान में दृढ़ खड़ा
नदी पलट सागर में आयी, वृत्ति अगम अथाह की
आओ श्रोता तुम्हे सुनाउ, महिमा लीलाशाह की
योग की ज्वाल भड़क उठी और भोग भरम को भस्म किया
तन को जीता मन को जीता जन्म मरण को खत्म किया
नदी पलट सागर में आया, वृत्ति अगम अथाह की
आओ श्रोता तुम्हे सुनाउ, महिमा लीलाशाह की
सुख को भरते दुख को हरते करते ज्ञान की बात जी
जग की सेवा लाला नारायण करते दिन रात जी
जीवनन्मुक्त विचरते है ये दिल है शहशांह की
आओ श्रोता तुम्हे सुनाउ, महिमा लीलाशाह की

ॐ चैतन्यरूपाय नमः

ॐ चैतन्यरूपाय नमः

ॐ चैतन्यरूपाय नमः

ॐ चैतन्यरूपाय नमः

ॐ चैतन्यरूपाय नमः

ॐ चैतन्यरूपाय नमः

ॐ चैतन्यरूपाय नमः



शिष्य जब अपने गुरू की सेवा करता हो तब उसे दूसरों की सेवा कभी लेनी नही चाहिए। आध्यात्मिक विकास में उसके लिए यह एक महान अवरोध है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - अब तो देखो जग के सुख का विस्तार

अब तो देखो जग के सुख का विस्तार रहेगा कितने दिन
सत्कार रहेगा कितने दिन
ये प्यार रहेगा कितने दिन
अब तो देखो जग के सुख का विस्तार रहेगा कितने दिन
कोई आता कोई जाता
सबसे थोड़े दिन का नाता सबसे थोड़े दिन का नाता
सबसे थोड़े दिन का नाता
जिसको अपना कहते उस पर अधिकार रहेगा कितने दिन
अधिकार रहेगा कितने दिन सत्कार रहेगा कितने दिन
ये प्यार रहेगा कितने दिन
मानव सोचो जग के सुख का विस्तार रहेगा कितने दिन
जो जग में सच्चे ज्ञानीं है
आतमतत्व के ध्यानीं है आतमतत्व के ध्यानीं है
उनसे पूछो मन का माना संसार रहेगा कितने दिन
तुम प्रेम करों अविनाशी से तुम प्रेम करों अविनाशी से
मिल जाओ सब उरवाशी से मिल जाओ सब उरवाशी से
हे भक्त यहां मैं मेरे का व्यापार रहेगा कितने दिन
व्यापार रहेगा कितने दिन अधिकार रहेगा कितने दिन
ये प्यार रहेगा कितने दिन
मानव सोचो जग के सुख का विस्तार रहेगा कितने दिन



आज तक आपने जगत का जो कुछ जाना है, जो कुछ प्राप्त किया है ... आज के बाद जो जानोगे और प्राप्त करोगे, प्यारे भैया वह सब मृत्यु के एक ही झटके में छूट जायेगा, जाना अनजाना हो जायेगा, प्राप्ति अप्राप्ति में बदल जायेगी। अतः सावधान हो जाओ। अन्तर्मुख होकर अपने अविचल आत्मा को, निज स्वरूप के अगाध आनंद को, शाश्वत् शांति को प्राप्त कर लो। फिर तो आप ही अविनाशी आत्मा हो।



।। ॐ गुरू ।।

भजन - ए हरि श्री हरि

ॐ
रामजी
ॐ

ॐ
श्यामजी
ॐ

ए हरि श्री हरि जय जय नारायण हरि
तूने लाखो को है तारे तू करे वो खरीं
ए हरि श्री हरि जय जय नारायण हरि
आया थकके शरण में दीनानाथ तेरी
नाथ देना तु सहारा करना माफ मुझे
तू करे जो करे सबका मंगल करे
तूने लाखो को है तारे तू करे वो खरीं
आया दर पे तेरे में कुछ पाके ही गया
तूने दिया वो खजाना नाथ बढ़ता गया
आया मैं भी शरण नाथ दे दो शरण
तूने लाखो को है तारे तू करे वो खरीं
कैसे तुझको मैं रिझाउ नाथ आता नहीं
भेट तुझकों क्या चढ़ाउ मैं तो काबिल नहीं
तन दिया मन दिया सब तेरा ही दिया
तूने लाखो को है तारे तू करे वो खरीं

ॐ
रामजी
ॐ

ॐ
श्यामजी
ॐ

शिष्य को बार–बार देवी सरस्वती की, जिन्होंने आशीर्वाद दिये हों ऐसे गुरू की एवं सर्वोच्च पिता परमेश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए।



।। ॐ गुरू।।

भजन - अगर इसी जन्म में



अगर इसी जन्म में गुरूजी को पाया नहीं
तेरे नरतन के पाने से क्या फायदा
जिंदगी की अगर शर्त पूरी ना हो
जिंदगी यू गंवाने से क्या फायदा
तेरे सौभाग्य से शुभ समय मिल गया
इसके उपयोग का योग कर ना सके
जो समय पर समय को समझा नहीं
व्यर्थ अवसर बिताने से क्या फायदा
अगर इसी जन्म में गुरूजी को पाया नहीं
तेरे नरतन के पाने से क्या फायदा
तेल साबुन से धोया है मलमल के तन
प्रयाग, काशी, अयोध्या गये वृंदावन
अगर फिर भी निर्मल हुआ ना तेरा मन
तेरे गंगा नहाने से क्या फायदा
अगर इसी जन्म में गुरूजी को पाया नहीं
तेरे नरतन के पाने से क्या फायदा
मीठी वाणी ना जानी कभी बोल के
विष भरी बोली है विष घोल के
तेरी बोली में गोली का हो अगर असर
तेरे गाने बजाने से क्या फायदा
अगर इसी जन्म में गुरूजी को पाया नहीं
तेरे नरतन के पाने से क्या फायदा
आने जाने का प्रतिफल जितेंद्र यहीं
आनेजाने के बंधन से निर्मुक्त हो
आना जाना जगत में जो लगा ही रहा
तेरे आने व जाने से क्या फायदा
अगर इसी जन्म में गुरूजी को पाया नहीं
तेरे नरतन के पाने से क्या फायदा

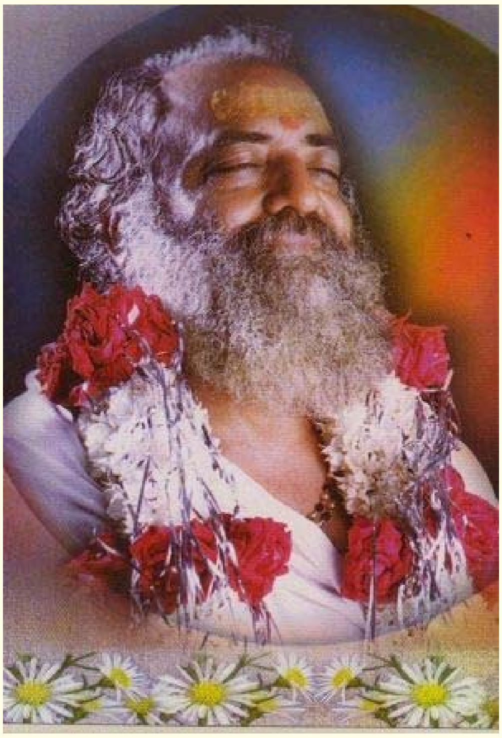
भय, चिन्ता बेचैनी से उपर उठो. आपको ज्ञान का अनुभव होगा.



।। ॐ गुरू ।।

भजन - ऐसी लगन लगा दो गुरुवर

ऐसी लगन लगा दो गुरूवर नाम तुम्हारा गाये हम
गुरूचरणों में ध्यान लगाकर भवसागर तर जाए हम
जैसी लगन लगी मीरा को बन गयी गिरधर की दासी
विष को अमृत करके पी गयी श्याम दरस की वो प्यासी
हम भक्तों पर करो अनुग्रह फिर फिर जनम ना पाए हम
गुरूचरणों में ध्यान लगाकर भवसागर तर जाए हम
जैसी लगन लगी सबरी को बन गयी राम की दीवानी
प्रभु पधारे कुटिया में ले ले बैरो की मेहमानी
हम भक्तों पर करो अनुग्रह फिर फिर जनम ना पाए हम
गुरूचरणों में ध्यान लगाकर भवसागर तर जाए हम
तुम हो स्वामी मै सेवक हूं यह संयोग पुराना है
हम भक्तों को भूल न जाना तुम बिन कहां ठिकाना है
तुम बिन कौन हमारा प्रभुजी अपनी किसे सुनाये हम
गुरूचरणों में ध्यान लगाकर भवसागर तर जाए हम



जिसको सद्‌गुरू प्राप्त हुए हैं ऐसे शिष्य के लिये इस विश्व में कुछ भी अप्राप्य नहीं। सद्‌गुरू शिष्य को मिली हुई परमात्मा की अमूल्य भेंट हैं। अरे नहीं नहीं .... वे तो शिष्य के समक्ष साकार रूप में प्रकट हुए परमात्मा स्वयं है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - आकाशगंगा में जब तक

आकाशगंगा में जब तक सितारे रहे
मेरे सदगुरू तेरी जिंदगानी रहे, जिंदगानी रहे
गुरूदेवा ओ गुरूदेवा गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
ज्ञान अपने गुरू से जो पाया उसको घर घर में जाकर लुटाया
पूजा मन से करे सेवा तन से करे अपने जीवन की हस्ती बनाते रहे
बनाते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
भार भूमि का तुमने उठाया विश्वशांति का बिगुल बजाया
विश्वशांति का शंख बजाया
सबको समझे परिवार चाहे नर हो या नार
जो भी आया शरण में उठाते रहे
उठाते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
छोड़ वैकुंठ को जग में वो आये अपनी प्रभुता और वैभव भुलाए
लीला ऐसी करे जैसे मानव लगे ईश्वर होके भी बापू कहाते रहे
कहाते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
दीनदुखियों के तुम हो सहारे विश्व बगिया के तुम रखवारे
कहते सत्यवचन व्यर्थ हो ना जनम हर जनम गुरू तुमको पाते रहे
तुमको पाते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
इनको गुरूवर कहो चाहे ईश्वर इनको नश्वर कहो या तो रघुवर
ब्रह्मज्ञानी वही अंतर्यामी वही सभी रूपों में भगवान आते रहे
आते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
अपनी सूरत हृदय में बसा दो प्रीत करने की रीति सीखा दो
करके चरणों का ध्यान पाए भक्ति और ज्ञान
गुरूभक्ति में मन को मिटाते रहे
मिटाते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
ज्योत गुरूवर से जिसने जलाई उसके जीवन में खुशिया ही छाई
दुख में रोए नहीं सुख में सोये नहीं
अपनी नईया किनारे लगाते रहे
लगाते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा



सच्चे शिष्य के लिए तो गुरू वचन माने कानून

तुमने लाखों की बिगड़ी बनाई
ज्ञान–ज्योति हदय में जगाई
है वो सबसे दयाला, बड़े हदय विशाल
अपनी करूणा वो सबपे लुटाते रहे
लुटाते रहे सांई ओ मेरे सांई
गंगा जैसे निर्मल मेरे सांई
करते सबपे दया दृष्टि मेरे सांई
हरने भूमि का भार हुआ उनका अवतार
पार भक्तों की नैया लगाते रहे
लगाते रहे सांई ओ मेरे सांई
मेरे ईश्वर करू तुमसे विनंती
हर जनम में मिले मुझको भक्ति
कभी टूटे न तार रोज होवे दीदार
हर जनम में मुझे गुरू भक्ति मिले
गुरूभक्ति मिले सांई ओ मेरे सांई
आकाशगंगा में जब तक सितारे रहे
मेरे सदगुरू तेरी जिंदगानी रहे, जिंदगानी रहे
सांई ओ मेरे सांई



जो मनुष्य परमात्मा के दो अक्षरवाले नाम हरि का उच्चारण करते हैं, वे उसके उच्चारणमात्र से मुक्त हो जाते है, इसमे शंका नहीं है।

।। ॐ गुरू।।

भजन - आनंद अपार मेरे

आनंद अपार मेरे सदगुरू के दरबार में
सबको मन की शांति मिले मेरे सदगुरू के दरबार में
सबको आतम ज्ञान मिले मेरे सदगुरू के दरबार में
आनंद अपार मेरे सदगुरू के दरबार में
मोहनिशा से है ये जगाते, काम क्रोध मद मोह भगाते
राग–द्वेष की बुझती अग्नि बापू के दरबार में
आनंद अपार मेरे सदगुरूदेव के दरबार में
गुरू है ज्योति पुंज भण्डार देते शांति सुख अपार
मंगलमय सब होता है मेरे सदगुरू के दरबार में
आनंद अपार मेरे सदगुरू के दरबार में
जबसे इनका दर्शन पाया प्राणों में नवजीवन आया
नवशक्ति का सर्जन होता सदगुरू के दरबार में
आनंद अपार मेरे सदगुरू के दरबार में
पाप–ताप से हमें बचाते आतमबल का बोध कराते
भक्ति–मुक्ति–शक्ति मिले मेरे बापू के दरबार में
भक्ति–मुक्ति–शक्ति मिले मेरे सदगुरू के दरबार में
आनंद अपार मेरे सदगुरू के दरबार में
जो भी इनके दर पे आता जनम–मरण से मुक्ति पाता
भव–बंधन कट जाते सारे सदगुरू के दरबार में
भव–बंधन कट जाते सारे सांई के दरबार में
आनंद अपार मेरे सदगुरू के दरबार में
लख चौरासी चक्र हटाते आवागमन का कष्ट मिटाते
तनमन की है प्यास मिटे मेरे बापू के दरबार में
तनमन की है प्यास मिटे मेरे सदगुरू के दरबार में
आनंद अपार मेरे सदगुरू के दरबार में



बस, अपने गुरू की सेवा करो, सेवा करो, सेवा करो। गुरूभक्ति विकसित करने का यह राजमार्ग है।

।। ॐ गुरू।।

.2.



देश रे परदेशीं आवे सदगुरू के दरबार में
सबको मन कीं शांति मिले मेरे सदगुरू के दरबार में
सबको सच्चा ज्ञान मिले मेरे बापू के दरबार में
आनंद अपार मेरे सदगुरू के दरबार में
बापू रूप में ईश्वर आये धन्य हुए हम इनको पाए
ईश्वर के दर्शन है होते बापू के दरबार में
आनंद अपार मेरे सदगुरू के दरबार में
पथिकों को पावन है करते सब दुखियो के कष्ट है हरते
बिन मांगे सबकुछ मिलता मेरे सदगुरू के दरबार में
बिन मांगे सबकुछ मिलता मेरे बापू के दरबार में
आनंद अपार मेरे सदगुरू के दरबार में
गुरू हीं है घट–घट के वासीं गुरू ज्ञान बिन आत्मा प्यासीं
दूर हो जातीं सारीं उदासीं बापू के दरबार में
दूर हो जातीं सारीं उदासीं सदगुरू के दरबार में
आनंद अपार मेरे सदगुरू के दरबार में
ब्रह्मज्ञान कीं वर्षा होतीं मिलते है यहॉ सच्चे मोतीं
ज्ञान कीं जगतीं अखंड ज्योति बापू के दरबार में
ज्ञान कीं जगतीं अखंड ज्योति सदगुरू के दरबार में
आनंद अपार मेरे सदगुरू के दरबार में

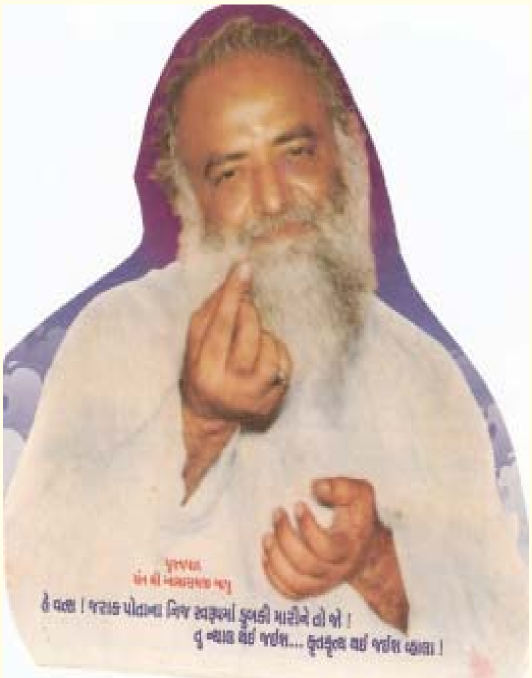
किसी भी प्रकार के स्वार्थी हेतु के बिना की गयी आचार्य की पवित्र सेवा जीवन को निश्चित आकार देती है।

|| ॐ गुरू ||

भजन - आतममस्ती सी छाने लगी है

मस्तों के साथ मिलकर मस्ताना हो गया हूं
साहो के साथ मिलकर सहाना हो गया हूं
एक घूंट हीं पिलायीं थी गुरूदेव ने मुझको
आतममस्तीं सीं छाने लगीं भाईयों
गुरू सत्संग में जाना गजब हो गया
आतममस्तीं सीं छाने लगीं भाईयों
हरिं ओम हरिं ओम हरिं ओम हरिं ओम
प्यार ने आखिर पिलायीं फकींरीं हमें
नाम जप कीं चढ़ाई खुमारीं हमें
उनके चरणों में जाना गजब हो गया
आतममस्तीं सीं छाने लगीं भाईयों
हरिं ओम हरिं ओम हरिं ओम हरिं ओम
गुरू सत्संग ने अज्ञान को हर लिया
गुरू दर्शन ने मन में उजाला किया
गुरू नजरों में आना गजब हो गया
आतममस्तीं सीं छाने लगीं भाईयों
हरिं ओम हरिं ओम हरिं ओम हरिं ओम
गुरू मेरा है मंजिल दिखाई हमें
मुक्त होने कीं कुंजीं बताई हमें
कुंजीं मिलते हीं यारो गजब हो गया
आतममस्तीं सीं छाने लगीं भाईयों
हरिं ओम हरिं ओम हरिं ओम हरिं ओम
हम थे सोऐ हुए फिर जगाया हमें
हम थे भटके हुए फिर बनाया हमें
हर साधक पे मारो गजब हो गया

नारायण नारायण नारायण नारायण



शिष्य को सब सुख–वैभव का विष की तरह त्याग कर देना चाहिए और अपना शरीर गुरू की सेवा में सौंप देना चाहिए।